Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपरा

कक्षा–11 हिंदी साहित्य की प्रथम पुस्तक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्करण : 2016

© माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : 80 जी.एस.एम. मैफलीथो पेपर आर.एस.टी.बी. वाटरमार्क

कवर पेपर : 220 जी.एस.एम. इण्डियन आर्ट कार्ड कवर पेपर

प्रकाशक : **राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल 2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर**

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक – अपरा (हिंदी साहित्य) कक्षा 11

संयोजक :– डॉ० आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

लेखकगण :–1. डॉ० वासुदेव प्रजापति, प्रांत संयोजक
पुनरुत्थान विद्यापीठ, जोधपुर
2. संजय कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
राजकीय उ.मा.वि. सतीपुरा, हनुमानगढ़
3. लोकेश्वर प्रताप सिंह, प्रधानाचार्य
राजकीय उ.मा.वि. धानक्या, जयपुर
4. केसर सिंह राठौड़, व्याख्याता
अमर शहीद सागरमल गोपा राज.उ.मा.वि.,
जैसलमेर

आभार

सम्पादक मंडल एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर उन सभी लेखकों का आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करता है जिनके अमूल्य सृजन एवं विचार इस पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं।

यद्यपि इस पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री का स्वत्वाधिकार का ध्यान रखा गया है फिर भी यदि कुछ अंश रह गये हों तो यह सम्पादक मंडल इसके लिए खेद व्यक्त करता है। ऐसे स्वत्वाधिकारी से सूचित होने पर हमें प्रसन्नता होगी।

नि:शुल्क वितरण हेतु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो शब्द

विद्यार्थी के लिए पाठ्यपुस्तक क्रमबद्ध अध्ययन, पुष्टीकरण, समीक्षा और आगामी अध्ययन का आधार होती है। विषय–वस्तु और शिक्षण–विधि की दृष्टि से विद्यालयीय पाठ्यपुस्तक का स्तर अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। पाठ्य पुस्तकों को कभी जड़ या महिमामंडित करने वाली नहीं बनने दी जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक आज भी शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया का एक अनिवार्य उपकरण बनी हुई है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

पिछले कुछ वर्षों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के पाठ्यक्रम में राजस्थान की भाषागत एवं सांस्कृतिक स्थितियों के प्रतिनिधित्व का अभाव महसूस किया जा रहा था। इसे दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा कक्षा–9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा अपना पाठ्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अनुरूप बोर्ड द्वारा शिक्षण सत्र 2016–17 से कक्षा–9 व 11 की पाठ्यपुस्तकें बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही तैयार कराई गई हैं। आशा है कि ये पुस्तकें विद्यार्थियों में मौलिक सोच, चिंतन एवं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करेंगी।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भूमिका

प्रस्तुत संकलन 'अपरा' माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की कक्षा ग्यारहवीं की हिंदी साहित्य विषय के अध्ययन–अध्यापन के लिए तैयार की गई है। संकलनकर्त्ताओं का यह प्रयास रहा है कि पुस्तक छात्रों के स्तरानुकूल रहे; बोर्ड की अपेक्षाओं के अनुसार बने और परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप यथासंभव सभी विषय, विधाएँ, साहित्यकार आदि को संजोया जा सके। विधाओं के वैविध्य के साथ भाषा–शैली की विविधता, साहित्य में कालगत क्रम–विकास का साहित्यिक कृतियों के माध्यम से परिचय, विभिन्न रसों का स्तर व आवश्यकतानुसार प्रस्तुतीकरण का प्रयास इस संकलन में किया गया है।

कक्षा ग्यारहवीं साहित्य के विद्यार्थियों का प्रवेश-द्वार है। प्रयास यह रहा है कि पुस्तक सरलतम रहे और उन्हें कतिपय गद्य विधाओं की जानकारी और भिन्न–भिन्न लेखकों की शैली का भी परिचय हो जाए। बदलते परिवेश और नई तकनीकी के युग में साहित्य को कोई एक दिशा न देते हुए सहज मार्ग तय करने देना चाहिए। यह मार्ग जिन युग सत्यों से खाद–पानी लेकर बढ़ेगा, उन मूल्यों का भी समावेश करने का प्रयत्न हुआ है। पद्य भाग में प्राचीनता और नवीनता का समन्वय किया गया है। इस पुस्तक में जहाँ अपनेपन की सौंधी महक है वहाँ राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति भी है।

आज की सामयिक आवश्यकता राष्ट्रीय व सामाजिक भावों का उन्मेष, भारतीय अतीत के गौरव की तर्क पूर्ण व भावपूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से छात्रों को अपने विगत वैभव से परिचित कराने का प्रयास, सामाजिक समरसता, समसामयिक विषयों यथा, विज्ञान, पर्यावरण को पर्याप्त स्थान देते हुए पाठ परिचय द्वारा पुस्तक को सुग्राह्य बनाया गया है। पुस्तक में नारी चेतना, राष्ट्रभक्ति, भारतीय ज्ञान–विज्ञान, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उभर रहे द्वन्द्व से मुक्ति के लिए भारतीय चिरंतन दृष्टियुक्त समाधान, साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्र निर्माण का दायित्वबोध आदि तत्त्वों को उभारा गया है। छात्रों के व्याकरणिक सुधार और विकास के साथ शब्दकोष का विकास, भाषा–शैली के विविध स्वरूपों से परिचय, लेखन का विकास और अभिव्यक्ति विकास आदि की दृष्टि से प्रश्नों की तदनुकूल रचना की गई है। इस पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अंत में 'मानक हिंदी' की जानकारी देने के लिए कुछ बिंदु जोड़े गए हैं, जिसका उद्देश्य हिंदी लेखन में एकरूपता रखना है। यद्यपि इस पुस्तक में मानक हिंदी का अनुसरण किया गया है तथापि कहीं–कहीं पाठ की मूल भावना को ध्यान में रखते हुए परंपरागत वर्णमाला का प्रयोग किया गया है।

आशा है संकलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकेगा। पर्याप्त सजगता एवं संपूर्ण प्रयत्नों के उपरांत भी न्यूनताएँ निश्चित ही रही होंगी। हमारा निवेदन है कि उन न्यूनताओं की ओर इंगित करें जिससे इसमें यथोचित संशोधन परिवर्धन संभव हो सके। इसके लिए हम आपके बहुत आभारी रहेंगे।

अंत में हम उन सभी साहित्यकारों, लेखकों, कवियों के आभारी हैं जिनके पाठ, लेख, कविताएँ आदि इस संकलन में संगृहीत हैं।

संपादक मंडल

निःशुल्क वितरण हेतु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

पद्य भाग

पाठ संख्या	लेखक	पृष्ठ
1. पद्मावती समय	चंदवरदायी	1—6
2. विनय, बाल लीला, भ्रमरगीत	सूरदास	7—12
3. पदावली	मीरा बाई	13—15
4. शिवाजी का शौर्य एवं छत्रसाल की वीरता	भूषण	16—20
5. दोहे	बिहारी	21—25
6. भारत—भारती से संकलित पद	मैथिलीशरण गुप्त	26—30
7. नीति, वैराग्य एवं चेतावनी	बावजी चतुर सिंह जी	31—34
8. प्रार्थना, संध्या, द्रुत झरो	सुमित्रानंदन पंत	35—38
9. देश उठेगा, गौरवशाली परंपरा	नंदलाल जोशी	39—42

गद्य भाग

10. काल-चक्र	विद्यानिवास मिश्र	43—48
11. पुरस्कार	जयशंकर प्रसाद	49—59
12. निक्की, रोजी और रानी	महादेवी वर्मा	60—69
13. नशा	प्रेमचंद	70—77
14. भारतीय नारी	स्वामी विवेकानंद	78—84
15. गद्य साहित्य का आविर्भाव	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	85—92
16. बेचारा 'कामनमेन'	हरिशंकर परसाई	93—100
17. भारतीय जीवन—दर्शन एवं संस्कृति	इंदुमति काटदरे	101—106
18. यात्रा का रोमांस	मोहन राकेश	107—113
19. अनोखी परीक्षा	विजयदान देथा	114—118
20. धरा और पर्यावरण	कुप.सी.सुदर्शन	119—123

•••

रस प्रकरण	124—135
छंद	136—141
अलंकार	142—147

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. चंदवरदायी

कवि–परिचय

हिंदी साहित्य के आदिकाल में जो वीरगाथा काव्य लिखा गया, उसमें सबसे अधिक प्रसिद्धि 'पृथ्वीराज रासो' को प्राप्त हुई। इसके रचयिता चंदवरदायी का जन्म सन् 1168 ई० में लाहौर में हुआ था। ये महाकवि भाट जाति के जगता गोत्र के थे। ये दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के सखा और सभाकवि थे। कहते हैं कि चंदवरदायी और पृथ्वीराज के जन्म तथा मृत्यु की तिथि भी एक ही थी। प्रसिद्धि है कि जब मुहम्मद गोरी सम्राट पृथ्वीराज को बंदी बनाकर गजनी ले गया, तो वहाँ पहुँच कर चंद ने उनकी अद्भुत बाण विद्या की प्रशंसा की। संकेत पाकर पृथ्वीराज ने शब्दबेधी बाण से गोरी को मार गिराया और अपनी स्वातंत्र्य की रक्षा करने के लिए एक–दूसरे को कटार मारकर दोनों ने मृत्यु का वरण किया।

चंदवरदायी कलम के ही धनी नहीं थे, रणभूमि में पृथ्वीराज के साथ ही अन्य सामंतों की तरह तलवार भी चलाते थे। वे स्वयं वीररस की साकार प्रतिमा थे। उनका 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का आदिकाव्य है। इसमें सम्राट पृथ्वीराज के पराक्रम और वीरता का सजीव वर्णन है। इसमें 69 समय (सर्ग या अध्याय) हैं। कहा जाता है कि चंद इसे अधूरा ही छोड़कर गजनी चले गए थे जिसे उनके पुत्र जल्हण ने बाद में पूरा किया।

काव्य–परिचय

'पृथ्वीराज रासो' जिस रूप में मिलता वह प्रामाणिक नहीं है क्योंकि उसमें वर्णित पात्र, स्थान, नाम, तिथि और घटनाओं में से अधिकतर की प्रामाणिकता संदिग्ध है परंतु इतना अवश्य है कि मूल रूप में यह ग्रंथ इतना विशाल नहीं था। इसमें पृथ्वीराज के अनेक युद्धों, आखेटों और विवाहों का वर्णन है। कवि ने अपने चरितनायक को सभी श्रेष्ठ गुणों से युक्त चित्रित किया है। पृथ्वीराज के व्यक्तित्व में अद्भुत सौंदर्य, शक्ति और शील का सन्निवेश है।

'पृथ्वीराज रासो' वीर रस प्रधान काव्य है। इसमें ओज गुण की दीप्ति आदि से अंत तक विद्यमान है। रौद्र, भयानक, वीभत्स आदि रसों का वर्णन युद्ध के प्रसंग में और श्रृंगार का वर्णन विविध विवाहों के प्रसंग में मिलता है। शशिव्रता, इंछिनी, संयोगिता, पद्मावती आदि के रूप–सौंदर्य का मोहक वर्णन चंद ने किया है।

चंद की भाषा में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी आदि की शब्दावली का सशक्त प्रयोग हुआ है। परंपरा से चले आते हुए संस्कृत तथा प्राकृत छंदों का प्रयोग रासो में हुआ ही है, युद्ध वर्णन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त छप्पय छंद की छटा देखते ही बनती है।

श्रेष्ठ जीवन–पद्धति, पराक्रम एवं वीरता का जो आदर्श भारतीय जनता ने अपने चित्त में प्रतिष्ठित कर रखा है, पृथ्वीराज उसके प्रतिनिधि रूप में चित्रित हुए हैं। इसलिए पराजित होने पर भी वे जन–मानस के अजेय योद्धा के रूप में विराजमान हैं। चंद ने उनके रूप में भारतीय वीर–भावना का चरमोत्कर्ष दिखाया है, अतएव अप्रामाणिक माना जाने वाला 'पृथ्वीराज रासो' हमारा उत्कृश्ट महाकाव्य है। इससे प्रेरणा लेकर डिंगल में अनेक रासो काव्यों की रचना की गई है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ–परिचय

प्रस्तुत संकलन में 'पृथ्वीराज रासो' के 'पद्मावती समय' में से कतिपय छंद उद्धृत किए गए हैं। समुद्रशिखर दुर्ग के गढ़पति की राजकुमारी पद्मावती अद्वितीय सुंदरी है। एक तोता उससे पृथ्वीराज के सौन्दर्य और पराक्रम का वर्णन करता है जिसे सुनकर वह पृथ्वीराज के प्रति अनुराग रखने लगती है। जब राजा उसका विवाह कुमाऊँ के राजा कुमोदमणि के साथ करना चाहते हैं, तो वह तोते को संदेशवाहक बनाकर पृथ्वीराज के पास भेजती है। वे शुक की बात सुनकर पद्मावती का वरण करने के लिए चल देते हैं। उधर पद्मावती शिव मंदिर में पूजा करने आती है। वहीं से पृथ्वीराज रुक्मिणी की भाँति उसका हरण करके घोड़े पर बिठाकर दिल्ली की ओर चल देते हैं। राजा की सेना युद्ध करके हार जाती है। इसी बीच अवसर पाकर शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज पर आक्रमण करता है। घोर युद्ध होता है। अंत में गोरी को परास्त करके पकड़ लिया जाता है। दिल्ली आकर शुभ लग्न में पद्मावती के साथ पृथ्वीराज विवाह कर लेते हैं।

•••

पद्मावती समय

पूरब दिस गढ़ गढ़नपति। समुद सिषर अति दुग्ग।
तहँ सु विजय सुर राज पति। जादू कुलह अभंग।।1।।
धुनि निसान बहु साद। नाद सुरपंच बजत दीन।
दस हजार हय चढ़त। हेम नग जटित साज तिन।।
गज असंष गजपतिय। मुहर सेना तिय संषह।।
इक नायक कर धरी। पिनाक धरभर रज रष्षह।।
दस पुत्र पुत्रिय एक सम। रथ सुरङ्ग अम्मर डमर।।
भंडार लछिय अगनित पदम। सो पदम सेन कूँवर सुधर।।2।।
मनहुँ कला ससिभान। कला सोलह सो बन्निय।।
बाल बैस ससिता समीप। अंम्रित रस पिन्निय।।
बिगसि कमल म्रिग भमर। वैन षंजन मृग लुट्टिय।।
हीर कीर अरू बिंब। मोति नष सिष अहि घुट्टिय।।
छप्पति गयंद हरि हंस गति। विह बनाय संचै सचिय।।
पदमिनिय रूप पदमावतिय। मनहु काम कामिनि रचिय।।3।।
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजान।।
जानि चतुर दस अंग षट। रति बसंत परमान।।4।।
सषियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास।।
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास।।5।।
मन अति भयो हुलास। विगसि जनु कोक किरण रवि।।
अरुण अधर तिय सुधर। बिंब फल जानि कीर छबि।।
यह चाहत चष चकित। उहजु तक्किय झरप्पि झर।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर।।
हरषत अनंद मन महि हुलस। लै जु महल भीतर गइय।।
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भइय।।6।।
सवालष्ष उत्तर सयल। कमऊँ गड्ढ दूरंग।।
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग।।7।।
नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति।।
दई जु कन्यसा बचन बर। अति अनंद करि जुत्ति।।8।।
पदमावति विलषि बर बाल बेली। कही कीर सों बात तब हो अकेली।।
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेस। बरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं।।9।।
आँनो तुम्ह चाहुवांन बर। अरु कहि इहै संदेस।।
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस।।10।।
लै पत्री सुक यों चल्यौ। उड्यौ गगनि गहि बाव।।
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर। अट्ठ जाम में जाव।।11।।
दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज।।
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज।।12।।
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय। लै चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय।।
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय।।13।।
कम्मान बांन छुट्टहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार।।
घमसान घाँन सब बीर षेत। घन श्रोन बहत अरु रकत रेत।।14।।
पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज।।
एतें परि पतिसाह की। भई जु आनि अवाज।।15।।
भई जु आँनि अवाज। आय साहाबदीन सुर।।
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर।।
क्रोध जोध जोधा अनंद। करिय पती अनि गज्जिय।।
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह स्रब सज्जिय।।
पव्वै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल।।
आये हकरि हकार करि। षुरासान सुलतान दल।।16।।
तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर निसाँन बाजं।।
गही तेग चहुंवान हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं।।17।।
गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सुज्झै नहीं मज्झि नैनं।।
सिरं नाय कम्मान प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं।।18।।
जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग।।
दिल्ली दिंसी मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग।।19।।
बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुभ घरी परट्ठिय।।
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ब्रह्म वेद उच्चरहिं। होम चौरी जुप्रति वर।।
पद्मावती दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर।।
डंडयौ साह साहाबदी। अट्ठ सहस हे वर सुघर।।
दै दाँन माँन षट भेष कौ। चढ़े राज द्रूग्गा हुजर।।20।।

•••

शब्दार्थ

1. पूरब दिसि–पूर्व दिशा में/गढ़न पति –गढ़ों का स्वामी, श्रेष्ठ दुर्ग या गढ़/समुद सिषर–समुद्र शिखर (दुर्ग का नाम), अति–अत्यंत विशाल/ दुग्ग–दुर्ग/तहँ–वहाँ/ सु–श्रेष्ठ/ सुरराज पति–इन्द्र/जादू कूलह–यादव वंश का, यदुकुल का/ अभग्ग–अभग्न, अभेद्य, अजेय।
2. नद–शब्द, गूँज/ सुरपंच–पंचम स्वर (मृदंग, तंत्री, मुरली, ताल, बेला या झाँझ और दुंदुभि आदि वाद्यों के स्वर)/ हय चंढत–घुड़सवार/ हेम–स्वर्ण/ नग–रत्न/ जटित–जड़े हुए/साज–घोड़ों की सज्जा, जीन और चँवर/ तिन–उसके/ असंष–असंख्य/ गजपतिय–गजराज/ मुहर–अग्रभाग, हरावल/ तिन–उसकी/ कर धरी पिनाक – हाथ में धनुष धारण करके/ पुत्र–पुत्रिय समय–समान गुणों से युक्त पुत्र, पुत्री/ सुरंग–सुंदर/उम्मर–आकाश/उमर–चंदोवा/भण्डार–कोष/लछिय–लक्ष्मी/अगणित–असंख्य/ पदम–संख्या विशेष (दस नील से आगे)/ सुधर–सुंदर
3. कला सोलह–चंद्रमा की सोलह कलाओं से/ सो–वह, बन्निय–बनी थी/ बाल बैस–बाल/वयस–बचपन/ ससिता–शिशुता–शैशवावस्था/ ससि–चंद्रमा/ ता–उसके/ अंम्रित–अमृत/ पिन्निय–पीया है, पान किया है/ विंगसि कमल म्रिग – मुख विकसित कमल की श्रेणी को भी लज्जित करता है / बेनु–वंशी/ मृग–हरिण/ लुट्टिय–लूट लिया है, श्रीहीन कर दिया है, छप्पति – छिपाती है/ हरि–सिंह/ बिह बनाय – विधि ने बनाकर/ संचै सचिय – साँचे में ढालकर/ मनहूँ – मानों/ काम–कामिनी – काम देव की पत्नी, रति/ रचिय – रचना की है।
4. सामुद्रिक – हस्त एवं पद तथा मुखाकृति से शुभाशुभ बताने की विद्या/ लच्छिन–लक्षण/ सकल–समस्त/ चौसठ कला– चौसठ कलाएँ/ चतुर्दश–चौदह विद्याएँ/ षट–छह शास्त्र वेद के अंग/ रति बसन्त परमान– रति और वसंत के अनुरूप।
5. सष्पिन संग– सखियों के साथ में/ बग्ग–बाग में, उद्यान में/ कीर–तोता/ इक्क–एक/ दिष्षिय–देखा/ हुलास–प्रसन्न।
6. हुलास–उल्लास, हर्ष/ चष–चक्षु, नेत्र/ चंच चहुहिक–चोंच (चतायी) से पकड़ा/ अप्प–अपने/ रष्षत भई–रख दिया।
7. सवा लष्ष–सपादलक्ष/ सयल–शैल, पर्वत/ दूरंग–दुर्गम/ द्रिव्य–द्रव्य, धन।
8. नारिकेल–नारियल।
9. झटं–शीघ्र।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. प्रथिराज–पृथ्वीराज।
11. पत्री–पत्र/ गगनि–गगन, आकाश में/गाईबाब–वायु का आधार लेकर।
12. कग्गर–कागज, पत्र/ षुलि–वांचिय – खोलकर बाँचा, पढ़ा।
13. षबरि–खबर/ हरिलीय जाय–अपहरण किया जा रहा है।
14. कम्मान–कमान, धनुष/ श्रोन–खून।
15. पतिसाह–बादशाह, शहाबुद्दीन गोरी/ अवाज–आवाज।
16. करियपती–पंक्तिबद्ध किया/ गज्जिय–गर्जना की/ श्रब–सब/ सज्जिय–सजाए।
17. चिहौ ओर–चारों ओर/ हिंदवान रानं–हिंदुओं के राजा/ गजं जूथ–हाथियों के झुंड पर/ केहरि–केशरी, सिंह।
18. गिरद्द–गर्द, धूल/ भान–भानु, सूर्य/ रैनं–रात/ मज्झि–बीच में/ कुलिंग–पक्षी।
19. लगन्न–लगन/ परट्ठिय–पक्षी या तै की गई/ भांवरि गंठिय–भांवरे पड़ी/ दुल्लह–दूल्हा, वर/ द्रुग्गा–दुर्ग।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. चंदवरदायी की रचना का नाम है –
   (क) पद्मावत (ख) पृथ्वीराज रासो
   (ग) खुमान रासो (घ) रामायण ( )
2. पृथ्वीराज का युद्ध किसके साथ हुआ ?
   (क) कुमोदमणि (ख) अकबर
   (ग) महमूद गजनवी (घ) शहाबुद्दीन गोरी ( )

   उत्तरमाला –(1) ख (2) घ

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. क्या 'पृथ्वीराज रासो' प्रामाणिक रचना है ?
2. चंदवरदायी किसके सभाकवि थे ?
3. तोता पृथ्वीराज से किस नगर में मिला ?
4. पृथ्वीराज रासो का प्रधान रस कौनसा है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पद्मावती ने तोते से क्या पूछा ?
2. 'पदमसेन कूँवर सुधर' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
3. शुक को लेकर पद्मावती कहाँ गई और उसे कहाँ रखा ?
4. पृथ्वीराज ने गोरी को किस प्रकार प्रकड़ लिया ?
5. पृथ्वीराज ने शत्रुओं का सामना किस तरह से किया ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'पद्मावती समय' के आधार पर इस काव्य के महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का आदि महाकाव्य है। इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।
3. पद्मावती के रूप–सौंदर्य की विशेषताएँ लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. निम्नांकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) तिन घेरिय राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर निसाँन बाज।।
गही तेग चहुंवान हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं।।17।।

(ख) गिरद्दं उडी भाँन अंधार रैनं। गई सूधि सज्झै नहीं मज्झि नैनं।।
सिरं नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगबाजं।।18।।

•••

जानने योग्य बात

भारत संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर, कंप्यूटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने देश के शीर्षस्थ विद्वानों के साथ वर्षों के विचार–विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धारित किया, वह इस प्रकार है –

हिंदी वर्णमाला

वर्णमाला का क्रम इस प्रकार होगा –

स्वर – अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

टिप्पणी –संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला में ॠ, ऌ तथा ळ भी सम्मिलित हैं, किंतु हिंदी में इनका प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिंदी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।

मूल व्यंजन

क ख ग घ ङ / च छ ज झ ञ/ ट ठ ड ढ ण/ त थ द ध न/ प फ ब भ म/
य र ल व/ श ष स ह/ ड़/ ढ़

इस तरह हिंदी वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर तथा 35 व्यंजन हैं।

संयुक्त व्यंजन

क्ष (क् + ष), त्र (त् + र), ज्ञ (ज् + ञ), श्र (श् + र)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. सूरदास

कवि परिचय

सूरदास हिंदी काव्य–जगत् के सूर्य माने जाते हैं। कृष्ण–भक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित करने में उनका विशेष योगदान है। उनके जीवन–वृत्त के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। अधिकतर विद्वान सूरदास का जन्म सन् 1483 ई. (संवत् 1540 वि०) और निधन संवत् 1620 वि० मानते हैं। उनका जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक ग्राम के एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे जन्मांध थे। उनका कंठ बड़ा मधुर था। वे पद–रचना करके गाया करते थे। बाद में वे आगरा और मथुरा के बीच स्थित गऊघाट पर जाकर रहने लगे। वहीं श्री वल्लभाचार्य जी के संपर्क में आए और पुष्टिमार्ग में दीक्षित हुए। उन्हीं की प्रेरणा से सूरदास ने दास्य एवं दैन्य भाव के पदों की रचना छोड़कर वात्सल्य, माधुर्य भाव और सख्य भाव के पदों की रचना करना आरंभ किया। पुष्टिमार्ग के अष्टछाप भक्त कवियों में सूरदास अग्रगण्य थे। पुष्टिमार्ग में भगवान की कृपा या अनुग्रह का अधिक महत्त्व है। इसे काव्य का विषय बनाकर सूरदास अमर हो गए। जब सूरदास का अंतिम समय निकट था तब श्री विट्ठलनाथ जी ने कहा था – ''पुष्टि–मार्ग को जहाज जात है, जाय कछू लैनों होय सो लेउ।''

काव्य परिचय

सूरदास जी की रचनाओं में सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी को ही विद्वानों ने प्रामाणिक रूप से मान्यता दी है। परन्तु 'सूरसागर' की जितनी ख्याति हुई है उतनी शेष दो कृतियों को प्राप्त नहीं हुई।

भाव पक्ष

सूरदास कृष्ण भक्ति की सगुण शाखा के कवि थे। उनकी भक्ति को दो भागों में विभाजित करके देखना अधिक उपयुक्त होगा – एक, श्री वल्लभाचार्य जी से साक्षात्कार के पूर्व की भक्ति जिसमें दैन्य भावना और सूर की गिड़गिड़ाहट अधिक है। दूसरी, श्री वल्लभाचार्य जी से संपर्क के बाद की भक्ति अर्थात् पुष्टिमार्गीय भक्ति, जिसमें सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की भक्ति है। उन्होंने विनय, वात्सल्य और श्रृंगार तीनों प्रकार के पदों की रचना की थी। उन्होंने संयोग और वियोग दोनों प्रकार के पद रचे। 'सूरसागर' का भ्रमर–गीत प्रसंग वियोग श्रृंगार का श्रेष्ठ उदाहरण है। सूर का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की एक अमूल्य निधि है। ये वात्सल्य का कोना–कोना झाँक आए हैं।

कला पक्ष

सूरदास की काव्यभाषा ब्रजभाशा है। लोकोक्ति और मुहावरों का भी सहज रूप में प्रयोग किया है। उनके पदों में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का समुचित प्रयोग मिलता है। 'सूरसारावली' में दृष्टिकूट पद हैं, जो दुरूह माने जाते हैं। विरह वर्णन में व्यंजना शब्द–शक्ति का प्रयोग अधिक है। सूर के सभी पद गेय हैं। उनकी शैली में भी विविधता है। उन्होंने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ–परिचय

प्रस्तुत संकलन में सूरदास के विनय, बाल–वर्णन और भ्रमरगीत के पद संकलित हैं। विनय के पदों में कवि ने अपनी दीनता व्यक्त की है। उन्होंने अपनी तुच्छता का विस्तृत वर्णन करते हुए दीनानाथ, अशरण–शरण, सर्वशक्तिमान भगवान की असीम कृपा का गुणगान किया है और उनसे भक्ति की याचना की है। उनकी भक्ति का मूलाधार पुष्टिमार्गीय भक्ति है, जिसमें सख्य भाव की बहुलता है।

सूर बाल–मनोविज्ञान के पंडित थे। बाल–क्रियाओं का जितना विशद् वर्णन सूर–काव्य में मिलता है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। वात्सल्य–वर्णन का कोई क्षेत्र उनसे नहीं बचा है। वात्सल्य का मुख्य केंद्र यशोदा का हृदय है। उनकी चेष्टाएँ माता के हृदय में आशा–आकांक्षाओं का संचार करती हैं।

भ्रमरगीत विप्रलंभ शृंगार का काव्य है। इसमें विरह की सभी दशाओं का चित्रण है। यह एक उपालंभ काव्य है। विरह–व्यथित गोपियों के तर्क के कारण उद्धव ब्रह्म और योग–साधना को भूल जाते हैं और सगुण भक्ति को स्वीकार कर लेते हैं।

•••

विनय

(1)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ?
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी फिरि जहाज पर आवै।।
कमल–नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंग कौ छाँड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावै।।
जिहि मधुकर अंबुज–रस चाख्यौ, क्यौं करील फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

(2)

अविगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगे मीठे फल कौ रस, अन्तरगत ही भावै।।
परम स्वाद सबही जु निरन्तर, अमित तोष उपजावै।
मन–बाणी कौं अगम–अगोचर, सो जानै जो पावै।।
रूप–रेख–गुण जाति–जुगुति–बिनु, निरालंब मन चक्रित धावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं, सूर सगुन–लीला पद गावै।।

(3)

छाँड़ि मन हरि विमुखन कौ संग।
जाके संग कुबुद्धी उपजै परत भजन में भंग।।
कहा भयौ पय, पान कराये विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर खवाए, स्वान न्हवाए गंग।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग।
गज को कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै गहि छंग।।
पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतौ करत निषंग।
सूरदास खल कारीकामरि चढ़ै न दूजो रंग।।

(4)

अब कै राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम डरिया, पारधि साधेबान।।
ताकै डर तैं भज्यौ चहत हौं, ऊपर ढुक्यो सचान।
दुहूँ भाँति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान?
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, सर छूट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय–जय कृपानिधान।।

बाल–लीला

मैया, मैं तो चंद–खिलौना लैहौं।
जैहौं लोटि धरनि पर अवही, तेरी गोद न ऐहौं।।
सुरभी को पय–पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं।
ह्वै हौं पूत नंद बाबा कौ, तेरौ सुत न कहै हौं।।
आगे आउ, बात सुन मेरी, बलदेवहिं न जनैहौं।
हँसि समुझावति, कहती जसोमति, नई दुलहनिया दैहौं।।
तेरी सौं, मेरी सुनि मैया, अवहिं वियाहन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं।।

(2)

जब हरि मुरली अधर धरी।
गृह–व्यौहार तजे आरज–पथ, चलत न संककरी।।
पद–रिपु पट अंटक्यौ न सम्हारति, उलट न पलट खरी।
सिब–सुत–वाहन आइ मिलें हैं, मन–चित–बुद्धि हरी।।
दुरि गए कीर, कपोत, मधुप, पिक, सारँग सुधिबिसरी।
उडुपति विद्रुम बिम्ब खिसाने, दामिनि अधिक डरी।।
मिलि हैं स्यामहिं हंस–सुता–तट, आनँद–उमँग भरी।
सूर स्याम कौं मिली परस्पर, प्रेम–प्रवाह ढरी।।

(3)

गए स्याम ग्वालिनि घर सूनै।
माखन खाइ, डारि सब गोरस, बासन फोरि किए सब चूनै।।
बड़ौ माट इक बहुत दिननि कौ, ताहि कर्‌यौ दस टूक।
सोवत लरिकनि छिरकि मही सौं हँसत चले दै कूक।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आइ गई ग्वालिनि तिहि औसर, निकसत हरि धरि पाए।
देखे घर बासन सब फूटे, दूध दही ढरकाए।।
दोउ भुज धरि गाढ़े करि लीन्हे, गई महरि के आगै।
सूरदास अब बसै कौनह्याँ, पति रहि है ब्रज त्यागै।।

भ्रमरगीत

(1)

आयौ घोष बड़ौ व्यौपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान–जोग की ब्रज में आय उतारी।।
फाटक दै कर हाटक माँगत भौरे निपट सुधारी।
धुर ही तें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी।।
इनके कहे कौन डहकावे ऐसी कौन अजानी।
अपनो दूध छाँड़ि को पीवै खार कूप को पानी।।
ऊधो जाहु सवार यहाँ तें वेगि गहरु जनि लावौ।
मुँह माँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।

(2)

ऊधो! कोकिल कूजत कानन।
तुम हमको उपदेस करत हौ भस्म लगावन आनन।।
औरों सब तजि, सिंगी लै–लै टेरन चढ़न पखानन।
पै नित आनि पपीहा के मिस मदन हति निज बानन।।
हम तौ निपट अहीरि बाबरी जोग दीजिए ज्ञाननि।
कहा कथत मामी के आगे जानत नानी नानन।।
सुंदरस्याम मनोहर मूरति भावति नीके गानन।
सूर मुकुति कैसे पूजति है वा मुरली की तानन।।

(3)

ऊधो! जाहु तुम्हैं हम जाने।
स्याम तुम्हैं ह्याँ नाहिं पठाए तुम हौ बीच भुलाने।।
ब्रजवासिन सों जोग कहत हौ, बातहु कहन न जाने।
बढ़ लागै न विवेक तुम्हारो ऐसे नए अयाने।।
हमसों कही लई सो सहिकै जिय गुनि लेहु अपाने।
कहँ अबला कहँ दसा दिगंबर संमुख करौ पहिचाने।।
साँच कहौ तुमको अपनी सौं बूझति बात निदाने।
सूर स्याम जब तुम्हैं पठाए तब नेकहु मुसुकाने।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4)

ऊधो! भली करी अब आए।
विधि–कुलाल कीने काँचे घट ते तुम आनि पकाए।।
रंग दियो हो कान्ह साँवरे, अँग अँग चित्र बनाए।
गलन न पाए नयन–नीर ते अवधि अटा जो छाए।।
ब्रज करि अँवाँ, जोग करि ईंधन सुरति–अगिनी सुलगाए।
फूँक उसास, विरह परजारनि, दरसन आस फिराए।।
भए सँपूरन भरे प्रेम–जल, छुवन न काहू पाए।
राजकाज तें गए सूर सुनि, नंदनन्दन कर लाए।।

(5)

ऊधो! मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता की सुन्दरि कगरी अरू कुंजन की छाहीं।।
वै सुरभी, वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं।।
यह मथुरा कंचन की नगरी मनि–मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की जिय उमगत तनु नाहीं।।
अनगन भाँति करी बहु लीला जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि कहि पछिताहीं।।

शब्दार्थ

अनत–अन्यत्र / खनावै–खुदाए / छेरी–बकरी / अविगत–निराकार ब्रह्म / परम स्वाद–अलौकिक आनंद / निरालंब–बिना आधार का / अरगजा–कपूर, केसर और चंदन से बना सुगंधित पदार्थ / मरकट–बंदर / पारधि–बहेलिया / ढुक्यौ–झपटा / सचान–बाज / गुहै हौं–गुथवाऊँगा / आरजपथ–आर्य मार्ग / शिव–सुत–वाहन–मयूर / चूनै– चूर–चूर / पति–प्रतिष्ठा / घोष–अहीरों की बस्ती / फाटक–फटकन / हाटक–सोना / डहकावे – बहके / निदाने–सच, वास्तविक / कुलाल–कुम्हार / हंससुता–यमुना / खरिक–गाय दुहने का स्थान।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. ''जब हरि मुरली अधर धरी'' पद में वर्णन किया है –
   (क) मुरली की मधुरता का। (ख) कृष्ण के मुरली वादन का।
   (ग) गोपियों की मुग्धता का। (घ) मुरली–ध्वनि के अलौकिक प्रभाव का। ( )
2. ''आयौ घोष बड़ौ व्यौपारी'' कथन में छिपा है –
   (क) व्यंग्य (ख) उपालंभ
   (ग) उपेक्षा (घ) घृणा ( )

उत्तरमाला – (1) ग (2) क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै'' पंक्ति के मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए कौन–सा उदाहरण दिया है ?
2. सूरदास ने हरि–भक्ति से विमुख लोगों का साथ छोड़ने का आग्रह क्यों किया है ?
3. ''ताकै डरतैं भज्यौ चाहत हौं, ऊपर ढुक्यो सचान'' पंक्ति में सचान किसका प्रतीक है ?
4. गोपियाँ उद्धव को मुँह माँगी वस्तु देने को कब तैयार थी ?
5. ग्वालिन के सूने घर में जाकर कृष्ण ने क्या किया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. गोपी–उद्धव संवाद को भ्रमरगीत के नाम से क्यों पुकारा जाता है ?
2. ''ऊधो! भली करी अब आए'' गोपियों ने उद्धव के आगमन को उचित बताते हुए क्या व्यंग्य किया है?
3. ''मैया, मैं तो चंद–खिलौना लैहौं।'' पद में बाल स्वभाव की कौनसी विशेषता बताई गई है और माता ने उसका समाधान किस प्रकार किया ?
4. ''ऊधो! कोकिल कूजत कानन'' पद में गोपियों ने योग साधना का खंडन किस प्रकार किया है ?
5. ''सूर स्याम जब तुम्हैं पठाए तब नेकहु मुसकाने'' पद में गोपियों ने उद्धव से यह प्रश्न क्यों किया ? कारण स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'सूर ने बाल लीला का मनोहारी वर्णन किया है।' उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. सूरदास जी ने निर्गुण का खंडन और सगुण का समर्थन किया है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. गोपियाँ कृष्ण की अनन्य प्रेमिका थीं। भ्रमरगीत के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) ऊधो! कोकिल ....दिखावौ।

(ख) जब हरि ....प्रेम प्रवाह ढरी।

(ग) अब कै राखि........................कृपानिधान।

(घ) ऊधो! मोहि.......................पछिताहीं।

यह भी जानें

हिंदी अंक – १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप – 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

टिप्पणी – संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा, परंतु राष्ट्रपति, संघ के किसी भी राजकीय प्रयोजन के लिए भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप के साथ–साथ देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकते हैं।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. मीरा बाई

कवि परिचय

हिंदी के कृष्णभक्त कवियों में मीरा बाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके जन्मकाल तथा जीवन–वृत्त के विषय में बहुत मतभेद है परन्तु मुख्यतः माना जाता है कि मीरा मेड़ता के राव रत्नसिंह की पुत्री थीं। इनका जन्म 1498 ई० में कुड़की गाँव में हुआ था। राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह 1516 ई० में हुआ। कुछ वर्षों में ही कुँवर भोजराज मुगलों के साथ युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए और मीरा विधवा हो गई। बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थीं। वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थीं। लौकिक प्रेम में उनकी रुचि और निष्ठा नहीं थी। भगवान कृष्ण के प्रेम में दीवानी बनी मीरा ने .लोक लाज छोड़कर भक्ति का मार्ग अपनाया। साधु–संतों के साथ भक्ति भावना में लीन रहने और उनके साथ उठने–बैठने के कारण चित्तौड़ के राजपरिवार ने उनका विरोध किया। अंततः मीरा राजपरिवार को छोड़कर दवारका चली गईं। वहीं कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गईं, ऐसी प्रसिद्धि है।

काव्य परिचय

मीरा ने विशेषतः पदों की रचना की थी। उनके पदों की अनेक टीकाएँ और संकलन बने हैं। उनके चार काव्य ग्रंथ हैं – 1. नरसी जी का मायरा, 2. गीत गोविंद की टीका, 3. राग गोविंद, 4. राग सोरठ।

मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में हैं। कोई चमत्कार दिखाने के लिए उन्होंने काव्य नहीं रचा। भगवान के प्रति अनन्य अनुराग उनके पदों में सहज रूप से व्यक्त हुआ है।

मीरा का काव्य माधुर्य भाव का जीवंत रूप है। वे कृष्ण को ही अपना पति मानकर उपासना करती थीं। उनके लिए संसार में कृष्ण के अतिरिक्त दूसरा पुरुष अस्तित्व में ही नहीं था। कृष्ण के विरह में वे व्याकुल रहती थीं। यही व्याकुलता उनके पदों में व्यक्त हुई। श्रृंगार के विप्रलंभ पक्ष का चित्रण बहुत मार्मिक है। उनकी स्वानुभूति ने अभिव्यक्ति को अत्यधिक अनुपम बना दिया।

मीरा के पदों में प्रसाद और माधुर्य गुणों की प्रचुरता है। पदों में श्रुतिमधुर वर्णयोजना, सीधी–सादी उक्तियाँ और सच्चा आत्म निवेदन उनके काव्य की ऐसी विशेषताएँ हैं जो मीरा को प्रथम कोटि के भक्त कवियों में निस्संदेह स्थान प्रदान करती है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में उद्धृत मीरा बाई के पदों में उनकी कृष्ण–भक्ति व्यक्त होती है। वे अपने को कृष्ण की दासी, प्रियतमा, भक्त एवं उपासिका के रूप में मानती हैं। संसार को नश्वर मानकर कृष्ण को परमात्मा के रूप में भजने से ही जीव का कल्याण हो सकता है। जब तक प्रिय से भेंट नहीं होती, जीव व्यथित रहता है, चैन नहीं पड़ती। सद्गुरु की कृपा से भवसागर पार किया जा सकता है। वे कृष्ण को निर्गुण, सगुण, प्रिय, जोगी आदि अनेक संबोधनों से पुकारती हैं। यहाँ कृष्ण–प्रेम की अनन्यता प्रकट हुई है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पदावली

भज मन! चरण–कँवल अविनासी।
जेताई दीसै धरणि–गगन विच, तेता (इ) सब उठ जासी।।
इस देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी।।
कहा भयो है भगवा पहर्‌याँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होइ जुगति नहिं जांणि, उलटि जनम फिर आसी।।
अरज करूं अबला कर जोरे, स्याम! तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर! काटो जम की फाँसी।।

(2)

दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे कबहुँ न पायो चैन।।
सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपै मीठे–मीठे बैन।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गई करवत अैन।।
कल न परत पल हरि मग जोंवत भई छमासी रैण।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलौगे दुख मेटण सुख दैण।।

(3)

मैंने राम रतन धन पायो।
बसत अमोलक दी मेरे सतगुर, करि किरपा अपणायो।
जनम–जनम की पूँजी पायी, जग में सबै खोवायो।
खरचै नहिं चोर न लेवैं, दिन–दिन बधत सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तरि आयो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरखि–हरखि जस गायो।।

(4)

माई री! मैं तो लियो गोविन्दो मोल।
कोई कहै छानै, कोई कहै चौड़े, लियो री बजंता ढोल।।
कोई कहै मुँहघो, कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो, कोई कहै गोरो, लियो री आँखी खोल।।
याही कूँ सब जग जाणत है, लियो री अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल।।

शब्दार्थ

कँवल–कमल/ अविनासी–नष्ट न होने वाला/ करवत–आरा/ जासी–जाएगा/चहरकी बाजी–चौसर खेल की बाजी/ जम की फाँसी–यम का फंदा, काल–पाश/ विण–बिना/ नैण–नयन, नेत्र/छानै–छिपे तौर पर/ मुँहघो–महँगा/ सुँहघो–सस्ता/

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूरब जनम को कोल मीरा का कृष्ण के प्रति पूर्वजन्म के प्रेम का भाव प्रकट होता है। ऐसी मान्यता है कि पूर्व जन्म में मीरा ललिता नाम की गोपी थी, जो कृष्ण से प्रेम करती थी। मीरा ने उसी भाव को प्रकट किया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'लियो री बजंता ढोल' पंक्ति में 'बजंता ढोल' से मीरा का आशय है –
   (क) प्रसन्न होकर (ख) निशंक होकर
   (स) सबको दिखाकर (द) छिपकर ( )
2. मीरा के पदों में किस भाव की प्रधानता है ?
   (क) वीर (ख) वात्सल्य
   (ग) ओज (द) माधुर्य ( )

उत्तरमाला – (1) ख (2) घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीरा संसार को किस खेल के समान मानती है ?
2. सद्‌गुरु ने मीरा को कौन सी अमूल्य वस्तु प्रदान की ?
3. 'लियो री आँखी खोल' कथन से मीरा का क्या आशय है ?
4. मीरा को किस रत्न की प्राप्ति हुई ?
5. मीरा की भक्ति किस कोटि की है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीरा की संसार के प्रति क्या धारणा है और वे अपने मन को क्या प्रेरणा देती है ?
2. मीरा ने राम रतन धन में क्या विशेषता पाई ?
3. 'मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल' यहाँ पूरब जनम को कोल से क्या तात्पर्य है ?
4. 'सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तरि आयो।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. मीरा के अनुसार हमारी देह किस प्रकार की है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. मीरा की भक्ति भावना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. मीरा के पदों की काव्यगत विशेषता बताइए।
3. 'माई री! मैं तो लियो गोविन्दा मोल' पद का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) भजमन–चरण..............................फाँसी।

(ख) मैंने राम रतन ....जस गायो।

•••

यह भी जानें

'छ' आकार में रहे। त्र के स्थान पर त्र का प्रयोग ही अपेक्षित है।

श्रृ का प्रयोग ही वांछित है (श्रृ का नहीं) जैसे – श्रृंगार, श्रृंखला आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. भूषण

कवि परिचय

रीतिकाल में जिन रचनाकारों ने श्रृंगार के अतिरिक्त अन्य रसों एवं प्रवृत्तियों को काव्य–सृजन का आधार बनाया, उनमें महाकवि भूषण अग्रगण्य है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के महान रक्षक शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का ओजस्वी वर्णन करके हिंदी कविता की श्रीवृद्धि की।

भूषण कानपुर जिले के तिकवाँपुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1613 ई० में हुआ था। प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम इनके भाई कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार इनका नाम घनश्याम था। इनको 'भूषण' की उपाधि चित्रकूट के राजा रुद्र सोलंकी से मिली थी परंतु अब इनका नाम भूषण ही काव्य जगत में प्रसिद्ध है।

भूषण अनेक राजाओं के आश्रय में रहे किन्तु इन्हें दो वीरों के आश्रय में रहने से ही विशेष मान मिला। वे थे महाराज शिवाजी और वीर छत्रसाल। उन्होंने औरंगजेब की नीतियों का विरोध कर उससे अनेक युद्ध किए थे। ऐसे महावीरों को चरितनायक बनाकर भूषण ने कविता को सार्थक किया। कहते हैं, महाराज छत्रसाल ने इन्हें सम्मान देने के लिए इनकी पालकी में कंधा लगाया था, तभी भूषण ने कहा था – ''सिवा कौ बखानों कै बखानों छत्रसाल कौ।'' इनका निधन सन् 1715 ई० में हुआ माना जाता है।

काव्य परिचय

भूषण के तीन काव्य–ग्रंथ प्राप्त हैं – शिवराजभूषण, शिवाबावनी और छत्रसाल दशक।

भूषण की कविता ब्रजभाषा में है। शिवाजी और छत्रसाल का शौर्यवर्णन उनके काव्य का मुख्य विषय है। शिवाजी की युद्धवीरता, दानशीलता, दयालुता, धर्मवीरता आदि का सजीव वर्णन ओजस्वी वाणी में इन्होंने किया है। इसी कारण भूषण वीररस के प्रथम कोटि के कवि माने जाते हैं।

अपनी कविता में भूषण ने ऐतिहासिक घटनाओं को बराबर ध्यान में रखा है जिससे वर्णनों की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। उन्होंने अरबी, फारसी शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। शब्दों को तुक मिलाने या प्रभाव पैदा करने के लिए तोड़ा–मरोड़ा भी खूब है। अनेक स्थलों पर व्याकरण के नियमों की भी चिंता नहीं की है, फिर भी वीर भावनाओं को उद्बुद्ध करने की उनमें अद्भुत क्षमता है। भूषण का काव्य वीररस का पर्याय बन गया है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में भूषण के 5 छंदों में शिवाजी की वीरता वर्णित है। 5 छंद छत्रसाल की प्रशंसा से संबद्ध हैं। शिवाजी की वीरता की परंपरा–रूढ़ वर्णन प्रारंभ के दो छंदों में है। इनमें शिवाजी के आतंक से पीड़ित शत्रु–नारियों की दुर्दशा चित्रित है। शिवाजी की विजय एवं औरंगजेब आदि के शत्रुओं मानभंग का वर्णन है तथा औरंगजेब के सेनापतियों का भय वर्णित है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शिवाजी की वीरता, युद्धवीरता, औरंगजेब के मन में शिवाजी के भय का सजीव वर्णन है। पाँचवें छंद में शिवाजी को भारतीय संस्कृति के महान रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है।

छत्रसाल विषय छंदों में प्रथम में छत्रसाल के आक्रमण, द्वितीय में उनकी महिमा, तृतीय में युद्धवीरता चतुर्थ में उनकी बरछी एवं पंचम में उनके प्रताप का ओजस्वी वर्णन है।

शिवाजी का शौर्य

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।
कंदमूल भोग करैं कन्दमूल भोग करें,
तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं।।
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।
'भूषन' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।।1।।
गढ़न गँजाय गढ़धरन सजाय करि,
छाँड़ि केते धरम दुवार दै भिखारी से।
साहि के सपूत पूत वीर सिवराजसिंह,
केते गढ़धारी किये वन वनचारी से।।
'भूषन' बखानैं केते दीन्हें बन्दीखानेसेख,
सैयद हजारी गहे रैयत बजारी से।
महतो से मुगल महाजन से महाराज,
डाँडि लीन्हें पकरि पठान पटवारी से।।2।।
दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी,
उग्ग नाचे उग्ग पर रुण्ड मुँड फरके।
'भूषन' भनत बाजे जीति के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंहल लौं सरके।।
मारे सुनि सुभट पनारेवारे उद्भट,
तारे लागे फिरन सितारे गढ़धर के।
बीजापुर वीरन के, गोकुण्डा धीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके।।3।।
अंदर ते निकसीं न मंदिर को देख्यो द्वार,
बिन रथ पथ ते उघारे पाँव जाती हैं।
हवा हू न लागती ते हवा ते बिहाल भईं,
लाखन की भीरि में सम्हारतीं न छाती हैं।।
'भूषन' भनत सिवराज तेरी धाक सुनि,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हयादारी चीर फारि मन झुझलाती हैं।
ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की,
नासपाती खातीं तें वनासपाती खाती हैं।।4।।
बेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यो अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।
मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाहि,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज,
देवराखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।।5।।

छत्रसाल की वीरता

रैयाराव चंपति को चढ़ो छत्रसाल सिंह भूषण भनत गजराज जोम जमके।
भादौ की घटा सी उड़ि गरद गगन घिरे सेलैंसमसेरैं फिरे दामिनि सी दमके।
खान उमरावन के आन राजारावन के सुनि सुनि उर आगैं घन कैसे घमके।
बैयर बगारन की अरिके अगारन की लाँघती पगारन नगारन के धमके।।1।।

चाकचकचमू के अचाकचक चहूँ ओर, चाक सी फिरति धाक चंपति के लाल की।
भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्ही, काहू उमराव ना करेरी करवाल की।
सुनि सुनि रीति बिरुदैत के बड़प्पन की, थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की।
जंग जीतिलेवा तेऊ ह्वै कै दामदेवा भूप, सेवा लागे करन महेवा महिपाल की।।2।।

अस्त्रगहि छत्रसाल खिभयो खेत बेतबै के, उत तें पठानन हूँ कीन्ही झुकि झपटैं।
हिम्मति बड़ी कै कबड़ी के खेलवारन लौं, देत सै हजारन हजार बार चपटैं।
भूषन भनत काली हुलसी असीसन कौं, सीसन कौं ईस की जमाति जोर जपटैं।
समद लौं समद की सेना त्यों बुँदेलन की सेलैं समसेरैं भईं बाड़व की लपटैं।।3।।

भुज–भुजनेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।4।।

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो, गाजत गयंद गिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत, ताप तजि दुज्जन करत बहुत ख्याल को।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीन्हे, भूषन भनत ऐसो दीनप्रतिपाल को।
आन रावराजा एक मन में न लाऊँ अब, साहू को सराहों कै सराहौं छत्रसाल को।।5।।

•••

शब्दार्थ

मन्दर–भवन/ मन्दर–कन्दरा/ कंदमूल–मेवा, मिष्टान्न/ कन्दमूल–वृक्षों की जड़ें/ भूषन–आभूषण/ भूषन–भूख/ बिजन–पंखा/ बिजन–निर्जन/ नगनजड़ाती–नगीने जड़े हुए थे/ नगन जड़ाती–जाड़े में वस्त्रहीन काँपती है/ गंजाय–तोड़–फोड़ कर / हजारी–पंच हजारी, मनसबदार/ डांडि–दंड, जुरमाना/ गांजी–विजेता/ पगारन – परकोटा/ करेरी–कठोर/ जेर कीन्ही–हीन/ थप्पन–स्थापना/ उथप्पन–उठा देना/ खिभयो–क्रुद्ध हुआ। खेत–रणक्षेत्र/ कबड़ी–कबड्डी का खेल/चपटैं–चोट/ जपटैं–झपटती है/ समद लौं–समुद्र सम/ समद–अब्दुस्समद/ बैसंगिनी–जीवन भर साथ देने वाली/ खेदि–खदेड़कर/ बख्तर–कवच/ आफताब–सूर्य/ तुरी–तुरंग, घोड़ा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भूषण ने किसे श्रेष्ठ वीर माना है –

   (क) अल्लाउद्दीन　　(ख) औरंगजेब

   (ग) मानसिंह　　(घ) शिवाजी　　(　)

2. 'चमू' का अर्थ है –

   (क) चक्र　　(ख) चमड़ा

   (ग) चमक　　(घ) सेना　　(　)

उत्तरमाला – (1)घ (2) घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. शिवाजी ने किसे आतंकित कर रखा था ?
2. 'तीन बेर खाती ते वैं तीन बेर खाती हैं' पटरानियों की ऐसी दशा किस कारण हुई?
3. 'कंदमूल भोग करैं कंदमूल भोग करैं' पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?
4. शिवाजी ने गढ़पतियों के साथ कैसा व्यवहार किया ?
5. भूषण ने छत्रसाल की भुजाओं की समता किससे की है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'भुज भुजगेस की बैसंगिनी भुजंगिनी' से क्या तात्पर्य है ?
2. 'तीन बेर खाती ते वैं तीन बेर खाती हैं' का अर्थ लिखिए।
3. शिवाजी के डर के कारण बेगमों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
4. 'नासपाती खातीं तें वनासपाती खाती हैं' पंक्ति का अर्थ लिखिए।
5. छत्रसाल के प्रताप का वर्णन तीन पंक्तियों में कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'भूषण का काव्य वीर रस प्रधान है' उक्त कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. भूषण की काव्य कला की विशेषताएँ बताइए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) ऊँचे घोर ....जड़ाती हैं।

(ख) चाक चक...महिपाल की।

(ग) भुज भुजगेस.......................................खलन के।

(घ) अंदर ते..खाती हैं।

•••

यह भी जानें

संयुक्त वर्ण

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन – खड़ी पाई वाले व्यंजनों के संयुक्त रूप परंपरागत तरीके से खड़ी पाई को हटाकर ही बनाए जाएँ। जैसे – ख्याति, लग्न, विघ्न, कच्चा, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, व्यास, श्लोक, राष्ट्रीय, स्वीकृति, यक्ष्मा, यंबक आदि।

(ख) क और फ/फ़ के संयुक्ताक्षर – क और फ के हुक को हटाकर ही संयुक्ताक्षर बनाए जाएँ। जैसे संयुक्त, पक्का, दफ्तर आदि। न कि संयुक्त, पक्का की तरह।

(ग) ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ। जैसे – वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि। (वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, चिह्न, ब्रह्मा नहीं)

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. बिहारी

कवि परिचय

कविवर बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हुए हैं। श्रृंगार रस की चमत्कारपूर्ण कविता करने वालों में ये अग्रगण्य हैं। इनका जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविंदपुर में माथुर चतुर्वेदी परिवार में सन् 1595 में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था, जो प्रसिद्ध कवि केशवदास से भिन्न थे। बचपन में बिहारी को संस्कृत, प्राकृत, ज्योतिष आदि के अध्ययन का सुयोग मिला। बाद में वृंदावन आए और निंबार्क संप्रदाय में राधा–कृष्ण भक्ति की दीक्षा ली। इनकी काव्य–प्रतिभा से प्रसन्न होकर शाइजादा खुर्रम (जो बाद में शाहजहाँ के नाम से दिल्ली के बादशाह हुए) इन्हें दिल्ली ले आए। वहाँ शाही दरबार में प्रतिष्ठा मिली, जिसे कई हिंदू राजाओं ने भी इन्हें सम्मान दिया। आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह ने इनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी। एक बार अपनी वृत्ति लेने जब आमेर पहुँचे तो वहाँ राजा जयसिंह, नवोढ़ा रानी के अनुराग में इस तरह आसक्त थे कि राजकाज ही भुला बैठे थे। सचेत करने के लिए बिहारी ने यह दोहा लिखकर राजा के पास भिजवाया –

''नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल।
अली, कली ही सों बिंध्यो आगैं कौन हवाल।।''

दोहा पढ़कर जयसिंह की आँखें खुल गईं। इस अन्योक्ति से वे बहुत प्रभावित हुए। प्रसन्न होकर बिहारी को पुरस्कार रूप में जागीर दी। फिर बिहारी आमेर में ही स्थायी रूप से रहने लगे। इन्होंने राजा के कहने पर सात सौ दोहे लिखे, जो 'सतसैया' के नाम से विख्यात है। इनका निधन सन् 1663 में हुआ।

काव्य परिचय

बिहारी की एक मात्र कृति 'सतसैया' प्रसिद्ध है। इसमें कुल 713 दोहे हैं। इस पर शताधिक टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। पूर्ण 'बिहारी रत्नाकर' नाम से प्रसिद्ध बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर की टीका उत्कृष्ट है। 'सतसैया' में भक्ति, नीति, हास्य–व्यंग्य, वीरता, राजप्रशस्ति, धर्म, सत्संग–महिमा एवं श्रृंगार का वर्णन दोहों में किया है। कुछ कवित्त भी उनके रचे बताए जाते हैं परंतु प्रामाणिक नहीं हैं। एक ही रचना (सतसैया) से बिहारी को इतनी ख्याति मिली, यह उनकी काव्यगत उत्कृष्टता का ज्वलंत प्रमाण है।

भाव पक्ष

बिहारी मूलतः श्रृंगारी कवि थे। नायिकाओं के रूप–सौंदर्य, पूर्वानुराग, मान, प्रवास आदि के चमत्कारपूर्ण चित्र उनके काव्य में मिलते हैं। लज्जा, मद, अवहित्था, हर्ष, विबोध आदि संचारी भावों और नायक–नायिका की चेष्टाओं या अनुभावों का जैसा वर्णन सतसई में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। संयोग श्रृंगार में कवि का मन विशेष रूप से रमता था। फारसी पद्धति अपनाने के कारण नायिकाओं के विरह वर्णन अस्वाभाविक हो उठे हैं।

भक्तिपरक दोहों में वर्णित भक्तिभाव में भक्त कवियों जैसा ईश्वर–प्रेम और अनन्यभाव दिखाई पड़ता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कला पक्ष

बिहारी उच्चकोटि के काव्य शिल्पी थे। दोहा जैसे छोटे छंद में चुन–चुनकर व्यंजक शब्दों का प्रयोग करके कवि ने अर्थगांभीर्य कौशल दिखाया है। समास पद्धति अपनाकर भाषा की समाहार शक्ति से काम लिया है। इसीलिए कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। उनकी ब्रजभाषा इतनी सशक्त और शुद्ध है कि आलोचकों ने उसे मध्यकाल की मानक काव्यभाषा के रूप में स्वीकार किया है। अलंकारों का समुचित प्रयोग, प्रसंगानुकूल मधुर व्यंजक पदावली, सांकेतिक अभिव्यंजना शैली ऐसी विशेषताएँ हैं जो बिहारी को रीतिकाल में सर्वोपरि स्थान प्रदान करती है। उनकी भाषा में चित्रोपमता, नाद-सौंदर्य, लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग सहजता से हुआ है।

पाठ–परिचय

इस पाठ में बिहारी के भक्ति, श्रृंगार, नीति और प्रकृति संबंधी दोहों का संकलन किया गया है। भक्ति संबंधी दोहों में कवि ने चुनौतीपूर्ण भाषा में भगवान से अपने उद्धार की याचना की है तो कहीं नागरी राधा से भव–बाधा दूर करने की याचना की है। श्रृंगार संबंधी दोहों में नारी–सौंदर्य का वर्णन किया है। सतसई में श्रृंगार के दोनों पक्षों का सुंदर चित्रण है। वियोग के दोहों में अतिशयोक्ति भी है। नीति के दोहों में कवि ने जीवन के यथार्थ रूप का वर्णन करते हुए आदर्श की बात कही है। ससुराल में रहने से जँवाई का मान घटता है। विनम्रता से ही व्यक्ति समाज में सम्मान पाता है। प्रकृति संबंधी दोहों में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया है। भावों की अभिव्यक्ति अनूठी है। अलंकारों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में अधिक सौंदर्य आ गया है।

•••

दोहे

मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित–दुति होइ।।1।।
करौ कुवत जगु कुटिलता तजौं न दीनदयाल।
दुखी हो हुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल।।2।।
मोहूँ दीजै मोषु, ज्यों अनेक अघमनु दियौ।
जौ बाँधै ही तोषु, तौ बाँधौ अपनैं गुननु।।3।।
पतवारी माला पकरि और न कछु उपाउ।
तरि संसार–पयोधि कौं, हरि–नावैं करि नाउ।।4।।
तौ, बलियै, भलियै बनी, नागर नंद किसोर।
जौ तुम नीकैं कै लख्यौ मो करनी की ओर।।5।।
अब तजि नाउँ उपाव कौ, आए पावस-मास।
खेलु न रहिबौ खेम सौं केम–कुसुम की वास।।6।।
आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु।
घरहँ जँवाई लौं घट्यौ खरौ पूस–दिन मानु।।7।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुनत पथिक–मुँह, माह–निसि चलति लुवैं उहिं गाँम।
बिनु बूझैं, बिनु हीं कहैं, जियति बिचारी बाम।।8।।
नहिं पावसु, ऋतुराज यह, तजि तरवर चित–भूल।
अपतु भऐं बिनु पाइहै क्यौं नव दल, फल, फूल।।9।।
रुक्यौ साँकरैं कुंज–मग, करतु झाँझि झकुरातु।
मंद मंद मारुत–तुरँगु खूँदतु आवतु जातु।।10।।
तंत्री–नाद, कवित्त–रस, सरस–राग, रति–रंग।
अनबूड़े–बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।।11।।
कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहिं खाऐं बौराइ जगु, इहिं पाएँ बौराइ।।12।।
नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली, कली ही सौं बिंध्यौ, आगैं कौन हवाल।।13।।
नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत।।14।।
स्वारथु, सुकृत न श्रमु वृथा, देखि, बिहंग, बिचारि।
बाज, पराएँ पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि।।15।।
लाज–लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं।।16।।
जोग–जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय–अद्वैतता कानन सेवत नैन।।17।।
कौन सुनै, कासौं कहौं, सुरति विसारी नाह।
बदाबदी ज्यौ लेत हैं, ए बदरा बदराह।।18।।
कुटिल अलक छुटि परतमुख बढ़िगौ इतौ उदोतु।
बंक बकारी देत ज्यौं दामु रुपैया होतु।।19।।
रह्यौ ऐचि अंतु न लहै अवधि–दुसासनु बीरु।
आली, बाढ़तु विरह ज्यौं पांचाली कौ चीरु।।20।।
दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख–दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रवि–चंदु।।21।।
तिय कित कमनैती, पढ़ी बिनु जिहि भौंह कमान।
चलचित–बेझैं चुकति नहिं बंकबिलोकनि–बान।।22।।
आड़े दै आले बसन जाड़े हूँ की राति।
साहसु ककै सनेह–बस सखी सबै ढिंग जाति।।23।।
कौड़ा आँसू–बूँद, कसि साँकर बरुनी सजल।
कीने बदन निमूँद, दृग–मलिंग डारे रहत।।24।।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

भव–बाधा–सांसारिक कष्ट/ झाँई–(इसके तीन अर्थ हैं) परछाई, झलक, ध्यान/ हरित–(इसके भी तीन अर्थ हैं) हरा रंग, हराभरा अर्थात् प्रसन्न, हर लेना या तेजहीन/ कुवत–कुबात/ मोषु–मुक्ति/ गुननु–गुणों से, रस्सी से/ पतवारी–पतवार, प्रतिज्ञा/ नावै–नाम/बलियै–बलिहारी/खेम–क्षेम/कैम–कदंब/तेजहिं–प्रकाश/ दिनभानु–सूर्य, दिन का मान/ अपतु–अपत्र, अमर्याद/साँकरै–संकीर्ण/ झकुरातु–झुकना/ विकास–विकसित, खिलना/ हुलसै रहैं–उल्लसित होता रहता/ गेंद के पोत–गेंद की वृत्ति/ मुँहजोर–शक्तिशाली मुख वाले, अधिक बोलने वाले/ जोग–योग, संयोग/ अद्वैतता– जीवन और ब्रह्म की एकता, सब काल के लिए एक हो जाना/ कानन सेवत–कानों तक आयत, वन में तपस्या करने वाला/ बदराह–कुमार्ग गामी/ बकारी–रुपये का अंकन करने का चिह्न/ दाम–दमड़ी/ पांचाली–द्रौपदी/ कमनैती–धनुर्विद्या/कौड़ा–कौड़ी/ मलिंग–फकीर।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
   जा तन की झाँई परैं, श्यामु हरित–दुति होइ।।'
   उपर्युक्त दोहे के किस शब्द में श्लेष अलंकार है ?
   (क) नागरि सोइ (ख) भव–बाधा
   (ग) तन (घ) हरित–दुति ( )
2. 'पौष मास में दिनमान प्रभावहीन हो जाता है', इस भाव को स्पष्ट करने के लिए किससे उपमा दी है ?
   (क) अतिथि से (ख) जँवाई से
   (ग) छोटे दिन से (घ) सूर्य की तेजी से ( )

   उत्तरमाला– (1) घ (2) ख

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'त्रिभंगीलाल' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?
2. जनता का दुःख किस समय अधिक बढ़ जाता है ?
3. नायिका बादलों के किस व्यवहार से दुखी है ?
4. 'बाज, पराएँ पानि परि' कथन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
5. 'कनक कनक तै सौ गुनी' में कौनसा अलंकार है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. तौ, बलियै, भलियै बनी, नागर नंद किसोर।
   जौ तुम नीकैं कै लख्यौ मो करनी की ओर।।
   उपर्युक्त दोहे में निहित कवि के मूलभाव को स्पष्ट कीजिए।
2. नायक ने नायिका की कमनैती की क्या विलक्षणता बताई है ?
3. कवि ने नीच व्यक्ति के स्वभाव की क्या विशेषता बताई है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. 'अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े, सब अंग' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'बिहारी अपनी बात कहते किसी से है और उसका प्रभाव किसी और पर पड़ता है।' उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. 'बिहारी के दोहों में भावों की सघनता है' सप्रमाण स्पष्ट कीजिए।
3. बिहारी की वाक्पटुता सराहनीय है, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर बिहारी के काव्य की विशेषता बताइए –
   (क) अलंकार योजना (ख) प्रकृति वर्णन
   (ग) उक्ति वैचित्र्य (घ) भाषा
5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) कौड़ा आँसू...डारे रहत।
   (ख) जोग–जुगति ....सेवत नैन।
   (ग) अब तजि नाउ ....कुसुम की वास।
   (घ) नीच हियै ....ऊँचे होत।

•••

यह भी जानें –

(क) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे। जैसे – प्रकार, धर्म, राष्ट्र

(ख) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे 'श्र' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।

(ग) त्+र के संयुक्त रूप के लिए त्र का ही प्रयोग किया जाएगा 'त्र' का नहीं।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय

भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने का आह्वान करने एवं भारतीय संस्कृति की तात्त्विक विशेषताओं को अपने प्रबंध–काव्यों के माध्यम से व्याख्या करने के कारण मैथिलीशरण गुप्त 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाने–माने गए हैं। आपका जन्म 1886 ई० में चिरगँव, जिला झाँसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपकी शिक्षा घर पर ही हुई, परन्तु काव्य–दीक्षा 'सरस्वती' के स्वनामधन्य संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा प्राप्त हुई। आपके 'भारत–भारती' नामक काव्य को अतीव लोकप्रियता प्राप्त हुई और भारत के राष्ट्रीय जागरण में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपकी सभी कविताओं में राष्ट्रीयता और सांस्कृतिकता का उन्मेष दिखाई पड़ता है। 'साकेत' आपका श्रेष्ठ काव्य है, जिसमें राम के पावन चरित्र को आधुनिक परिवेश में उपस्थित करने के साथ ही उपेक्षिता उर्मिला के आँसू पोंछने का प्रयास भी किया गया है।

मैथिलीशरण गुप्त सरल–निश्छल स्वभाव के आदर्श पुरुष थे, जो संपूर्ण हिंदी जगत् में 'दद्दा' के नाम से विख्यात थे। बीसवीं शताब्दी के हिंदी कवियों की कई पीढ़ियों को आपकी कविता ने भाव और भाषा की दृष्टि से प्रभावित किया है। राष्ट्रीय आंदोलन के सभी स्वरों को आपने अपने काव्य के द्वारा मुखरित किया है। आपको उत्तरी भारत के सांस्कृतिक नव–जागरण का प्रतिनिधि कवि कहा जा सकता है। आपने प्रबंध–काव्य भी लिखे हैं और मुक्तक कविताओं की भी रचना की है। आपके खण्डकाव्य विशेष लोकप्रिय हुए हैं।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ में आए पद्य 'भारत–भारती' से उद्धृत हैं। इस पाठ में गुप्त ने भारतीय प्राचीन परंपराओं का चित्रण किया है। गुप्त जी ने भारत भूमि को ब्राह्मी स्वरूपा और ज्ञान विज्ञान का केंद्र बताया है। भारत भूमि धन–धान्य से पूर्ण है एवं समस्त प्राणियों का पालन–पोषण करने वाली है। कवि ने भारत भूमि के आज बदलते स्वरूप पर भी चिंता व्यक्त की है। भवन की विशेषता बताते हुए कहा कि यहाँ के मंदिर बहुत ऊँचे थे और उन पर लगी ध्वजा आकाश तक फहराया करती थी। यहाँ का जल भी अमृत के समान है। यहाँ के पानी को पीकर आलस्य का नाश हो जाता है तथा बल और विक्रम प्राप्त होता है। यहाँ की प्रातःवेला हमें कर्मरत होने की प्रेरणा देती है। स्नान के पश्चात यहाँ दान का भी अत्यधिक महत्व है। प्राचीन भारत में दान करने वाले अधिक थे किंतु दान प्राप्त करने वालों की संख्या बहुत ही कम थी। भारत में गाय को माता माना गया है। गाय का दूध अमृत के समान होता है। जिस घर में गाय होती है वहाँ शक्ति का भंडार होता है। यहाँ के राजा–रंक, नर–नारी नित्य मंदिरों में जाते हैं और ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त कर दृढ़ता से कर्त्तव्य पालन करते हैं। भारत में अतिथि को भगवान माना गया है। अतिथियों के आगमन से हमारे घर पवित्र हो जाते हैं। यहाँ पुरुष सदाशय हैं, उनका यश संसार में फैला रहता है, मुख पर कांति रहती है तथा वे देवताओं के समान सुशोभित होते हैं। स्त्रियाँ भी कम नहीं हैं। वे निरंतर कार्य में लगी रहती हैं। उनमें आलस्य, प्रमाद नाममात्र का भी नहीं है। साथ ही वे धीरता, सांत्वना की प्रतिमूर्ति हैं तथा शुभ करने वाली हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भारत भूमि

ब्राह्मी–स्वरूपा, जन्मदात्री, ज्ञान–गौरव–शालिनी,
प्रत्यक्ष लक्ष्मीरूपिणी, धन–धान्यपूर्णा, पालिनी,
दुर्द्धर्ष रुद्राणी स्वरूपा शत्रु–सृष्टि–लयंकरी,
वह भूमि भारतवर्ष की है भूरि भावों से भरी।।1।।

वे ही नगर, वन, शैल, नदियाँ जो कि पहले थीं यहाँ –
हैं आज भी, पर आज वैसी जान पड़ती हैं कहाँ ?
कारण कदाचित् है यही–बदले स्वयं हम आज हैं,
अनुरूप ही अपनी दशा के दीखते सब साज हैं।।2।।

भवन

चित्रित घनों से होड़ कर जो व्योम में फहरा रहे–
वे केतु उन्नत मन्दिरों के किस तरह लहरा रहे ?
इन मन्दिरों में से अधिक अब भूमितल में दब गये,
अवशिष्ट ऐसे दीखते हैं अब गये या तब गये।।3।।

जलवायु

पीयूष–सम, पीकर जिसे होता प्रसन्न शरीर है,
आलस्य–नाशक, बल–विकासक उस समय का नीर है।
है आज भी वह, किन्तु अब पड़ता न पूर्व प्रभाव है,
यह कौन जाने नीर बदला या शरीर–स्वभाव है ?।।4।।

प्रभात

क्या ही पुनीत प्रभात है, कैसी चमकती है मही;
अनुरागिणी ऊषा सभी को कर्म में रत कर रही।
यद्यपि जगाती है हमें भी देर तक प्रतिदिन वही,
पर हम अविध निद्रा–निकट सुनते कहाँ उसकी कहीं ?।।5।।

दान

सुस्नान के पीछे यथाक्रम दान की बारी हुई,
सर्वस्व तक के त्याग की सानन्द तैयारी हुई।
दानी बहुत हैं किन्तु याचक अल्प हैं उस काल में,
ऐसा नहीं जैसी कि अब प्रतिकूलता है हाल में।।6।।

गो–पालन

जो अन्य धात्री के सदृश सबको पिलाती दुग्ध हैं,
(है जो अमृत इस लोक का, जिस पर अमर भी मुग्ध हैं।)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वे धेनुएँ प्रत्येक गृह में हैं दुही जाने लगी–
यो शक्ति की नदियाँ वहाँ सर्वत्र लहराने लगीं।।7।।
घृत आदि के आधिक्य से बल–वीर्य का सु–विकास है,
क्या आजकल का–सा कहीं भी व्याधियों का वास है ?
है उस समय गो–वंश पलता, इस समय मरता वही।
क्या एक हो सकती कभी यह और वह भारत मही ?।।8।।

होमाग्नि

निर्मल पवन जिसकी शिखा को तनिक चंचल कर उठी–
होमाग्नि जलकर द्विज–गृहों में पुण्य परिमल भर उठी।
प्राची दिशा के साथ भारत–भूमि जगमग जग उठी,
आलस्य में उत्साह की–सी आग देखो, लग उठी।।9।।

देवालय

नर–नारियों का मन्दिरों में आगमन होने लगा,
दर्शन, श्रवण, कीर्त्तन, मनन से मग्न मन होने लगा।
ले ईश–चरणामृत मुदित राजा–प्रजा अति चाव से–
कर्त्तव्य दृढ़ता की विनय करने लगे समभाव से।।10।।

अतिथि–सत्कार

अपने अतिथियों से वचन जाकर गृहस्थों ने कहे –
''सम्मान्य! आप यहाँ निशा में कुशलपूर्वक तो रहे।
हमसे हुई हो चूक जो कृपया क्षमा कर दीजिए –
अनुचित न हो तो, आज भी यह गेह पावन कीजिए।।11।।

पुरुष

पुरुष–प्रवर उस काल के कैसे सदाशय हैं अहा!
संसार को उनका सुयश कैसा समुज्ज्वल कर रहा!
तन में अलौकिक कान्ति है, मन में महा सुख–शान्ति है,
देखो न, उनको देखकर होती सुरों की भ्रान्ति है! ।।12।।

स्त्रियाँ

आलस्य में अवकाश को वे व्यर्थ ही खोती नहीं,
दिन क्या, निशा में भी कभी पति से प्रथम सोती नहीं,
सीना, पिरोना, चित्रकारी जानती हैं वे सभी –
संगीत भी, पर गीत गन्दे वे नहीं गातीं कभी।।13।।
संसार–यात्रा में स्वपति की वे अटल अश्रान्ति हैं,
हैं दुःख में वे धीरता, सुख में सदा वे शान्ति हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शुभ सान्त्वना है शोक में वे, और ओषधि रोग में,
संयोग में सम्पत्ति हैं, बस हैं विपत्ति वियोग में।।14।।

शब्दार्थ

जन्मदात्री–जन्म देने वाली/ लक्ष्मीरूपिणी–धन की देवी लक्ष्मी का रूप/शैल–पर्वत/ अवशिष्ट–बचे हुए अवशेष/व्योम–आकाश/पीयूष–अमृत/अनुरागिणी–प्रेम से परिपूर्ण/ निद्रा–नीद/ सर्वस्व–सब कुछ/ धात्री–धाय माँ/ धेनुएँ–गाएँ/ घृत–घी/ व्याधियों – बीमारियों/ शिखा–चोटी/द्विज–ब्राह्मण/ ईश–ईश्वर/ गेह–घर/ प्रवर–श्रेष्ठ/ चित्रकारी–चित्रकला/अश्रान्ति–विश्राम रहित / स्वपति–अपने पति/

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतवर्ष की भूमि किससे भरी हुई है ?

   (क) घृत से (ख) भावों से ( )

   (ग) पर्वतों से (घ) नदियों से

2. यहाँ का जल कैसा है ?

   (क) अमृत के समान (ख) गरल के समान

   (ग) गर्म (घ) खारा ( )

   उत्तरमाला – (1) ख (2) क

अति लघूत्तरात्मक

1. 'ज्ञान–गौरव–शालिनी' किसके लिए कहा गया है ?
2. यहाँ की जलवायु कैसी है ?
3. जल पीकर कौन प्रसन्न होता है ?
4. दान करने की बारी कब आती है ?
5. इस लोक का अमृत क्या है ?
6. पत्नी संयोग में क्या होती है ?

लघूत्तरात्मक

1. प्राचीन समय का नीर किस प्रकार का था ?
2. घृत के आधिक्य से किसका विकास होता है ?
3. यहाँ की प्रभात वेला किस प्रकार की है ?
4. नर–नारी देवालयों में क्या करते हैं ?
5. यहाँ के पुरुष कैसे हैं ?

निबंधात्मक

1. भारत भूमि की विशेषताएँ पाठ में आए पद्धांशों के आधार पर बताइए।
2. गो–पालन के महत्व को पाठ में आए पद्धाशों के आधार पर समझाइए।
3. यहाँ के पुरुषों की विशेषताएँ बताइए।
4. निम्नलिखित पद्धाशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) अपने अतिथियों से..............................पावन कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ख) सुस्नान के पीछे ....है हाल में।

(ग) संसार–यात्रा में..विपत्ति वियोग में।

•••

यह भी जानें

हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व। जैसे – कुट्टिम, चिट्ठियाँ, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि (कुट्टिम, चिट्ठियाँ, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित नहीं।)

टिप्पणी – संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे – संयुक्त, चिह्न, विद्या, चञ्चल, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु यदि इन्हें भी उपर्युक्त नियमों के अनुसार ही लिखा जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. बावजी चतुर सिंह

लेखक परिचय

राजस्थान में कर्मशील मनुष्यों के साथ ही वीतरागी भक्तों का भी प्रमुख स्थान है। ऐसे ही एक महात्मा बावजी चतुर सिंह जी हैं। इनका जन्म वि० संवत् 1936 माघ कृष्णा चतुदर्शी (9 फरवरी 1880) को हुआ। योगीवर्य महाराज चतुरसिंह जी मेवाड़ की भक्ति परंपरा के एक परमहंस व्यक्तित्व थे। इस संत ने लोकवाणी मेवाड़ी के माध्यम से अपने अनुभूत विचारों को साहित्य द्वारा जन–जन के लिए सहज सुलभ बना कर मानव की बहुत बड़ी सेवा की। वे मेवाड़ राजपरिवार से संबंधित थे। चतुरसिंहजी की वाणी दिव्य थी क्योंकि वे दिव्यता के पोषक थे। उनका चिंतन उदात्त था क्योंकि वे अनुपम सौंदर्य के उपासक थे। उनका संबोधन आत्मीय था क्योंकि वे आत्मरूप थे। इन्होंने कुल छोटे–बड़े 18 ग्रंथों की रचना की। मेवाड़ी बोली में लिखी गई गीता पर ''गंगा–जलि'' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत दोहे 'चतुर चिन्तामणि' से उद्धृत हैं। 'चतुर चिन्तामणि' चतुरसिंह जी बावजी की प्रमुख कृतियों में से एक है। इस पोथी में चतुरसिंह जी के मेवाड़ी, हिंदी और ब्रज मिश्रित भाषा के दोहे व पद संकलित हैं। नीति और वैराग्य के संकलित दोहों में चतुर सिंह ने सामान्य लोक व्यवहार का चित्रण ललित व सुंदर सरल भाषा में किया है। वे कहते हैं कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक है परंतु उस उद्देश्य को पाने के मार्ग अलग–अलग हैं। हमें बिना मान के किसी के भी घर में पैर नहीं रखना चाहिए। मनुष्य जन्म तो सभी लेते हैं लेकिन वही मनुष्य, मनुष्य है जो भलाई का कार्य करता है। हमें हर किसी के सामने अपने मन की बात नहीं कहनी चाहिए। उपयुक्त पात्र देखकर ही मन की बात कहनी चाहिए। जिन्हें अपने लक्ष्य का पता होता है वे कहीं भी नहीं भटकते। किसी भी वस्तु की सार्थकता उसके पर्याप्त होने में है, कम या अधिक होने से उस वस्तु की सार्थकता नहीं रहती। ताँगे चलाने वाले तो चले जाते हैं किन्तु ताँगा यहीं रह जाता है, इसी प्रकार आत्मा चली जाती है शरीर यहीं छूट जाता है। कवि ने अपने दोहों में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य के साथ–साथ नीति और लोक व्यवहार को सरल उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत किया है। उदाहरणों द्वारा किसी बात को कहने की कला में बावजी सिद्धहस्त हैं।

नीति

धरम धरम सब एक है, पण वरताव अनेक।
ईश जाणणो धरम है, जींरो पंथ विवेक।।1।।
पर घर पग नी मेळणों, वना मान मनवार।
अंजन आवै देख'नै, सिंगल रो सतकार।।2।।
रेंठ फरै चरक्यो फरै, पण फरवा में फेर
वो तो वाड़ हरयौ करै, यो छूंता रो ढेर।।3।।
कारट तो केतो फरै, हरकीनै हकनाक।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जींरी व्हे वींनै कहै, हियै लिफाफो राख।।4।।
वी भटका भोगै नहीं, ठीक समझलै ठौर।
पग मेल्यां पेलां करै, गेला ऊपर गौर।।5।।
क्यूं कीसूं बोलूं कठै, कूण कई कीं वार।
ई छै वातां तोल नै, पछै बोलणो सार।।6।।
ओछो भी आछो नहीं, वत्तो करै कार।
दैणों छावै देखनै, अगनी मुजब अहार।।7।।
अपनी आण अजाणता, कईक कोरा जाय।
समझदार समझै सहज, आंख इशारा मांय।।8।।
क्षमा क्षमा सब ही करै, क्षमा न राखै कोय।
क्षमा राखिवैं तै कठिन, क्षमा राखिवौ होय।।9।।
विद्या विद्या वेल जुग, जीवन तरु लिपटात
पढिबौ ही जल सींचिबौ, सुख दुख को फल पात।।10।।

वैराग्य एवं चेतावनी

रेल दौड़ती ज्यूं घणा, रूंख दोड़ता पेख।
तन नै जातो जाण यूं, दन नै जातो देख।।11।।
गाता रोता नीकळ्या, लड़ता करता प्यार।
अणी सड़क रै ऊपरै, अब लख मनख अपार।12।।
गोखड़िया खड़िया रया, कड़िया झांकणहार।
खड़खड़िया पड़िया रया, खड़िया हाकणहार।।13।।
गेला नै जातो कहै, जावै आप अजाण।
गेला नै रवै नहीं, गेला री पैछाण।।14।।
धन दारा रै मांयनै, मती जमारो खोय।
वणी अणी रा वगत में, कूण कणी रा होय।।15।।

•••

शब्दार्थ

वरताव–व्यवहार/ ईश–ईश्वर/ पंथ–रास्ता, मार्ग/ पर–दूसरे/ मेळणों–रखना/ मनवार–सत्कार/ अंजन–इंजन/ सिंगल–सिग्नल/ रैंठ–रहठ/ चरक्यो–चरखा/ पण –परंतु/ फरबा–फिरने/ हर्‌यो–हरा–भरा/ छूंता–छिलका/ कारट–पोस्टकार्ड/ हकनाक–गोपनीय/ हियै–हृदय/ कठै–कहाँ/ बोलणो–बोलना/ वातां–बातें/ ठौर – स्थान/ पग–पैर/ मेल्यां–रखना/ गेला–रास्ता/ गौर–विचार/ ओछो–कम/ आछो – अच्छा/ अगनी–अग्नि/ अहार–आहार/ कईक–कोई–कोई/ कोरा–व्यर्थ/ वेल–बेल, लता/ तरु–वृक्ष, पेड़/ घणा–बहुत/ रूंख–पेड़/ दन–दिवस, दिन/ जातो–जाता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हुआ/ जाण–पहचान, समझ/ गोखड़िया–गोखड़े/ खड़खड़िया–ताँगे/ हाकणहार – हाँकने वाले/ अजाण–अज्ञानी/ गेला–मूर्ख

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दूसरों के घर बिना मान–मनुहार के जाने पर क्या होता है ?
   (क) स्वागत होता है (ख) अपमान होता है
   (ग) नाच–गाना होता है (घ) सिग्नल मिलता है ( )
2. रहट चलता है तब क्या होता है –
   (क) खेतों को पानी मिलता है (ख) छिलकों का ढेर होता है
   (ग) अकाल पड़ता है (घ) गन्ने का रस मिलता है ( )

उत्तरमाला– (1) ख (2) क

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चतुरसिंह जी के अनुसार धर्म क्या है ?
2. सिंगल का शब्दार्थ क्या है ?
3. छिलकों का ढेर कौन करता है ?
4. बातों को गोपनीय कौन रखता है ?
5. कैसा व्यक्ति नहीं भटकता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रहट और चरखे में क्या अंतर है ?
2. बिना मान के दूसरों के घर पैर क्यों नहीं रखना चाहिए ?
3. इंजन सिग्नल की बात क्यों मानता है ?
4. 'गोखड़िया खड़िया' वाले पद में किस बात की ओर संकेत है ?
5. मूर्ख व्यक्ति की बात मानने से क्या होता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) पर घर पग..................................सिंगल रो सतकार।
   (ख) रैंठ फरै................................छूंता रो ढेर।
   (ग) कारट तो केता.............................हियै लिफाफो राख।
   (घ) ओछो भी ....मुजब अहार।
2. ''बावजी चतुरसिंह जी वाणी दिव्य थी।'' उक्त पंक्ति के आलोक में चतुरसिंह जी के नीति और वैराग्य संबंधी विचारों की समीक्षा कीजिए।

•••

यह भी जानें

कारक चिह्न या परसर्ग

(क) हिंदी के कारक चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ। जैसे – राम ने, राम को, राम से, स्त्री का, स्त्री से, सेवा में आदि। सर्वनाम शब्दों में ये

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे – तूने, आपने, तुमसे, उसने, उसको, उससे, उसपर, मुझको, मुझसे आदि। (मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं।)

(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो कारक चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए। जैसे – उसके लिए, इसमें से।

(ग) सर्वनाम और कारक चिह्न के बीच 'ही', 'तक' आदि निपात हों तो कारक चिह्न को पृथक लिखा जाए। जैसे – आप ही के लिए, मुझ तक को।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. सुमित्रानंदन पंत

कवि परिचय

पंत जी प्रकृति की क्रोड़ में पलने वाले अत्यंत सुकुमार कवि हैं। नवीन युग में प्रवाहित प्रमुख प्रवृत्तियों एवं विचार धाराओं की रूप रेखाएँ स्पष्ट या अस्पष्ट स्वरूप में उनके काव्य में मिल जाएँगी। प्रकृति निरीक्षण से उन्हें कविता की प्रेरणा मिली। उनकी जन्म भूमि कूर्मांचल प्रदेश की सौंदर्यात्मक अनुभूति ने उनकी सारी भावनाओं को रंग दिया। 'वीणा' से 'ग्राम्या' तक की सभी रचनाओं में यह विशेषता किसी न किसी रूप में वर्तमान है; पंत जी के भीतर विश्व और जीवन के प्रति एक गंभीर आश्चर्य की भावना भी इसी कारण आ गई। उनकी कल्पना जन–भीरु हो गई। प्रकृति को उन्होंने सदैव ही सजीव सत्ता रखने वाली नारी के रूप में देखा है। 'वीणा' और 'पल्लव' उनकी समस्त रचनाओं में विशेषतः प्राकृतिक साहचर्य–काल की कृतियाँ हैं। भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर वे 'पल्लव' से 'गुंजन' में सुन्दरम् से शिवम् की ओर अधिक झुक गए। 'गुंजन' तथा 'ज्योत्स्ना' में कल्पना अधिक सूक्ष्म तथा भावात्मक हो गए।

छायावादी कवियों में पंत जी ऐसे कवि हैं जिन पर पाश्चात्य प्रभाव बहुत अंश तक पड़ा। वर्डस्वर्थ, कीट्स, शेली तथा टेनिसन आदि अंग्रेजी के कवि तथा रवींद्र इन सबके प्रभाव को उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। 'युगान्त', 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' इन तीनों में उनकी विचारधारा का मोड़ नामकरण से ही प्रतीत होता है। जीवन की समस्याओं के प्रति जागरूक होकर जो कविताएँ उनकी लेखनी से उद्धृत हुईं वे सब इन संग्रहों में संकलित हैं।

पंत जी की भाषा में कोमलता है। उसमें कलात्मकता का आग्रह न होने पर भी सौंदर्य है। शब्द–ध्वनि की परख उन्हें चित्रों में झंकार उत्पन्न करने में सदा सहायता देती रहती है। खड़ी बोली को वे ब्रजभाषा की–सी मधुरता अपने शब्द चयन की सजगता द्वारा प्रदान करते हैं। विचार पक्ष को वे कलापक्ष से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं इसी कारण वे इस शब्द कौशल की ओर आगे चलकर अधिक ध्यान न दे सके।

पाठ परिचय

प्रस्तुत तीन कविताओं में प्रथम कविता में कवि बादलों से पृथ्वी पर बरसने की प्रार्थना करता है। वर्षा का जल भूमि में प्राणों का संचार कर देता है। वह नव जीवन का संदेश देता है। बारिश से धरती उपजाऊ होती है। यह वृक्षों, पत्तों और तिनकों में नई स्फूर्ति पैदा कर देता है। प्राणों को हर्षित करने वाला जल अमर धन के समान है। कवि प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे जलद! तुम दिशा–दिशाओं में और सारे संसार पर बरसो।

द्वितीय कविता में कवि ने संध्या काल का मनोहारी वर्णन किया है। यहाँ संध्या को सुंदरी बताया है। संध्याकाल की सुषमा एवं लालिमा का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया गया है। आकाश से उतरने वाली संध्या से वातावरण सुनहला हो जाता है। वातावरण में एक मीठा मौन व्याप्त है। संध्या को सुंदरी की उपमा देते हुए कवि कहता है कि संध्या भावों में भर कर मौन है। कवि पूछता है कि तुम दिन भर कहाँ रहती हो ? संध्या रूपी सुंदरी के गाल लाल–लाल हो रहे हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'द्रुत झरो' कविता में कवि प्राचीन सड़ी–गली परंपराओं के नष्ट होने की बात करता है। कवि नव युग चाहता है जहाँ अंधविश्वास और वैमनस्य से रहित संसार हो। कवि चाहता है कि पुराने पत्ते शीघ्र गिर जाएँ और नए पत्ते आ जाएँ। निष्प्राण पुराना युग जाए और आशापूर्ण नव युग आ जाए। जीवन में फिर से नई हरियाली आए। कवि आशा करता है कि विश्व में वापस चेतना आएगी और फिर से नवयुग की प्याली भरेगी।

•••

प्रार्थना

जग के उर्वर आँगन में,
बरसो ज्योतिर्मय जीवन।
बरसो लघु लघु तृण तरु पर,
हे चिर–अव्यय चिर–नूतन!
बरसो कुसुमों के मधुवन,
प्राणों के अमर प्रणय धन,
स्मिति स्वप्न अधर पलकों में,
उर अंगों में सुख यौवन।
छू–छू जग के मृत रजकण
कर दो तृण तरु में चेतन,
मृन्मरण बाँध दो जग का,
दे प्राणो का आलिंगन!
बरसो सुख बन सुखमा बन,
बरसो जग–जीवन के घन!
दिशि–दिशि में औ पल–पल में
बरसो संसृति के सावन!

सन्ध्या

कौन, तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज छाया छवि में आप,
सुनहला फैला केश–कलाप,
मधुर, मंथर मृदु, मौन!
मूँद अधरों में मधुपालाप,
पलक में निमिष, पदों में चाप,
भाव संकुल बंकिम भ्रू–चाप,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मौन केवल तुम मौन!
ग्रीव तिर्यक्, चम्पक द्युति गात,
नयन मुकुलित नतमुख जलजात,
देह छबि छाया में दिन रात,
कहाँ रहती तुम कौन ?
अनिल पुलकित स्वर्णाचल लोल,
मधुर नूपुर–ध्वनि खग–कुल रोल,
सीप से जलदों के पर खोल,
उड़ रही नभ में मौन!
लाज से अरुण–अरुण सुकपोल,
मदिर अधरों की सुरा अमोल–
बने पावस घन स्वर्ण–हिंडोल,
कहो एकाकिनि कौन ?
मधुर, मंथर तुम मौन।

द्रुत झरो

द्रुत झरो जगत के जीर्णपत्र
हे स्रस्त ध्वस्त! हे शुष्क शीर्ण!
हिमताप पीत, मधुवात भीत
तुम वीत राग जड़ पुराचीन!!

निष्प्राण विगत युग! मृत विहंग!
जग नीड़ शब्द और श्वासहीन
च्युत अस्त व्यस्त पंखों से तुम,
झर–झर अनन्त में हो विलीन!

कंकाल जाल जग में फैले
फिर नवल रुधिर–पल्लव लाली!
प्राणों के मर्मर से मुखरित
जीवन की मांसल हरियाली!

मंजरित विश्व में यौवन के
जगकर जग का पिक, मतवाली
निज अमर प्रणय स्वर मदिरा से
भर दे फिर नवयुग की प्याली।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ –

उर्वर–उपजाऊ/ तरु–वृक्ष/ अव्यय–व्यय न होने वाला, विकार रहित/ उर–हृदय/ मृन्मरण–मृत्यु का मरण/ संस्सृति–संसार/ रूपसि–सुंदर स्त्री/ व्योम–आकाश/ छवि –आकृति/ केश–कलाप–केश विन्यास/ मर्मर–पत्तों की खड़कन/ मंजरित–पुष्पित/ मंथर–धीरे/ अधर–होठ/ बंकिम–टेढ़ा/ मदिर–नशीला/ तिर्यक्–तिरछा/ गात–शरीर/ द्रुत–शीघ्र/ जीर्ण–पुराने, जर्जर / स्रस्त–गिरा हुआ/ पीत–पीला/ वीतराग–सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति रहित/ पुराचीन–प्राचीन/ विहंग–पक्षी/ च्युत–भ्रष्ट, अलग/ रुधिर पल्लव–रक्त वर्ण की कोंपलें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आँगन को उर्वर कौन करता है ?

(क) खाद (ख) केंचुए

(ग) वर्षा का जल (घ) किसान ( )

2. कवि ने संध्या की तुलना किससे की है ?

(क) सुंदर स्त्री से (ख) सुंदर पुरुष से

(ग) लालिमा से (घ) नुपुर–ध्वनि से ( )

उत्तरमाला–(1) ग (2) क

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भूमि को उर्वर कौन बनाता है ?
2. व्योम से चुपचाप कौन उतर रही है ?
3. लज्जा से किसके गाल लाल–लाल हो रहे हैं ?
4. श्वासहीन कौन–सा युग है ?
5. मतवाली कौन है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कवि का जगत के जीर्णपत्र के क्या अभिप्राय है ?
2. विगत युग को निष्प्राण क्यों कहा गया है ?
3. जीवन में मांसल हरियाली कब आएगी ?
4. कवि प्याली को किससे भरने की बात कहता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. कवि ने बादलों से क्या प्रार्थना की है ?
2. पठित कविता के आधार पर संध्या का वर्णन कीजिए।
3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) द्रुत झरो जगत.....................पुराचीन!!

(ख) अनिल पुलकित..........नभ में मौन!

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यह भी जानें

संयुक्त क्रिया पद

संयुक्त क्रिया पदों में सभी अंगीभूत क्रियाएँ पृथक्–पृथक् लिखी जाएँ। जैसे– पढ़ा करता है, आ सकता है, जाया करता है, खाया करता है, जा सकता है, कर सकता है, किया करता था, पढ़ा करता था, खेला करेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. नंदलाल जोशी

कवि परिचय

कविवर नंदलाल जोशी का जन्म बाड़मेर में हुआ। पढ़ने में अत्यंत मेधावी, सबसे आगे रहने वाले नंदलाल जोशी ने कक्षा 11 तक की शिक्षा बाड़मेर में प्राप्त की, तदुपरान्त उच्च शिक्षा हेतु जोधपुर आ गए। जोधपुर के एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज से आपने सन् 1968 में माइनिंग में बी.ई. की उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की। उच्च शिक्षित एवं स्वर्ण पदक विजेता होने के कारण आपको कई बड़ी कंपनियों ने उच्च पदों पर नौकरी के प्रस्ताव दिए। आपने माँ भारती की सेवा करने का मार्ग चुना, न कि नौकरी का। आप अविवाहित रहकर देश सेवा में लीन हैं। आज भी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवार्थ लगा रखा है।

विज्ञान के विद्यार्थी होते हुए भी आप में काव्य प्रतिभा जन्म से ही थी। आपकी पूज्य माताजी ने कृष्ण लीला के पदों को गा–गाकर आपकी बीज रूप काव्य प्रतिभा को पुष्पित एवं पल्लवित किया। आपने अब तक 211 राष्ट्र प्रेम के गीत तथा 161 ईश भक्ति के भजनों की रचना की और उन्हें अपना स्वर दिया है। आपकी ये सब रचनाएँ 'प्रेरणा पुष्पांजलि' एवं 'भक्ति हिलौरें' नामक पुस्तकों में प्रकाशित हैं। आपकी रचनाएँ जहाँ ईश भक्ति की गंगा प्रवाहित करती हैं, वहीं राष्ट्र प्रेम का ज्वार उठाती हैं। योग गुरु बाबा रामदेव आपकी रचना ''मन मस्त फकीरी धारी है, अब एक ही धुन जय जय भारत'' को राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर गा–गाकर लोगों को मस्त कर रहे हैं।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ में श्री नंदलाल जोशी के दो गीत लिए गए हैं। हिंदी साहित्य में गीत लेखन की परंपरा है। गीत में नाद और भाव का प्राधान्य होता है। भक्ति और प्रेम भाव को लेकर अनेक गीतों की रचना होती रही है। सोहनलाल द्विवेदी के राष्ट्रभक्ति गीत प्रसिद्ध हैं। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में भी विविध देशभक्ति गीतों का सहज समावेश है। भक्ति जब राष्ट्र के प्रति हो, प्रेम का केंद्र बिंदु मातृभूमि हो तो ऐसे गीतों की सृष्टि होती है।

प्रथम गीत 'देश उठेगा' में भारत को स्वावलंबी और स्वाभिमानी बनाने की न केवल कामना है, बल्कि इसी मार्ग से भारत विश्व में अग्रणी हो सकता है। कवि देशवासियों को आह्वान करता है कि केवल अधिकारों के प्रति जागरुक होने से काम नहीं चलने वाला, हमें अपने कर्तव्यों को भी नहीं भूलना चाहिए। द्वितीय गीत 'गौरवशाली परम्परा' में कवि ने भारत के अतीत गौरव का चित्रण किया है। प्राचीन काल में हम ज्ञान–विज्ञान में विश्व में सिरमौर थे, तभी तो यहाँ विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति पल्लवित–पुष्पित हुई।

देश उठेगा

देश उठेगा अपने पैरों निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर जीयें सुख सम्मान से।।
देश उठेगा ।।ध्रु०।।
परावलम्बी देश जगत में, कभी न यश पा सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मृग तृष्णा में मत भटको, छीना सब कुछ जा सकता है।।
मायावी संसार चक्र में कदम बढ़ाओ ध्यान से।
अपने साधन नहीं बढ़ेंगे औरों के गुणगान से.....।।1।।
इसी देश में आदिकाल से अन्न, रत्न, भण्डार रहा।
सारे जग को दृष्टि देता, परम ज्ञान आगार रहा।।
आलोकित अपने वैभव से, अपने ही विज्ञान से।
विविध विधाएँ फैली भू पर अपने हिन्दुस्तान से......।।2।।
अथक किया था श्रम अनगिन जीवन अर्पित निर्माण में।
मर्यादित उपभोग हमारा, पवित्रता हर प्राण में।।
परिपूरक परिपूरण सृष्टि, चलती ईश विधान से।
अपनी नव रचनाएँ होंगी, अपनी ही पहचान से.....।।3।।
आज देश की प्रज्ञा भटकी, अपनों से हम टूट रहे।
क्षुद्र भावना स्वार्थ जगा है, श्रेष्ठ तत्व सब छूट रहे।।
धारा 'स्व' की पुष्ट करेंगे समरस अमृत पान से।
कर संकल्प गरज कर बोले, भारत स्वाभिमान से.....।।4।।
केवल सुविधा अधिकारों की भाषा अब हम नहीं कहें।
हों कर्त्तव्य परायण सारे, अवसर सबको सुलभ रहें।।
माँ धरती को मुक्त करेंगे, दुःख दुविधा अपमान से।
जय जय अम्बर में गूंजेगा सभी दिशा उत्थान से.....।।5।।
देश विघातक षड्यन्त्रों के जाल बिछे हैं सावधान।
इस माटी को प्रेम करे जो, बस उनको ही अपना मान।।
कोई ऊपर नहीं रहेगा, भारत के संविधान से।
देश द्रोहियों को कुचलेंगे, देश भक्त की शान से.....।।6।।
देश उठेगा अपने पैरों निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर जीयें सुख सम्मान से।।

गौरवशाली परम्परा

आदिकाल से अखिल विश्व को, देती जीवन यही धरा।
गौरवशाली परम्परा....
जीवन की आदर्श चिन्तना, परिपूरण परिपक्व विचार
कालातीत है दर्शन अपना, आत्मवत् सब सृष्टि निहार
सारा जग परिवार हमारा, पूज्या माता वसुन्धरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।1।।
परमेश्वर के रूप अनेकों, अपने अपने मार्ग विशेष
श्रद्धा भक्ति अक्षय निष्ठा, नहीं किसी से राग न द्वेष

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विविध पंथ वैशिष्ट्य सुवासित, एक सत्य का भाव भरा
गौरवशाली परम्परा.... ||2||
शील सत्य संयम मर्यादा, शुद्ध विशुद्ध रहा व्यवहार
करुणा प्रेम सहज सा छलका, सेवा तप ही जीवन सार
अमर तत्व के अमर पुजारी, विष पीकर भी नहीं मरा
गौरवशाली परम्परा.... ||3||
सघन ध्यान एकाग्र ज्योति से, किये गहनतम अनुसंधान
कला शिल्प संगीत रसायन, गणित अणु आयुर्विज्ञान
सभी विधाएँ आलोकित कर, महिमामय भूलोक वरा
गौरवशाली परम्परा.... ||4||
शौर्य पराक्रम अतुल तेज से, वीरोचित आया भूडोल
आयुध सज्जित अगणित योद्धा, नेत्र तीसरा फिर से खोल
शीश कटा पर देह लड़ी थी, स्वयं काल भी यहीं डरा
गौरवशाली परम्परा.... ||5||
आत्म चेतना नव–आभा ले, फिर से भारत राष्ट्र खड़ा
विराट् शक्ति प्रगटे गरजे, दुष्ट दलन हो कदम कड़ा
तुमुल घोष जयनाद करेगा, अपनाओ स्वधर्म जरा
गौरवशाली परम्परा.... ||6||

•••

शब्दार्थ

परावलम्बी–दूसरों पर आश्रित/ आगार–भंडार/ आलोकित–प्रकाशित/ क्षुद्र–छोटा, तुच्छ/ कालातीत–काल से परे/ सुवासित–सुगंधित/ आयुध–अस्त्र–शस्त्र/ तुमुल–उच्च स्वर में।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'शील' का शाब्दिक अर्थ है –
   (क) ज्ञान (ख) गुण
   (ग) स्वभाव (घ) चरित्र ( )
2. मर्यादित का विलोम शब्द है –
   (क) संयमित (ख) स्वतंत्र
   (ग) उच्छृंखल (घ) परतंत्र ( )

उत्तरमाला – (1) घ (2) ग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. किस प्रकार का देश यश प्राप्त नहीं कर सकता ?
2. हमारा उपभोग किस प्रकार का था ?
3. कवि ने किस प्रकार के लोगों को अपना मानने को कहा है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. ''विष पीकर भी नहीं मरा'' पंक्ति में किस पौराणिक घटना की ओर संकेत किया गया है?
5. गहनतम अनुसंधान के लिए क्या आवश्यक है ?

लघूत्तरात्मक

1. प्राचीन भारत का निर्माण किस प्रकार के पुरुषार्थ से संभव हुआ ?
2. 'ईश विधान से संचालित सृष्टि' से क्या आशय है ?
3. ''अपने–अपने मार्ग विशेष'' में भारत की कौनसी परंपरा का बोध होता है ?
4. 'कालातीत दर्शन' से क्या आशय है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. 'नेत्र तीसरा फिर से खोल' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'अपनी नव रचनाएँ होंगी, अपनी ही पहचान से।' पंक्ति के माध्यम से भारत की समृद्धि के रहस्य पर प्रकाश डालिए।
2. 'मायावी संसार चक्र में, कदम बढ़ाओ ध्यान से' पंक्ति के माध्यम से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. अधिकार और कर्तव्यों के समन्वय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'गौरवशाली परम्परा' गीत में भारत की किन–किन परंपराओं का उल्लेख हुआ है ? विस्तार से बताइए।

•••

यह भी जानें

योजक चिह्न (हाइफन –)

(क) योजक चिह्न (हाइफन) का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

(ख) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए। जैसे – राम–लक्ष्मण, शिव–पार्वती, चाल–चलन, हँसी–मज़ाक, लेन–देन, पढ़ना–लिखना, खाना–पीना, खेलना–कूदना आदि।

(ग) सा, से, सी आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए। जैसे – तुम–सा, चाकू–से तीखे।

(घ) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं। जैसे – भू–तत्व। सामान्यतः तत्पुरुष समास में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है। जैसे – राजराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

(ङ) इसी तरह यदि 'अ–नख' (बिना नख का) समस्त पद में हाइफन न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ–नति (नम्रता का अभाव), अनति (थोड़ा), अ–परस (जिसे किसी ने न छुआ हो), अपसर (एक चर्म रोग), भू–तत्व (पृथ्वी तत्व), भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न–भिन्न शब्द हैं।

(च) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे – द्वि–अक्षर न कि द्व्यक्षर; द्वि–अर्थक न कि द्व्यर्थक, त्रि–अक्षर न कि त्र्यक्षर आदि।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. काल–चक्र

• विद्या निवास मिश्र

लेखक परिचय

हिंदी की ललित निबंधों की परंपरा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाले कुशल शिल्पी पंडित विद्यानिवास मिश्र का जन्म 28 जनवरी, सन् 1926 में पकडडीहा, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। 1945 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर एवं डाक्टरेट की उपाधि लेने के बाद विद्यानिवास मिश्र ने अनेक वर्षों तक आगरा, गोरखपुर, कैलिफोर्निया और वाशिंगटन विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। वे देश के प्रतिष्ठित 'संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय' एवं 'काशी विद्यापीठ' के कुलपति भी रहे। इसके बाद अनेक वर्षों तक वे आकाशवाणी और उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग में कार्यरत रहे।

विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों की शुरूआत सन् 1956 से होती है परंतु आपका पहला निबंध संग्रह 1953 में 'छितवन की छांह' प्रकाश में आया। उन्होंने हिंदी जगत को ललित निबंध परंपरा से अवगत कराया। 'तुम चन्दन हम पानी' शीर्षक से जो निबंध 1957 में प्रकाशित हुए, उनमें संस्कृत साहित्य के संदर्भ का प्रयोग अधिक हो गया और पांडित्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति के कारण दब गया, जो आपकी पहली दो रचनाओं में मिलता था। तीसरे निबंध संग्रह 'आँगन का पंछी और बनजारा मन' में परिवर्तन आया। हिंदी साहित्य के सर्जक विद्यानिवास मिश्र ने साहित्य की ललित निबंध की विधा को नए आयाम दिए। हिंदी में ललित निबंध की विधा की शुरूआत प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट ने की थी, किंतु इसे ललित निबंधों का पूर्वाभास कहना ही उचित होगा। ललित निबंध की विधा के लोकप्रिय नामों की बात करें तो हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र एवं कुबेरनाथ राय आदि चर्चित नाम रहे।

विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों में जीवन दर्शन, संस्कृति, परंपरा और प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का तालमेल मिलता है। 'हिन्दी की शब्द संपदा', 'हिन्दी और हम', 'हिन्दीमय जीवन और प्रौढ़ों का शब्द संसार' जैसी उनकी पुस्तकों ने हिंदी की सम्प्रेषणीयता के दायरे को विस्तृत किया। तुलसीदास और सूरदास समेत भारतेंदु हरिश्चंद्र, अज्ञेय, कबीर, रसखान, रैदास, रहीम और राहुल सांकृत्यायन की रचनाओं को संपादित कर उन्होंने हिंदी के साहित्य को विपुलता प्रदान की। विद्यानिवास मिश्र को भारत सरकार ने 'पद्मश्री' और 'पद्मभूषण' से भी सम्मानित किया। इन्हें राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया।

पाठ–परिचय

पं. विद्यानिवास मिश्र ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की ललित, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सृजनात्मक परंपरा को आधुनिक विस्तार दिया है। इनमें लोक संवेदना और लोक हृदय की पकड़ बड़ी मर्मस्पर्शी है। पश्चिमी संस्कृति का नकली अनुकरण और आज के मानव का खोखलापन मिश्र जी के निबंधों में दर्द बनकर उभरता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिंदी के मूर्धन्य विद्वान, साहित्यकार श्री विद्यानिवास मिश्र की प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दी शब्द सम्पदा' से लिया गया यह पाठ हमें अनेक अर्थों में भारतीय परिवेश से जोड़ता है। पाश्चात्य प्रभाव से हम शनैः शनैः अपने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले बहुप्रचलित शब्द, शब्द समूह, वाक्यों, मुहावरों को भी विस्तृत करते जा रहे हैं, अर्थात् हम अपने अतीत, अपनी परंपराओं को संजोए ज्ञान से कटते जा रहे हैं। 'हिन्दी शब्द सम्पदा' में मिश्र जी ने ऐसे ही शब्दों को मानो पुनर्जीवन प्रदान किया है और इतने सुंदर, प्रभावी ढंग से कि वह अत्यंत रोचक बन पड़ा है। 'काल–चक्र' में प्रयुक्त शब्द प्रायः अभी भी ग्रामों में प्रचलित हैं और दैनिक जीवन में प्रयोग होते हैं। भारतीय काल गणना संसार में प्रचलित अन्य सभी काल गणनाओं की तुलना में सर्वाधिक शुद्ध, वैज्ञानिक मानी जाती है। नगरीय क्षेत्रों में चैत्र, वैशाख, मलमास, दुपहरी, तिपहरी आदि शब्द कठिन लगते हैं किंतु आज भी अनपढ़ ग्रामीण इनका अर्थ जानता है और उसके अनुसार ही अपना जीवन क्रम निर्धारण करता है। 'काल–चक्र' के माध्यम से ओर जहाँ हमारी हिंदी शब्द संपदा का विकास होगा वहीं काल–गणना के भारतीय वैज्ञानिक स्वरूप से भी हमारा परिचय होगा।

मूल पाठ

काल मृत्यु है, पर काल–चक्र जीवन है। हमारे चिंतन में ठहरे हुए काल की इसीलिए बड़ी उपेक्षा है, पर गतिशील काल–चक्र की बड़ी महिमा है। संवत्सर को यज्ञरूप कहा गया है, जीवन को संवत्सर के रूप में देखा गया है, वसंत को यौवन के रूप में और शिशिर को बुढ़ापे के रूप में देखा गया है। हमारा ऐतिहासिक बोध जितना ही सपाट है, प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक ये विभाजन जितने ही कुंठित हैं, उतने ही काल–चक्र के सूक्ष्म विभाजन धारदार।

भारतीय काल–गणना ब्रह्मा के परार्द्ध से शुरू होती है क्योंकि सृष्टि का चक्र ब्रह्मा का अहोरात्र माना जाता है, फिर कल्प आता है, १४ मन्वन्तर का एक कल्प होता है। एक मन्वन्तर ७१ चौकड़ी (युग चतुष्टयी) का होता है और उसमें इंद्र, मनु, सप्तर्षि ये सभी क्रम में बदलते रहते हैं। एक चौकड़ी का अर्थ है पूरा कृतयुग (सत्वयुग, सतयुग) त्रेतायुग, द्वापर और कलि युग का चक्कर, हर युग के चार चरण होते हैं। वर्ष–गणना भी ६0 वर्षों के चक्कर के आधार पर होती है, प्रत्येक संवत्सर के प्रवेश का दिन होता है। वैसे सन् संवत् भी चलते हैं, विक्रम संवत्, शक या साके (जिसे राष्ट्रीय संवत् भी माना गया है) ईस्वी सन्, हिजरी और फसली प्रचलित है, हिंदुओं के धार्मिक कार्यों में विक्रम और शक का ही व्यवहार है। मास–गणना भी चंद्रमास और सौरमास दो आधारों पर होती है, चंद्रमास कृष्णपक्ष (बदी) की प्रतिप्रदा (पडिवा) से शुरू होती है और शुक्लपक्ष (सुदि < शुक्ल दिन, बदि < बहुल दिन) की पूर्णिमा (पूनों) तक गिना जाता है, पहले यह मास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होकर कृष्णपक्ष की अमावस्या (अमावस, मावस) तक गिना जाता था। इसीलिए पूर्णिमा को १५ तिथि और अमावस्या को ३0 वीं तिथि कहा जाता है। चंद्रमा के ही संचार के अनुसार तिथि गणना होती है, वैसे दिन एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक ही होता है, जो तिथि सूर्योदय के समय रहती है उसे उदय तिथि कहते हैं, जो तिथि एक सूर्योदय के बाद शुरू होकर दूसरे सूर्योदय के पहले ही समाप्त हो जाती है, उसे क्षय तिथि कहते हैं और जो तिथि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संध्याकाल में रहती है उसे प्रदोषा या प्रदोषाव्यापिनी, जो निशीथकाल में रहती है, उसे निशीथव्यापिनी कहा जाता है। तिथि का महत्त्व व्रत–उपवास के लिए है। व्रत की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ एकादशी, त्रयोदशी (प्रदोषव्रत, तेरस) चतुर्थी (चौथ), तृतीया (तीज), पंचमी (पचइ), षष्ठी (छट्ट) और पूर्णिमा (पूनों) है। कुछ एकादशियाँ प्रसिद्ध हैं, देवोत्थान (डिठवन) कार्तिक सुदि की एकादशी), भीमसेनी (जेठ सुदि की) हरिशयनी (अषाढ़ सुदि की), कुछ चौथ प्रसिद्ध है। गणेश चतुर्थी (भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी) कुछ पंचमी भी जैसे बसंत पंचमी, नागपंचमी (सावन सुदि ५), पूर्णिमा कार्तिक पूस और वैसाख की अमावस माघ की स्नान के पर्व के रूप में प्रसिद्ध हैं।

सौरमास सूर्य के राशि–संक्रमण के आधार पर है। मेश संक्रांति से वर्ष शुरू होता है। उस दिन सतु आनि का पर्व पूरब में होता है, वर्षारम्भ पंजाब और बंगाल में मनाया जाता है। मकर की सक्रान्ति से उत्तरायण शुरू होता है। उन दिन पोंगल और खिचड़ी के पर्व होते हैं। सौरमास के साथ आने के लिए ३५ चन्द्रमासों के बाद लगभग एक अधिमास (मलमास, लोंद आता है, उस वर्ष को अधिकवर्ष या लोंद का साल कहते हैं।)

दिन चौबीस घंटों या ६0 घटियों का होता है। ३ घण्टे या साढ़े सात घड़ियों का (साधारण व्यवहार में ८ घटी का) एक प्रहर–पहर होता है, उस समय गजर बजता था इसलिए उतने समय को गजर भी कहते हैं, घंटे का हिसाब अंग्रेजी है अर्थात् १२ बजे रात से, पर घड़ी का सूर्योदय से है। गाँवों में समय का विभाजन बड़ा बारीक है। सूर्योदय के लगभग एक डेढ़ घण्टे पहले से आकाश की गतिविधि देखकर समय का विभाजन किया गया है; सबसे पहले सुकवा (शुक्रतारा) उगता है, वह समय सुकवाउगानी कहा जाता है, उसके बाद भिनसार हो जाता है, अभी मुँह–अँधेरा बना रहता है, चिड़ियाँ बोलने लगती हैं, फिर पूरब की ओर कुछ उजास दिखने लगती है, और तब भोर हो जाती है, प्रभात या उजेला हो जाता है, इसके बाद लाही लगती है (लाली की आभा दीखती है), सवेरा हुआ, प्रत्यूषवेला आ गयी, तब पौ फटती है, सुबह हो जाती है, सूर्योदय हो जाता है, सवेरे से पहले तड़के सुबह कहा जाता है और सूर्योदय से पूर्व की वेला को ब्रह्मवेला या उषःकाल कहा जाता है। सूर्योदय (दिन उगने) के बाद जब सूर्य ऊपर चढ़ जाता है तो दिन चढ़ानी वेला कहते हैं और एक पहर बीतने पर दुपहरी लग जाती है। बारह बजते–बजते या जब सूर्य ठीक ऊपर आ जाता है तो दुपहरी खड़ी हो जाती है, मध्याह्न, पूर्वाह्न और अपराह्न ये शब्द ए.एम. और पी.एम. के कारण बहुत प्रचलित होने लगे हैं पर ६ बजे शाम ही कहना हिन्दी में उचित मालूम होता है। दुपहरी ढलते ही तिजहरी (तिपहरी, सिपहरी) शुरू हो जाती है। दिन का चौथा पहर दिनढलानी वेला है और साँझ या सँझा या संध्या की भी प्रक्रिया कम लंबी नहीं है। गोधूलि लगती है, फिर साँझ को गेरूई लाली छा जाती है, वेला डूबने का समय आ जाता है, वेला झुकुमुक करते–करते डूब जाती है, सूर्य छिप जाता है और झुटपुटा होने लगता है, धीरे–धीरे ध्वांत या धुंध फैलने लगती है और दीपावली की जून आ जाती है, इसके बाद एकाध तारा दीखता है और एक घड़ी रात हो जाती है। रात क्रमशः गहराती चली जाती है; दूसरे शब्दों में रात भीगने लगती है। पहले पहर के बाद अमूमन गाँवों में सोता पड़ जाता है। सूतापड़ानी के जून के बाद दीये गुल होने लगते हैं, रात साँय–साँय करने लगती है, एकाध लोग चौपाल पर अलाव तापने जमे रहते हैं या प्रधान जी के दरवाजे पर लालटेन भुकभुकाती रहती है। आधी रात या निशीथ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वेला का बोध तंत्रमंत्र और चोरी जगाने वालों का ही अधिक होता है। हाँ, चंद्रोदय का समय व्रत–उपवास वालों के लिए महत्त्वपूर्ण है। समुद्र के किनारे के मछुओं के लिए भी। पर सामान्य जीवन में लगभग ६ बजे रात के बाद रात गिर जाती है तो लोगों के व्यापार समाप्त हो जाते हैं।

घंटे का विभाजन मिनट सैकंड में और घड़ी या दण्ड का पल–विपल में जैसे सूक्ष्म समय–विभाजन की मूर्त संज्ञाएँ भी कम नहीं है। पलक भाँजते, चुटकी बजाते, लहमें भर में, क्षण भर में, ये सभी निमिष, पल के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होते हैं। चार घड़ी का मुहूर्त चौघड़िया कहा जाता है। अच्छा दिन सुदिन कहा जाता है, विवाह आदि उत्सव के दिन शुभ दिन या सुदिन ही कहे जाते हैं, मृत्यु या निधन की तिथि पुण्यतिथि कही जाती है। अच्छा मुहूर्त हो तो साइत का दिन और यदि यात्रा ठीक न उतरी या कार्य सफल न हुआ तो वह दिन कुसाइत हो जाता है।

ऋतुचक्र का महत्त्व भी कम नहीं है। वैसे वर्ष का पहला चौमासा गर्मी, दूसरा चौमासा वर्षा या पावस कहा जाता है। उसी को कभी–कभी चौमासा या चातुर्मास भी कहा जाता है। अंतिम चौमासा जाड़ा या शीतकाल कहा जाता है, पर वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ये छः ऋतुनाम भी प्रचलित हैं। खेती के काम में इनसे भी अधिक प्रचलित है सूर्यनक्षत्रों के नाम। जेठ में सूर्य का रोहिन नक्षत्र में संचार होता है तभी से खेतों का कार्य शुरू हो जाता है। रोहिन की वर्षा का महत्त्व आम और धान दोनों के लिए विशेष है। इसके बाद मृग में सूर्य का तवना मनाया जाता है, पर आर्द्रा में वर्षा अत्यावश्यक मानी जाती है, एक नक्षत्र की अवधि १३ या १४ दिन होती है। आर्द्रा के बाद पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त, चित्रा और स्वाति ये सभी कृषि के विभिन्न कार्यों के लिए महत्त्व रखते हैं और इसलिए ये नाम कृषि जीवन में कुछ विकार के साथ प्रचलित हैं जैसे आर्द्रा, पुनरवसु, पुख्य, असलेषा, मघा, पुरवा और हथिया। महीनों में (चेती फसल कटने के कारण), जेठ असाढ़ी (खेत की तैयारी और बाग के लिए), भदवारा (वर्षा के लिए) कुआरी और कतिका (नयी फसल की तैयारी के लिए) प्रसिद्ध है। जाड़े और तपन के सापेक्ष बोध भी प्रखर हैं। फागुन का जाड़ा गुलाबी जाड़ा है, गर्मी सुहावनी है, चैत्र में चिनचिनाहट शुरू होती है, वैसाख में तपन बढ़ जाती है और लपट पड़ने लगती है। जेठ में सूर्य वृष के हो जाते हैं, तब ताप चरम सीमा को पहुँच जाता है, रातें भी तँवक उठती हैं और आषाढ़ से बारिश के बाद उमस होने लगती है। मेह पड़ने के पहले बतास के गुम होने पर ये उमस दुस्सह हो जाती है। कुआर में घाम बड़ा तीखा और विषगर्भ हो जाता है। कार्तिक से रात सियराने लगती है, पूस और माघ में चिल्ला जाड़ा पड़ता है और ठिठुरन होने लगती है, पानी जमता सा लगता है और नदी का जल भी काटता सा लगता है। हवा छेदने लगती है। रातें बड़ी हो जाती हैं। दिन–रात बराबर वसन्त और शरत सम्पात के दिन होते हैं। रात का उत्कर्ष दक्षिणायन के अन्त तक और दिन का उत्तरायण के अन्त तक होता है।

काल–चक्र निरंतर घूम रहा है और हमारा मनुष्य इस कालचक्र की यात्रा से अपने को समजस रख के चल रहा है। वह इस चक्र को निरंतर जी रहा है, वह अँधेरी रात से भय नहीं खाता, क्योंकि उसके भीतर एक विश्वास है – पुनः सवेरा एक बार फेरा है जी का (निराला की अन्तिम काव्य–पंक्ति)।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ

गजर–घंटा/ निशीथ–रात/ हरिशयनी–देवशयनी/ पूस–पौष/ मध्याह्न–दिन का मध्य, दोपहर/ पूर्वाह्न–मध्य से पहले का दिन/ अपराह्न–मध्य के बाद का दिन / गोधूलि–सायंकाल/ पुख्य–पुष्य नक्षत्र/ बतास–वायु/ कुआर–आश्विन माह।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'काल–चक्र' से आशय है –

   (क) समय का चक्र या पहिया (ख) काल का चक्कर

   (ग) मृत्यु का झमेला (घ) हेरफेर करना ( )

2. संवत्सर का अर्थ है –

   (क) नववर्ष (ख) काल

   (ग) घड़ी (घ) हवन सामग्री ( )

उत्तरमाला – (1) क (2) क

अतिलघूत्तरात्मक

1. निशीथ किसे कहते हैं ?
2. अहोरात्र शब्द का अर्थ बताइए।
3. जेठ में सूर्य का किस नक्षत्र में संचार होता है ?
4. गणेश चतुर्थी किस तिथि को मनाते हैं ?
5. फागुन का जाड़ा कैसा होता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चंद्रमास से क्या तात्पर्य है ?
2. मलमास का क्या अर्थ है ?
3. 'क्षय तिथि' कब कहलाती है ?
4. प्रदोष कब माना जाता है ?
5. षड्–ऋतुओं के नाम लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. वसंत को यौवन के रूप में और शिशिर को बुढ़ापे के रूप में क्यों माना गया है।
2. सौरमास पर एक टिप्पणी लिखिए।
3. आकाश की गतिविधि देखकर समय का विभाजन किस प्रकार किया गया है ?
4. खेती के काम किन–किन नक्षत्रों में होते हैं ?

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यह भी जानें

अनुस्वार व्यंजन है और अनुनासिक स्वर का नासिक्य विकार। हिंदी में ये दोनों अर्थभेदक भी हैं। अतः हिंदी में अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों ही प्रचलित रहेंगे।

टिप्पणी – उच्चारण करते समय जब प्रश्वास केवल नासिका से बाहर आए तब अनुस्वार का प्रयोग होगा तथा जब उच्चारण करते समय प्रश्वास नासिका और मुख दोनों से बाहर निकले तब अनुनासिकता चिह्न (ँ) का प्रयोग होगा। जैसे – हंस/ हँस।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11. पुरस्कार

• जयशंकर 'प्रसाद'

लेखक–परिचय

जयशंकर 'प्रसाद' (1890–1937) का जन्म काशी में हुआ था। ये 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध थे। 1909 ई० में 'इन्दु' के सम्पादन से इनकी साहित्य यात्रा आरंभ हुई जो कामायनी तक अनवरत चलती रही। इन्होंने नाटक, निबंध, कहानियाँ, उपन्यास, काव्य, गद्य काव्य और चंपू आदि तत्कालीन सभी विधाओं में सिद्ध हस्त से लिखा है। वे भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन के गूढ़ तत्वों के व्याख्याता, मानव चरित्र के विविध गुप्त एवं जटिल पक्षों के उद्घाटक थे। आधुनिक भारतीय समाज के खोखलेपन का निदर्शन, इतिहास के अवशेषों में से मार्मिक एवं प्रेरक प्रसंगों का चयन, राष्ट्रीय गौरव की प्रतिष्ठा, नारी के व्यक्तित्व में ममता, श्रद्धा, त्याग, शक्ति और शौर्य का अवतरण, प्रकृति और मानव के संघर्ष एवं सहयोग का धूप–छाँही अंकन, नियति के विधान और मानवीय प्रयत्नों दोनों के सहयोग से मानव के उत्थान–पतन का चित्रण इनकी रचनाओं में दिखाई देता है। प्रसिद्ध रचनाएँ – चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु, आदि (नाटक), तितली, कंकाल और इरावती (अपूर्ण) (उपन्यास), कामायनी (महाकाव्य), देवरथ (कहानी संग्रह) आदि प्रसिद्ध हैं।

पाठ–परिचय

'पुरस्कार' कहानी इनके पाँचवें कथा संग्रह जिसका प्रकाशन 1936 ई० में हुआ से ली गई है। इस कहानी के चरित्रों में भाव सौंदर्य, अंतर्द्वंद्व तथा मनोवैज्ञानिक चढ़ाव–उतार दर्शनीय है। कोसल की राज्य परंपरा के निमित्त अपना खेत देकर भी प्रतिदान स्वीकार न करने वाली 'मधूलिका' मगध के राजकुमार अरुण के सपनों में खोकर कोसल के दुर्ग पर आक्रमण में सहयोगिनी बनती है। लेखक ने उसके हृदय में राष्ट्रप्रेम और स्वप्रेम के संघर्ष की कहानी को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

•••

मूल पाठ

आर्द्रा नक्षत्र, आकाश में काले–काले बादलों की घुमड़, जिसमें देव–दुंदुभि का गंभीर घोष। प्राचीन के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण पुरुष झाँकने लगा था– देखने लगा, महाराज की सवारी। शैलमाला के अंचल में समतल उर्वरा भूमि से सोंधी बास उठ रही थी। नगर–तोरण से जय–घोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुंड उन्नत दिखाई पड़ा। वह हर्ष और उत्साह का समुद्र हिलोरें भरता हुआ आगे बढ़ने लगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रभात की हेम किरणों से अनुरंजित नन्हीं–नन्हीं बूँदों का एक झोंका स्वर्ण मल्लिका के समान बरस पड़ा। मंगल–सूचना से जनता ने हर्ष ध्वनि की।

रथों, हाथियों और अश्वारोहियों की पंक्ति जम गईं। दर्शकों की भीड़ भी कम न थी। गजराज बैठ गया, सीढ़ियों से महाराज उतरे। सौभाग्यवती और कुमारी सुन्दरियों के दो दल, आम्र–पल्लवों से सुशोभित मंगल–कलश और फूल, कुंकुम तथा खीलों से भरे थाल लिए मधुर गान करते हुए आगे बढ़े।

महाराज के मुख पर मधुर मुस्कान थी। पुरोहित–वर्ग ने स्वस्त्ययन किया। स्वर्ण रंजित हल की मूठ पकड़ कर महाराज ने जुते हुये सुंदर पुष्ट बैलों को चलने का संकेत किया। बाजे बजने लगे। किशोरी कुमारियों ने खीलों और फूलों की वर्षा की।

कोसल का यह उत्सव प्रसिद्ध था। एक दिन के लिए महाराज को कृषक बनना पड़ा – उस दिन इन्द्र–पूजन की धूम–धाम होती; गोठ होती। नगर–निवासी उस पहाड़ी भूमि में आनंद मनाते। प्रति वर्ष कृषि का यह महोत्सव उत्साह से संपन्न होता, दूसरे राज्यों से भी युवक राजकुमार इस उत्सव में बड़े चाव से आकर योग देते।

मगध का एक राजकुमार अरुण अपने रथ पर बैठ कर बड़े कुतूहल से वह दृश्य देख रहा था।

बीजों का एक थाल लिए कुमारी मधूलिका महाराज के साथ थी। बीज बोते हुए महाराज जब हाथ बढ़ाते तब मधूलिका उनके सामने थाल कर देती। यह खेत मधूलिका का था, जो इस साल महाराज की खेती के लिये चुना गया था। इसलिए बीज देने का सम्मान मधूलिका ही को मिला। वह कुमारी थी। सुंदरी थी। कौशेय–वसन उसके शरीर पर इधर–उधर लहराता हुआ स्वयं शोभित हो रहा था। वह कभी उसे सम्हालती और कभी अपने रूखे अलकों को। कृषक बालिका के शुभ्र भाल पर श्रमकणों की भी कमी न थी। वे सब बरौनियों में गुँथे जा रहे थे, सम्मान और लज्जा उसके अधरों पर मन्द मुस्कराहट के साथ सिहर उठते, किंतु महाराज को बीज देने में उसने शिथिलता न दिखाई। सब लोग महाराज का हल चलाना देख रहे थे–विस्मय से, कुतूहल से। और अरुण देख रहा था कृषक–कुमारी मधूलिका को। आह कितना भोला सौंदर्य! कितनी सरल चितवन।

उत्सव का प्रधान कृत्य समाप्त हो गया। महाराज ने मधूलिका के खेत का पुरस्कार दिया, थाल में कुछ स्वर्ण मुद्राएँ। वह राजकीय अनुग्रह था। मधूलिका ने थाली सिर से लगा ली, किंतु साथ ही उसमें की स्वर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्यौछावर करके बिखेर दिया। मधूलिका की उस समय की ऊर्जस्वित मूर्त्ति लोग आश्चर्य से देखने लगे। महाराज की भृकुटि भी जरा चढ़ी ही थी। मधूलिका ने सविनय कहा –

''देव! यह मेरे पितृ–पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है, इसलिए मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।'' महाराज के बोलने के पहले वृद्ध मंत्री ने तीखे स्वर से कहा – ''अबोध! क्या कह रही है ? राजकीय अनुग्रह का तिरस्कार! तेरी भूमि से चौगुना मूल्य है, फिर कोसल का यह सुनिश्चित राष्ट्रीय नियम है। तू आज से राजकीय रक्षण पाने की अधिकारिणी हुई, इस धन से अपने को सुखी बना। ''राजकीय–रक्षण की अधिकारिणी तो सारी प्रजा है मंत्रिवर!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महाराज को भूमि–समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध न था और न है, किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव है।''–मधूलिका उत्तेजित हो उठी।

महाराज के संकेत करने पर मंत्री ने कहा – ''देव! वाराणसी युद्ध के अन्यतम वीर सिंहमित्र की यह एकमात्र कन्या है।'' महाराज चौंक उठे–''सिंहमित्र की कन्या! जिसने मगध के सामने कोसल की लाज रख ली थी, उसी वीर की मधूलिका कन्या है ?''

''हाँ देव!'' सविनय मंत्री ने कहा।

''इस उत्सव के परम्परागत नियम क्या हैं, मंत्रिवर ?'' महाराज ने पूछा।

''देव–नियम तो बहुत साधारण हैं। किसी भी अच्छी भूमि को इस उत्सव के लिये चुन कर नियमानुसार पुरस्कार स्वरूप उसका मूल्य दे दिया जाता है। वह भी अत्यंत अनुग्रह पूर्वक अर्थात् भूसम्पत्ति का चौगुना मूल्य उसे मिलता है। उस खेती को वही व्यक्ति वर्ष भर देखता है। वह राजा का खेत कहा जाता है।''

महाराज को विचार–संघर्ष से विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता थी। महाराज चुप रहे। जय घोष के साथ सभा विसर्जित हुई। सब अपने–अपने शिविरों में चले गये किन्तु मधूलिका को उत्सव में फिर किसी ने न देखा। वह अपने खेत की सीमा पर विशाल मधूक–वृक्ष के चिकने हरे पत्तों की छाया में अनमनी चुपचाप बैठी रही।

\+ \+ \+ \+

रात्रि का उत्सव अब विश्राम ले रहा था। राजकुमार अरुण उसमें सम्मिलित नहीं हुआ – वह विश्राम–भवन में जागरण कर रहा था। आँखों में नींद न थी। प्राची में जैसे गुलाबी खिल रही थी, वही रंग उसकी आँखों में था। सामने देखा तो मुँडेर पर कपोती एक पैर पर खड़ी पंख फैलाये अँगड़ाई ले रही थी। अरुण उठ खड़ा हुआ। द्वार पर सुसज्जित अश्व था, वह देखते–देखते नगर–तोरण पर जा पहुँचा। रक्षकगण ऊँघ रहे थे; अश्व के पैरों के शब्द से चौंक उठे।

युवक कुमार तीर–सा निकल गया। सिंधु देश का तुरंग प्रभात के पवन से पुलकित हो रहा था। घूमता हुआ अरुण उसी मधूक–वृक्ष के नीचे पहुँचा, जहाँ मधूलिका अपने हाथ पर सिर धरे हुए खिन्न–मुद्रा का सुख ले रही थी।

अरुण ने देखा, एक छिन्न माधवी–लता वृक्ष की शाखा से च्युत होकर पड़ी है। सुमन मुकुलित थे, भ्रमर निस्पंद। अरुण ने अपने अश्व को मौन रहने का संकेत किया, उस सुषमा को देखने के लिए। परन्तु कोकिल बोल उठी–उसने अरुण से प्रश्न किया –छिः कुमारी के सोये हुए सौंदर्य पर दृष्टिपात् करने वाले धृष्ट, तुम कौन ?'' मधूलिका की आँख खुल पड़ी। उसने देखा एक अपरिचित युवक। वह संकोच से उठ बैठी। ''भद्रे! तुम्हीं न कल उत्सव की संचालिका रही हो?''

''उत्सव! हाँ, उत्सव ही तो था।''

''कल उस सम्मान..........''

''क्या आपको कल का स्वप्न सता रहा है ? भद्र! आप क्या मुझे इस अवस्था में संतुष्ट न रहने देंगे ?''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''मेरा हृदय उस छवि का भक्त बन गया है देवि!''

''मेरे इस अभिनय का—मेरी विडंबना का। आह! मनुष्य कितना निर्दय है, अपरिचित! क्षमा करो, जाओ अपने मार्ग।''

''सरलता की देवि! मैं मगध का राजकुमार तुम्हारे अनुग्रह का प्रार्थी हूँ—मेरे हृदय की भावना अवगुंठन में रहना नहीं जानती। उसे अपनी.........''

''राजकुमार मैं कृषक बालिका हूँ! आप नंदन—बिहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीने वाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है—मैं दुःख से विकल हूँ, मेरा उपहास न करो।''

''मैं कोसल नरेश से तुम्हारी भूमि दिलवा दूँगा।''

''नहीं वह कोसल का राष्ट्रीय नियम है। मैं उसे बदलना नहीं चाहती—चाहे उससे मुझे कितना ही दुःख हो।''

''तब तुम्हारा रहस्य क्या है ?''

''यह रहस्य मानव—हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार नियमों से यदि मानव—हृदय बाध्य होता तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंच कर एक कृषक—बालिका का अपमान करने न आता।'' मधूलिका उठ खड़ी हुई।

चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा। किशोर किरणों में उसका रत्न किरीट चमक उठा। अश्व वेग से चला जा रहा था और मधूलिका निष्ठुर प्रहार करके क्या स्वयं आहत न हुई। उसके हृदय में टीस—सी होने लगी। वह सजल नेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी।

\+ \+ \+ \+

मधूलिका ने राजा का प्रतिदान, अनुग्रह नहीं लिया। वह—दूसरे खेतों में काम करती थी और चौथे पहर रूखी—सूखी खाकर पड़ रहती। मधूक—वृक्ष के नीचे छोटी—सी पर्ण—कुटीर थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधूलिका का वह आश्रय था। कठोर परिश्रम से जो रूखा अन्न मिलता वही उसकी साँसों को बिताने के लिए पर्याप्त था। दुबली होने पर भी उसके अंग पर तपस्या की कांति थी। आस—पास के कृषक उसका आदर करते थे। वह एक आदर्श बालिका थी। दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीतने लगे।

\+ \+ \+ \+

शीतकाल की रजनी, मेघों से भरा आकाश जिसमें बिजली की दौड़ धूप। मधूलिका का छाजन टपक रहा था, ओढ़ने की कमी थी। यह ठिठुरकर एक कोने में बैठी थी। मधूलिका अपने अभाव को आज बढ़ा कर सोच रही थी। जीवन के सामंजस्य बनाये रखने वाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परंतु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ घटती—बढ़ती रहती है। आज बहुत दिनों पर उसे बीती बात स्मरण हुई —''दो, नहीं तीन वर्ष हुए होंगे इसी मधूक के नीचे, प्रभात में—तरुण राजकुमार ने क्या कहा था ?''

वह अपने हृदय से पूछने लगी—उन चाटुकारी के शब्दों को सुनने के लिए उत्सुक—सी वह पूछने लगी—''क्या कहा था ?'' दुख—दग्ध हृदय उन स्वप्न—सी बातों का स्मरण रख सकता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और स्मरण ही होता तो भी कष्टों की इस काली निशा में वह कहने का साहस करता। हाय री, विडंबना!

आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दरिद्रता की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद–माला के वैभव का काल्पनिक चित्र–उन सूखे डंठलों की रंध्रों से, नभ में–बिजली के आलोक में नाचता–हुआ दिखाई देने लगा। खिलवाड़ी शिशु जैसे श्रावण की संध्या में जुगुनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकाता है, वैसे ही मधूलिका अभी वह निकल गया, मन ही मन कह रही थी। वर्षा ने भीषण रूप धारण किया। गड़गड़ाहट बढ़ने लगी; ओले पड़ने की संभावना थी। मधूलिका अपनी जर्जर झोपड़ी के लिए काँप उठी। सहसा बाहर शब्द हुआ –

''कौन है यहाँ ? पथिक को आश्रय चाहिए।''

मधूलिका ने डंठलों का कपाट खोल दिया। बिजली चमक उठी। उसने देखा, एक पुरुष घोड़े की डोर पकड़े खड़ा है और सहसा वह चिल्ला उठी–''राजकुमार!''

''मधूलिका!'' आश्चर्य से युवक ने कहा।

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। मधूलिका अपनी कल्पना को सहसा प्रत्यक्ष देखकर चकित हो गई, ''इतने दिनों के बाद आज फिर।''

अरुण ने कहा–''कितना समझाया मैंने, परंतु.........''

मधूलिका अपनी दयनीय अवस्था पर संकेत करने देना नहीं चाहती थी। उसने कहा –''और आज आपकी यह क्या दशा है ?''

सिर झुका कर अरुण ने कहा –''मगध का विद्रोही निर्वासित कोसल में जीविका खोजने आया हूँ।''

मधूलिका उस अंधकार में हँस पड़ी–''मगध के विद्रोही राजकुमार का स्वागत करे एक अनाथिनी कृषक–बालिका, यह भी एक विडंबना है तो भी मैं स्वागत के लिए प्रस्तुत हूँ।''

\+ \+ \+ \+

शीतकाल की निस्तब्ध रजनी, कुहरे से धुली हुई चाँदनी, हाड़ कँपा देने वाला समीर तो भी अरुण और मधूलिका दोनों पहाड़ी गह्वर के द्वार पर वटवृक्ष के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मधूलिका की वाणी में उत्साह था, किन्तु अरुण जैसे अत्यन्त सावधान होकर बोलता।

मधूलिका ने पूछा–''जब तुम इतनी विपन्न अवस्था में हो तो फिर इतने सैनिकों को साथ रखने की क्या आवश्यकता है ?''

''मधूलिका! बाहुबल ही तो वीरों की आजीविका है। ये मेरे जीवन–मरण के साथी हैं। भला मैं इन्हें कैसे छोड़ देता ? और करता भी क्या ?''

''क्यों ? हम लोग परिश्रम से कमाते और खाते। अब तो तुम..........।''

''भूल न करो, मैं अपने बाहुबल पर भरोसा करता हूँ। नये राज्य की स्थापना कर सकता हूँ, निराश क्यों हो जाऊँ ?'' अरुण के शब्दों कम्पन्न था, वह जैसे कुछ कहना चाहता था, पर कह न सकता था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''नवीन राज्य! ओहो, तुम्हारा उत्साह तो कम नहीं। भला कैसे ? कोई ढंग बताओ तो मैं भी कल्पना का आनंद ले लूँ।''

''कल्पना का आनंद नहीं मधूलिका, मैं तुम्हें राजरानी के संमान में सिंहासन पर बिठाऊँगा। तुम अपने छिने हुए खेत की चिन्ता करके भयभीत न हो।''

एक क्षण में सरला मधूलिका के मन में प्रमाद का अंधड़ बहने लगा–द्वंद्व मच गया। उसने सहसा कहा–''आह, मैं सचमुच आज तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती थी, राजकुमार!''

अरुण ढिठाई से उसके हाथों को दबाकर बोला–''तो मेरा भ्रम था, तुम सचमुच मुझे प्यार करती हो ?''

युवती का वक्षस्थल फूल उठा। वह हाँ भी नहीं कह सकी, न भी नहीं। अरुण ने उसकी अवस्था का अनुभव कर लिया। कुशल मनुष्य के सामने उसने अवसर को हाथ से न जाने दिया। तुरंत बोल उठा–''तुम्हारी इच्छा हो तो प्राणों से प्रण लगाकर मैं तुम्हें इस कोसल के सिंहासन पर बिठा दूँ मधूलिका। अरुण के खड्ग का आतंक देखोगी ?'' मधूलिका एक बार काँप उठी। वह कहना चाहती थी, नहीं–किन्तु उसके मुँह से निकला, ''क्या?''

''सत्य मधूलिका, कोसल–नरेश तभी से तुम्हारे लिए चिंतित हैं यह मैं जानता हूँ, तुम्हारी साधारण–सी प्रार्थना वह अस्वीकार न करेंगे। और मुझे यह भी विदित है कि कोसल के सेनापति अधिकांश सैनिकों के साथ पहाड़ी दस्युओं का दमन करने के लिए बहुत दूर चले गए हैं।''

मधूलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगी। दारुण भावना से उसका मस्तक विकृत हो उठा। अरुण ने कहा–''तुम बोलती नहीं हो ?''

''जो कहोगे वही करूँगी'' मंत्रमुग्ध–सी मधूलिका ने कहा।

\+ \+ \+ \+

स्वर्णमंच पर कोसल–नरेश अर्द्धनिद्रित अवस्था में आँखें मुकुलित किए हैं। एक चामरधारिणी युवती पीछे खड़ी अपनी कलाई बड़ी कुशलता से घुमा रही है। चामर के शुभ्र आंदोलन उस प्रकोष्ठ में धीरे–धीरे संचालित हो रहे हैं। तांबूल–वाहिनी प्रतिमा के समान दूर खड़ी है।

प्रतिहारी ने आकर कहा–''जय हो देव! एक स्त्री कुछ प्रार्थना करने आई है।''

आँखे खोलते हुए महाराज ने कहा –''स्त्री! प्रार्थना करने आई है ?आने दो।''

प्रतिहारी के साथ मधूलिका आयी। उसने प्रणाम किया। महाराज ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा–''तुम्हें कहीं देखा है!''

''तीन बरस हुए देव! मेरी भूमि खेती के लिए ली गई थी।''

''ओह, तो तुमने इतने दिन कष्ट में बिताए, आज उसका मूल्य माँगने आई हो क्यों ? अच्छा–अच्छा तुम्हें मिलेगा। प्रतिहारी!''

''नहीं महाराज, मुझे मूल्य नहीं चाहिए।''

''मूर्ख! फिर क्या चाहिए ?''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''उतनी ही भूमि। दुर्ग के दक्षिण नाले के समीप की जंगली भूमि, वहीं मैं अपनी खेती करूँगी। मुझे एक सहायक मिल गया है। वह मनुष्यों से मेरी सहायता करेगा; भूमि को समतल भी बनाना होगा।''

महाराज ने कहा–''कृषक बालिके! वह बड़ी उबड़–खाबड़ भूमि है। तिस पर वह दुर्ग के समीप एक सैनिक महत्त्व रखती है।''

''तो फिर निराश लौट जाऊँ।''

''सिंहमित्र की कन्या! मैं क्या करूँ ? तुम्हारी यह प्रार्थना.................।''

''देव! जैसी आज्ञा हो।''

''जाओ, तुम श्रमजीवियों को उसमें लगाओ। मैं अमात्य को आज्ञा–पत्र देने का आदेश करता हूँ।''

''जय हो देव!'' कह कर प्रणाम करती हुई मधूलिका राजमन्दिर के बाहर आई।

\+ \+ \+ \+

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर, घना जंगल है। आज वहाँ मनुष्यों का पद–संचार से जंगल की शून्यता भंग हो रही थी। अरुण के छिपे हुए मनुष्य स्वतन्त्रता से इधर–उधर घूमते थे। झाड़ियों को काट कर पथ बन रहा था। नगर दूर था, फिर उधर यों ही कोई नहीं आता था। फिर अब तो महाराज की आज्ञा से वहाँ मधूलिका का अच्छा खेत बन रहा था। किसी को इसकी चिंता न थी।

एक घने कुंज में अरुण और मधूलिका एक दूसरे को हर्षित नेत्रों से देख रहे थे। संध्या हो चली थी। उस निविड़ वन में उन नवागत मनुष्यों को देखकर पक्षीगण अपने नीड़ को लौटते हुए अधिक कोलाहल कर रहे थे।

प्रसन्नता से अरुण की आँखें चमक उठीं। सूर्य की अंतिम किरणें झुरमुट से घुसकर मधूलिका के कपोलों से खेलने लगीं। अरुण ने कहा–''चार पहर और विश्वास करो, प्रभात में ही इस जीर्ण कलेवर कोसल–राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती में तुम्हारा अभिषेक होगा। और मगध से निर्वासित मैं, एक स्वतन्त्र राष्ट्र का अधिपति बनूँगा, मधूलिका!''

''भयानक! अरुण तुम्हारा साहस देख कर मैं चकित हो रही हूँ। केवल सौ सैनिकों से तुम........''

''रात के तीसरे पहर मेरी विजय–यात्रा होगी मधूलिके!''

''तो तुमको इस विजय पर विश्वास है ?''

''अवश्य! तुम अपनी झोपड़ी में यह रात बिताओ, प्रभात से तो राजमंदिर ही तुम्हारा लीला–निकेतन बनेगा।''

मधूलिका प्रसन्न थी, किंतु अरुण के लिए उसकी कल्याण कामना सशंक थी। वह कभी–कभी उद्विग्न–सी होकर बालकों के समान प्रश्न कर बैठती। अरुण उसका समाधान कर देता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सहसा कोई संकेत पाकर उसने कहा–''अच्छा, अंधकार अधिक हो गया। अभी तुम्हें दूर जाना है और मुझे भी प्राणपन से इस अभियान के प्रारंभिक कार्यों को अर्धरात्रि तक पूरा कर लेना चाहिए। इसलिए रात्रि भर के लिए विदा।''

मधूलिका उठ खड़ी हुई। कँटीली झाड़ियों से उलझती हुई, क्रम से बढ़ने वाले अंधकार में, वह अपनी झोपड़ी की ओर चली।

\+ \+ \+ \+

पथ अंधकारमय था और मधूलिका का हृदय भी निविड़तम से घिरा था। उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गयी। जितनी सुख–कल्पना थी, वह जैसे अंधकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ; यदि वह सफल न हुआ तो! फिर सहसा सोचने लगी, वह क्यों सफल हो ? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय ? मगध कौसल का चिर शत्रु! ओह; उसकी विजय! कौसल–नरेश ने क्या कहा था–'सिंहमित्र की कन्या।' सिंहमित्र कोसल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है ? नहीं, नहीं। मधूलिका! ''मधूलिका!'' जैसे उसके पिता उस अंधकार में पुकार रहे थे, वह पगली की तरह चिल्ला उठी। रास्ता भूल गयी।

रात एक पहर बीत चली, पर मधूलिका अपनी झोपड़ी तक न पहुँची। वह उधेड़–बुन में विक्षिप्त–सी चली जा रही थी। उसकी आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अन्धकार में चित्रित हो जाती है। उसे सामने आलोक दिखाई पड़ा। वह बीच पथ में खड़ी हो गई। प्रायः एक सौ उल्काधारी अश्वारोही चले आ रहे थे और आगे–आगे एक वीर अधेड़ सैनिक था। उसक बाएँ हाथ में अश्व की वल्गा थी और दाहिने हाथ में नग्न खड्ग। अत्यंत धीरता से वह टुकड़ी अपने पथ पर चल रही थी। परंतु मधूलिका बीच से हिली नहीं। प्रमुख सैनिक पास आ गया, पर मधूलिका अब भी नहीं हटी। सैनिक ने अश्व रोक कर कहा –''कौन ?'' कोई उत्तर न मिला। तब दूसरे अश्वारोही ने कड़क कर कहा–तू कौन है स्त्री ? कोसल के सेनापति को शीघ्र उत्तर दे।''

रमणी जैसे विकारग्रस्त स्वर में चिल्ला उठी–''बाँध लो मुझे, बाँध लो! मेरी हत्या करो। मैंने अपराध ही ऐसा किया है।''

सेनापति हँस पड़े और बोले–''पगली है।''

''पगली! नहीं यदि वही होता तो इतनी विचार–वेदना क्यों होती सेनापति! मुझे बाँध लो। राजा के पास ले चलो।''

''क्या है! स्पष्ट कह।''

''श्रावस्ती का दुर्ग एक प्रहर में दस्युओं के हस्तगत हो जायगा। दक्षिण नाले के पार से उनका आक्रमण होगा।''

सेनापति चौंक उठे। उन्होंने आश्चर्य से पूछा–''तू क्या कह रही है ?''

''मैं सच कह रही हूँ, शीघ्रता करो।''

सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर धीरे–धीरे बढ़ने की आज्ञा दी और स्वयं अश्वारोहियों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े। मधूलिका एक अश्वारोही के साथ बाँध दी गई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

\+ \+ \+ \+

श्रावस्ती का दुर्ग कोसल राष्ट्र का केन्द्र, इस रात्रि में अपने विगत वैभव का स्वप्न देख रहा था। विभिन्न राजवंशों ने उसके प्रांतों पर अधिकार जमा लिया है और अब वह कई गाँवों का अधिपति है। फिर भी उसके साथ कोसल के अतीत की स्वर्ण गाथाएँ लिपटी हैं। वही लोगों की ईर्ष्या का कारण है। दुर्ग के प्रहरी चौंक उठे, जब थोड़े से अश्वारोही बड़े वेग से आते हुए दुर्ग पर रुके। जब उल्का के आलोक में उन्होंने सेनापति को पहिचाना, तब द्वार खुला। सेनापति घोड़े की पीठ पर से उतरे। उन्होंने कहा–''अग्निसेन! दुर्ग में कितने सैनिक होंगे ?

''सेनापति की जय हो! दो सौ।''

''उन्हें शीघ्र ही एकत्र करो, परन्तु बिना किसी शब्द के सौ को लेकर तुम शीघ्र ही चुपचाप दुर्ग के दक्षिण की ओर चलो। आलोक और शब्द न हो।''

सेनापति ने मधूलिका की ओर देखा। वह खोल दी गई। उसे अपने पीछे आने का संकेत तक सेनापति राजमन्दिर की ओर बढ़े। प्रतिहारी ने सेनापति को देखते ही महाराज को सावधान किया। वह अपनी सुख निद्रा के लिए प्रस्तुत हो रहे थे। किन्तु सेनापति और साथ में मधूलिका को देखते ही चंचल हो उठे सेनापति ने कहा –''जय हो! देव! इस स्त्री के कारण मुझे इस समय उपस्थित होना पड़ा है।''

महाराज ने स्थिर नेत्रों से देखकर कहा–''सिंहमित्र की कन्या, फिर यहाँ क्यों ? –क्या तुम्हारा क्षेत्र नहीं बन रहा है ? कोई बाधा ? सेनापति! मैंने दुर्ग के दक्षिण नाले के समीप की भूमि इसे दे दी है। क्या उसी सम्बंध में तुम कहना चाहते हो ?''

''देव! किसी गुप्त शत्रु ने उसी ओर से आज की रात में दुर्ग पर अधिकार कर लेने का प्रबंध किया। इस स्त्री ने मुझे पथ में यह संदेशा दिया है।''

राजा ने मधूलिका की ओर देखा। वह काँप उठी। घृणा और लज्जा से वह गड़ी जा रही थी। राजा ने पूछा–''मधूलिका! यह सत्य है ?''

''हाँ देव!''

राजा ने सेनापति से कहा –''सैनिकों को एकत्र करके तुम चलो, मैं अभी आता हूँ।'' सेनापति के चले जाने पर राजा ने कहा –''सिंहमित्र की कन्या! तुमने एक बार फिर कोसल का उपकार किया। यह सूचना देकर तुमने पुरस्कार का काम किया है। अच्छा; तुम यहीं ठहरो। पहले उन आतताइयों का प्रबंध कर लूँ।''

\+ \+ \+ \+

अपने साहसिक अभियान में अरुण बन्दी हुआ और दुर्ग उल्का के आलोक में अतिरंजित हो गया। भीड़ ने जय–घोष किया। सबके मन में उल्लास था। श्रावस्ती दुर्ग आज एक दस्यु के हाथ में जाने से बचा। आबाल, वृद्ध–नारी आनन्द से उन्मत्त हो उठे।

उषा के आलोक में सभा–मंडप दर्शकों से भर गया। बंदी अरुण को देखती ही जनता ने रोष से हुँकार की – ''वध करो!'' राजा ने सहमत होकर कहा –''प्राणदण्ड।'' मधूलिका बुलाई गई। वह पगली–सी आकर खड़ी हो गई। कोसल नरेश ने पूछा –''मधूलिका, तुझे जो पुरस्कार लेना हो, माँग।'' वह चुप रही।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राजा ने कहा –''मेरे निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।'' मधूलिका ने एक बार बंदी अरुण की ओर देखा। उसने कहा –''मुझे कुछ न चाहिए।'' अरुण हँस पड़ा। राजा ने कहा –''नहीं, मैं तुझे अवश्य दूँगा। माँग ले।''

''तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले।'' कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।

•••

शब्दार्थ

प्राचीर–परकोटा, चहारदीवार/ उर्वरा–उपजाऊ/ शुण्ड–हाथी की सूँड/स्वस्त्ययन–मांगलिक कार्य/ खीलों–बताशे/ कौशेय–वसन –रेशमी वस्त्र/अलकों–बाल,केश/ शुभ्र–सफेद/ श्रमकणों–पसीने की बूँदें/ शिथिलता–थकान/ कृत्य–कार्य/ न्यौछावर –अर्पण/ ऊर्जस्वित–ऊर्जावान/निस्पन्द–निश्चेष्ट/ दृष्टिपात्–देखना/ अनुग्रह–कृपा/ रत्न किरीट–रत्नों का मुकुट/ निष्ठुर–कठोर/ पर्ण–कुटीर–पत्तों से बनी झोपड़ी/ जर्जर–जीर्ण–शीर्ण/ कपाट–किवाड़/ निस्तब्ध–शांत/ गह्वर–गुफा/ खड्ग–तलवार/ दस्युओं–डाकुओं/ दारुण–करुण/ श्रमजीवियों–श्रम करके जीने वाले/ अमात्य–मंत्री/ पद–संचार–चहलकदमी/ कोलाहल–जोर–जोर से आवाजें करना/ जीर्ण–पुराना, टूटा–फूटा/ निकेतन–गृह,घर/ विक्षिप्त–सी–पागलों–सी/ उल्काधारी–मशाल लिए हुए / प्रतिहारी–सेवक, रक्षक/आतताइयों–आतंकवादियों/आबाल–वृद्ध–बालक और वृद्ध

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मधूलिका का ''मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई।'' क्योंकि–
   (क) वह राजरानी बनने वाली है।
   (ख) कहीं चूक में राजकुमार असफल हो गया तो ?
   (ग) मैंने व्यक्तिगत सुख के लिए कोसल को खतरे में डालकर ठीक नहीं किया।
   (घ) इस रात्रि में कैसा भीषण चक्र होगा! मुझे भी साथ जाना चाहिए था। ( )
2. मधूलिका ने पुरस्कार स्वरूप राजा से क्या माँगा ?
   (क) स्वर्ण मुद्राएँ (ख) खेती की भूमि
   (ग) अरुण के साथ प्राणदण्ड (घ) अपने लिए पृथक दुर्ग ( )

   उत्तरमाला – (1) ग (2) ग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''मूल्य स्वीकार करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है।'' मधूलिका ने ऐसा क्यों कहा ?
2. ''मैं सच कह रही हूँ शीघ्रता करो'' यह किसने, कब और किससे कहा ?
3. मधूलिका ने कोसल पर क्या उपकार किया ?
4. अरुण कौन था ?
5. मधूलिका ने अपने लिए भूमि कहाँ माँगी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मधूलिका का परिचय दीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. कोसल के उत्सव का परम्परागत नियम क्या था ?
3. 'मधूलिका अपने अभाव को आज बढ़ा कर सोच रही थी।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. मधूलिका ने राजा से अपनी भूमि का मूल्य स्वीकार क्यों नहीं किया ?
5. मधूलिका के पिता कौन थे, उन्होंने क्या कार्य किया था ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. मधूलिका की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।
2. निर्वासित अरुण की दुर्ग पर अधिकार करने की क्या योजना थी ?
3. " जीवन के सामंजस्य बनाए रखने वाले उपकरण तो अपनी सीमा निर्धारित रखते हैं, परन्तु उनकी आवश्यकता और कल्पना भावना के साथ घटती–बढ़ती रहती है।" उक्त पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

•••

यह भी जानें

अनुस्वार (शिरोबिंदु ं)

(क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचम वर्ण (पंचमाक्षर) के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे– पंकज, गंगा, चंचल, कंजूस, कंठ, ठंडा, संत, संध्या, मंदिर, संपादक, संबंध आदि। (पङ्कज, गङ्गा, च ञ्चल, क ञ्जूस, कण्ठ, ठण्डा, सन्त, मन्दिर, सन्ध्या, सम्पादक, सम्बन्ध वाले रूप नहीं।)

(ख) यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे – वाङ्मय, अन्य, चिन्मय, उन्मुख आदि (वांमय, अंय, चिंमय, उंमुख आदि रूप ग्राह्य नहीं होंगे।)

(ग) पंचम वर्ण यदि द्वित्व रूप में (साथ–साथ) आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे – अन्न, सम्मेलन, सम्मति आदि (अंन, संमेलन, संमति रूप ग्राह्य नहीं होंगे।)

(घ) संस्कृत के कुछ तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग म् का सूचक है। जैसे– अहं (अहम्), एवं (एवम्), परं (परम्), शिवं (शिवम्)।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12 निक्की, रोजी और रानी

• महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रूखाबाद में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा इंदौर में हुई। प्रयाग के क्रास्थवेट कॉलेज में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, हिंदी और संस्कृत में स्नातकोत्तर किया। ये महिला विद्यापीठ, प्रयाग की प्रधानाध्यापिका भी रहीं। इनकी रचनाओं में पाठक के हृदय को भाव–विभोर करने की अद्भुत क्षमता आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली यह लेखिका छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री हैं। रश्मि, नीहार, नीरजा, दीपशिखा, यामा, सांध्यगीत इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। इनके द्वारा गद्य साहित्य में निबंध, संस्मरण व रेखाचित्र की भी रचना की गई है। इनका गद्य साहित्य भावपूर्ण व रोचक है। 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'अतीत के चलचित्र' व 'मेरा परिवार' इनके प्रमुख संस्मरणात्मक गद्य संकलन हैं। 'पथ के साथी' में इन्होंने अपने सम्पर्क में आए महान साहित्यकारों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे हैं। 'मेरा परिवार' में इन्होंने अपने जीवन से संबंधित उन जीव–जंतुओं का वर्णन किया है जिन्हें इन्होंने अपने जीवन में पाला था। गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में प्रतिभाशाली महादेवी वर्मा का निधन सन् 1987 में हुआ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत रचना में लेखिका ने अपने जीवन में आए, ऐसे तीन जीवों का वर्णन किया है, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी, उनके हृदय पर गहरी छाप छोड़ने में समर्थ रहे हैं। इस रचना में उनका पशु–प्रेम भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

पशु प्रेम का इतना सटीक एवम् सरस वर्णन अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। नकुल शिशु के प्रति सहानुभूति उनकी मानवता को दर्शाती है। साँप–नेवले की लड़ाई का भी मनोरंजक वर्णन है। पशु होते हुए भी निक्की, रोजी और रानी में घनिष्ठ मित्रता का भाव मैत्री की शिक्षा देता है। अपने पालतू पशुओं–जीवों के साथ घटी घटनाओं के माध्यम से, इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि पशु भी अत्यन्त समझदार होते हैं और विपत्ति में अपनों का साथ देते हैं। बाल्य काल में बच्चों को पशु-पक्षियों के बारे में जानने की अभिरुचि होती है, किन्तु धीरे–धीरे वह अधिकांश लोगों में विलुप्त हो जाती है। यह अध्याय हमें जीवों से प्रेम करने की भावना पैदा करता है और उनके संरक्षण के प्रति जागृति उत्पन्न करता है।

मूल पाठ

बाल्यकाल की स्मृतियों में अनुभूति की वैसी ही स्थिति रहती है, जैसी भीगे वस्त्र में जल की। वह प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता किन्तु वस्त्र के शीतल स्पर्श में उसकी उपस्थिति व्यक्त होती रहती है। इन स्मृतियों में और भी विचित्रता है। समय के माप से वे जितनी दूर होती जाती हैं, आत्मीयता के परिमाण में उतनी ही निकट आती जाती हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण महत्त्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छपे से हैं। निक्की नेवला, रोजी कुत्ती और रानी घोड़ी।

रोजी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह मेरे पाँचवें जन्म दिन पर, पिताजी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप भेंट कर दी गई। स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते। रोजी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेल–कूद में साथ देती। वस्तुतः मेरे पशु–प्रेम का आरम्भ रोजी के साहचर्य से माना जा सकता है, जो तेरह वर्ष की लम्बी अवधि तक अविच्छिन्न रहा।

रोजी सफेद थी, किंतु उसके छोटे–सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्यभाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण उसमें कत्थई किनारी वाली सफेद साड़ी की शबल रंगीनी का आभास मिलता है। वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुत्ती थी, और कुछ प्रकृति से और कुछ हमारे साहचर्य से श्वान–दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था। हम सबने तो उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे।

उस समय पिताजी इंदौर के डेली कॉलेज (जो राजकुमारों का विद्यालय था) के वाइस प्रिंसिपल थे और हम सब छावनी में रहते थे, जहाँ दूर तक कोई बस्ती नहीं थी। हमें पढ़ाने वाले शिक्षक प्रातः और संध्या समय आते थे। इस प्रकार दोपहर का समय हमारे लिए अवकाश का समय था, जिसे हम अति व्यस्तता में बिताते थे।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था, परन्तु मैं, मुझसे छोटी बहिन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसले तोड़ते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियाँ बीनते घूमते रहते। ग्रीष्म में जब हवा ठहर–सी जाती थी, वर्षा से जब वातावरण गलकर बरसने सा लगता था, और शीत में जब समय जम–सा जाता था, हमारी व्यस्तता एक सी क्रियाशील रहती थी।

घूमते–घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्ष से घिरा सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में 8–9 फुट और खुली धूप में 4–5 फुट के लगभग गहरा था। कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लम्बी–नीची और सूखे पोखर पर झूलती सी थी। सूखी पत्तियों ने झड़–झड़ कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था। हम तीनों डाल पर बैठकर झूलते रहते या रॉबिंसन क्रूसो के समान अपने समतल समुद्र के गहरे टापू की सीमाएँ नापते रहते। घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली–फली मिल जाती तो, नंदन वन की प्रतीति होने लगती।

हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती। जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती। जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे–आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती। गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी–बड़ी अँबिया हवा के झोंके से नीचे गिरती रहती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और उनके गिरने के स्वर के साथ रोजी सूखे पोखर में कूदती और पत्तियों के सरसराहट से भरे समुद्र में से उसे खोज लाती। कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता, परंतु वह इस खोज–कार्य से विरत न होती।

दोपहर को पिताजी कॉलेज में रहते और माँ घर के कार्य में व छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त रहती। रामा बाजार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज–माँज कर बर्तन चमकाने में दत्तचित्ता रहती। वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़ लिख रहे हैं। पर हम कुछ ऊँची खिड़की की राह से पहले रोजी को उतार देते और फिर एक–एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते–छिपते अपने उसी सूने मुक्ति लोक में पहुँच जाते। तीन में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था, क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था। परिणामतः तीनों का जाना अनिवार्य था। रोजी भी हमारे निर्बन्ध सम्प्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी, अतः वह भी साथ आती थी। हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दी जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती। कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था, पर वह चीं करना भी नियम–विरुद्ध मानती थी।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल–झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे, तब एक आम गिरने का शब्द हुआ। रोजी नीचे कूदी। कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही, फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह से किसी जीव को दबाये हुए ऊपर ला रही है। वस्तुतः उस सूखे पोखर के नीचे कगार में बिल बनाकर किसी नकुल दम्पत्ति ने प्रजापति के कार्य में सक्रिय सहयोग देना आरम्भ किया था। उनकी नकुल सृष्टि का कोई लघु, परंतु हमारे ही समान अराजकतावादी सदस्य, अपने सृजनकर्ताओं की दृष्टि बचाकर सूखी पत्तियों के समुद्र में ऊपर तैर आया था। पत्तियों से छोटा मुँह निकालकर उसने जैसे ही बाहर के संसार पर विस्मित दृष्टि डाली, वैसे ही अपने–आपको रोजी के छोटे और अंधेरे मुख–विवर में पाया। निरन्तर बिना दाँत चुभाये कच्ची अंबिया लाते–लाते रोजी इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई।

आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था, पर आकृति में स्पष्ट अन्तर था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म–नर्म पंजे, गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्हीं सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना सा जान पड़ा। रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था, परंतु बचने के संघर्ष में उसके कुछ खरोंच लग ही गई थी। चोट के अधिक भय से वह निश्चेष्ट था। उसे पा कर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि अपने घोंसले, चिकने पत्थर, जंगली कनेर के फूल आदि का विचित्र संग्रहालय छोड़ कर उसे लिए हुए घर की ओर भागे। उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए, परन्तु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला। उन्होंने जीव–जन्तुओं को न सताने के सम्बंध में लम्बा उपदेश देने के उपरांत, उसे उसके नकुल माता–पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हमें बेचारे नकुल शिशु से बड़ी सहानुभूति हुई। छोटे से बिल में रात–दिन पड़े माता–पिता के सामने बैठे रहने में जो कष्ट बच्चे को हो सकता है, उसका हम अनुमान कर सकते थे। यदि एक छोटे कमरे में हमें सामने बैठाकर बाबूजी रात–दिन पढ़ाते रहें और माँ सिलाई–बुनाई में लगी रहें, तो हमारा क्या हाल होगा। ऐसी ही कोई अप्रिय स्थिति बिल में रही होगी, नहीं तो यह इतना छोटा बच्चा भागता ही क्यों? अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता–पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे।

अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा। प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बाक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया। फिर बहुत अनुनय–विनय कर और उसके सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया। इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघूत्तम सदस्य सम्मिलित हुआ।

जब रामा की सतर्क देख–रेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया, तब हम रामा को दिए वचन भूलकर, फिर पूर्ववत् अराजकतावादी बन गए।

माँ ने उसका नाम रखा नकुल, जो उसकी जाति वाचक संज्ञा का तत्सम रूप था, किन्तु न जाने संक्षिप्तीकरण की किसी प्रवृत्ति के कारण हम उसे निक्की पुकारने लगे।

पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है। गिलहरी के खाने योग्य कीट, पतंग, फल–फूल आदि कोई भी खाद्य खाकर वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है। जेब में, कन्धे पर, आस्तीन में, बालों में, जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जावे, वह शांत स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थिति देखता–परखता रहता था।

निक्की मेरे पास ही रहता था।

उस समय हमारे परिवार में छोटी लड़कियों की वेशभूषा में गोटे–पट्टे से सजा गरारा, कुर्ता और दुपट्टा विशेष महत्त्व रखता था, जिसमें मध्यकालीन बेगमों के लघु संस्करण जान पड़ती थी। कभी–कभी प्रगतिशीलता का प्रमाण देने के लिए उन्हें फ्रॉक भी पहनाए जाते थे, जिसे कॉलर, लेस, झालर आदि के घटाटोप में वे क्वीन विक्टोरिया की संगनियों का भ्रम उत्पन्न करके मानो दोनों का प्रतिनिधित्व करती थीं। हमारे जूते तक पूर्व–पश्चिम में विभाजित थे। पूर्व के वेश के साथ छोटी, हल्की और जरी के काम वाली जूतियाँ पहनकर हम घिसटते हुए चलते और पश्चिमीय वेश के साथ घुटने के ऊपर तक काले या सफेद मोजे चढ़ाकर ऊँची एड़ी वाले और तस्मे से कसे बंधे जूते पहनकर डगमगाते हुए चलते थे। हमारे मन और पैर दोनों ही संचरण पद्धति से विद्रोह करते थे, क्योंकि वह न हमें करौंदे की झाड़ियाँ लांघने देती और न दौड़ने। अतः हम आल्मारी में दोनों प्रकार के पदत्राण को छिपाकर खिड़की से कूदते और नंगे पैर कंकड़–पत्थरों पर दौड़ लगाते थे।

निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ झूलता रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिप कर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता। रोजी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था, परन्तु निक्की की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता। एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे, वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लम्बे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया। हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की दो पिछले पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है।

निक्की ने साँप को मार डाला, समझकर हम सब चीखने पुकारने और साँप को पत्थर मारने लगे। यदि हमारा कोलाहल सुनकर रामा न आ जाता, तो परिणाम कुछ दुखद भी हो सकता था। उस दिन प्रथम बार में ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लम्बे साँप से लड़ सकता है। उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी। निक्की साँप के सब ओर इतनी तेजी से घूम रहा था कि वह एक भूरे और घूमते हुए धब्बे की तरह लग रहा था। साँप फन पटक रहा था, फुफकार रहा था, उसे अपनी कुण्डली में लपेट लेने के लिए आगे–पीछे हट–बढ़ रहा था। परन्तु बिजली की तरह तड़प उठने वाले निक्की को पकड़ने में असमर्थ था। वह तेजी से उछल–उछल कर साँप के फन के नीचे पैने दाँतों से आघात कर रहा था।

रामा के कारण इस समय युद्ध का अन्त देखने के लिए तो हम बाहर खड़े न रह सके, परन्तु जब निक्की खिड़की पर आकर बैठा, तब हमने झाँककर साँप को कई खंडों में कटा देखा। निक्की के मुँह में विष न लगा हो, इस भय से रामा ने उसके मुँह को पानी में डुबा–डुबा कर धोया और फिर दूध दिया।

साँप जैसे विषधर को खण्ड–खण्ड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है। जीव–जगत में जो निर्विष है, वह विष से मर जाता है और जिसमें अधिक मारक विष है, वह कम मारक वाले को परास्त कर देता है। पर नेवला इसका अपवाद है। वह विषरहित होने पर भी न सर्प के विष से मरता है और न संघर्ष में विषधर से परास्त होता है। नेवला सर्प की तुलना में बहुत कोमल और हल्का है। यदि साँप चाहे तो उसे अपनी कुण्डली में लपेटकर चूर–चूर कर डाले। फण के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे, परन्तु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली और गति से परास्त हो जाता है। नेवला न उसे दंशन का अवसर देता है, न व्यूह रचना का अवकाश। और अपनी लाघवता के कारण नेवले को न विशेष अवसर चाहिए न सुयोग।

इसी बीच में बाबूजी ने मुझे शहर के मिशन स्कूल में भर्ती करने का निश्चय किया। इस योजना से तो हमारा समस्त कार्यक्रम ध्वस्त होने की सम्भावना थी, अतः हम सब अत्यंत दुखी और चिंतित हुए, परंतु विवशता थी।

अंत में एक दिन पुस्तकें लेकर और शिकरम (बन्द गाड़ी जो उन दिनों नागरिक प्रतिष्ठा की सूचक थी) में बैठकर मुझे जाना पड़ा।

निक्की सदा के समान मेरे साथ था, परंतु बाबूजी के आदेश से उसे घर पर छोड़ देना आवश्यक हो गया। मिशन स्कूल पहुँचकर देखा कि वह शिकरम की छत पर बैठकर वहाँ पहुँच गया है। फिर तो उसे कपड़ों में छिपाकर भीतर ले जाने में मुझे सफलता मिल गई। परंतु कक्षा में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसे मेरे पास देखकर जो कोहराम मचा, उसने मुझे स्तम्भित और अवाक् कर दिया। She has brought a reptile throw it away आदि कहकर सिस्टर्स तथा सहपाठिनियाँ चिल्लाने–पुकारने लगीं, तब reptile का अर्थ न जानने पर भी मैंने समझ लिया कि वह निक्की के लिए अपमानजनक सम्बोधन है। मैंने कुछ अप्रसन्न मुद्रा में बार–बार कहा कि यह मेरा निक्की है, किसी को काटता नहीं, परंतु कोई उसके साथ बैठने को राजी नहीं हुआ। निरूपाय मैंने उसे फाटक के चहार दीवारी तक फैली लता में बैठा तो दिया, परंतु उसके खो जाने की शंका से मेरा मन पढ़ाई लिखाई से विरक्त ही रहा।

आने के समय जब निक्की कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठा तब आनन्द के मारे मेरे आँसू आ गए। तब से नित्य यही क्रम चलने लगा। प्रतिदिन मुझे पहुँचाने और लेने रामा आता था और वह पालक के नाते निक्की के प्रति बहुत सदय था; अतः मार्ग में निक्की मेरी गोद में बैठकर आता था और मिशन के फाटक की लता में या बाग में घूम–घूमकर मेरी पढ़ाई के घंटे बिताता था। छुट्टी होने पर मेरे फाटक पर पहुँचते ही उसका कूदकर मेरे कंधे पर बैठ जाना इतना नियमित और निश्चित था कि उसमें कुछ मिनटों का हेर–फेर भी कभी नहीं हुआ।

मिशन का वातावरण मेरे लिए घर के वातावरण से भिन्न था। वहँ की वेशभूषा भिन्न थी, प्रार्थना भिन्न थी, चित्र, मूर्ति आदि भिन्न थे, ईश्वर नाम भी भिन्न था, और उन सबसे बड़ी भिन्नता यह थी कि निक्की का वहाँ प्रवेश निषिद्ध था।

इसके उपरांत हमारे परिवार में एक सबसे बड़ा जीव सम्मिलित हुआ।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टुओं या सफेद गधों (जिनकी जाति के सम्बंध में रामा ने हमारा ज्ञान वर्धन किया था) में घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमोरेंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है, तो हमें भी यह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा, सफेद टट्टू पर बैठोगे ? 'तुम कहो' – 'तुम कहो' के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गम्भीर मुद्रा में उत्तर दिया, ''सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।''

पता नहीं, हमारे ज्ञान के अजस्त्र स्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परन्तु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा सा चाकलेट रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अतः बाहर से टट्टू को लाने, ले जाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया। अब तो हम उस छोटे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे साथ हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ, न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने–फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था। और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित न हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है, हम सब चार–पाँच दिन उससे रूष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त कर ही ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू की माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख–दुख की गाथा सुनते–सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताज–महल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह यहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में बसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग, जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छ, बड़ी, काली स्वच्छ और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथुने जिन्हें फुला–फुलाकर वह चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठों वाला लम्बा मुँह, जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत–विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक थी। सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती–गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परन्तु इतने दीर्घ काल के उपरान्त भी स्मृति पट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती हैं, जैसे किसी अदृश्य स्याही में लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार–बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अतः अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बांधने के लिए तो बना नहीं था, अतः उसकी दीवार में एक खुली अल्मारी और कई आले–ताख थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल–झूलकर, उसके कान और अयाल में फल खोंस–खोंस कर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला–खिला कर, थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री स्थापित कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुन्दर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरे वाली ऐसी जीन बनवाई गई, जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी–बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सवेरे भाई–बहिन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ वह कार्यक्रम दोहराया जाता।

परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोह प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी। अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सबके सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर, उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी–बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा देने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर, सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु–पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूंछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी। और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हैं।

रानी हम सबकी शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठने वालों को वह दुल्कीचाल से इधर–उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी। परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परन्तु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दुखद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़ बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़न खटोले पर सँभाला। परन्तु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई, जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो। साथियों की चीख–पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछौने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चाताप भरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए। एक बार भाई के जन्म दिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा या आभूषण पहन कर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुन्दर छोटे–छोटे शेर मुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया। और न जाने किस प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछताछ की तब खोज आरम्भ हुई। पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कोने को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अन्त में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने छुट्टन को कोने की मिट्टी हटाने का आदेश दिया किसी ने कुछ गहरा गड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दण्ड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फिर अचानक हमारे अराचक राज्य पर क्रान्ति का बवंडर बह गया और हमें समझदारों के देश में निर्वासित होना पड़ा। अवकाश के दिनों में जब हम घर लौटे, तब निक्की मर चुका था। रानी और उसका बच्चा पवन किसी को दे दिए गए थे। केवल दुर्बल, अकेली और खोई–सी रोजी हमारे पैरों से लिपट कर कू–कू करके रोने लगी।

शब्दार्थ

अतीत–बीता हुआ/ अनुभूत–अनुभव होने की दशा, भाव या गुण, संवेदन, बोध/अविच्छिन्न–सतत, निरन्तर/ आत्मीयता–मित्रता, अपना खास रिश्ता/ आरूढ़ –चढ़ने वाला, चढ़ा हुआ/ आहत–चोट खाया हुआ/ उत्कोच–घूस, रिश्वत/ उपहार –भेंट/ दत्तचित्त–जिसका चित्त किसी ओर लगा हो/ पदत्राण–पैरों की रक्षा करने वाला जूता/ मनोयोग–चित्तवृत्ति का निरोध करके और किसी एक विषय पर लगाना/ लघूतम–सबसे छोटा/ वात्सल्य–माता–पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम/ विवर–खोह, गुहा, बिल/ विस्मित–आश्चर्यजनक/ सतर्क–सावधान, तर्क युक्त/ समष्टि–सामूहिकता/ स्मृतियाँ–चादें/ सहानुभूति–किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुखी होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'निक्की, रोजी और रानी' पाठ किस पुस्तक से लिया गया है –
   (क) 'पीड़ा' से (ख) 'आँसू' से
   (ग) 'माधुर्य' से (घ) 'मेरा परिवार' से ( )
2. 'निक्की, रोजी और रानी' क्रमशः थे –
   (क) नेवला, कुत्ता, साँप (ख) कुत्ता, घोड़ा, नेवला
   (ग) नेवला, कुत्ता, घोड़ा (घ) साँप, नेवला, कुत्ता ( )

उत्तरमाला–(1) घ (2) ग

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'रोजी' किस प्रजाति की कुतिया थी ?
2. लेखिका को 'नकुल शिशु' कहाँ मिला था ?
3. रामा 'नकुल शिशु' को दूध किससे पिलाता था ?
4. रानी की देखभाल के लिए किसे रखा गया ?
5. रानी के रहने का स्थान क्या था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'निक्की और साँप' की लड़ाई का सजीव चित्रण कीजिए।
2. रोजी की सुंदरता का वर्णन कीजिए।
3. निक्की के कारण मिशन स्कूल में क्या घटना घटी ?
4. रामा ने टट्टुओं के संबंध में क्या कहानी बताई ?
5. मिशन स्कूल के वातावरण का चित्रण कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'निक्की, रोजी और रानी' रचना के आधार पर महादेवी वर्मा के पशु प्रेम का वर्णन कीजिए।
2. रानी के आकार–प्रकार का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

•••

यह भी जानें

अनुनासिकता चिह्न (चंद्रबिंदु ँ)

(क) हिंदी के शब्दों में उचित ढंग से चंद्रबिंदु का प्रयोग अनिवार्य होगा।

(ख) अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनिगुण है। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह और नाक से हवा निकलती है। जैसे – आँ, ऊँ, एँ, माँ, हूँ, आएँ।

(ग) चंद्रबिंदु के प्रयोग के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है। जैसे – हंस : हँस, अंगना–अँगना, स्वांग (स्व+अंग)–स्वाँग आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

(घ) जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो तो चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु का (अनुस्वार चिह्न का) प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के प्रयोग की छूट रहेगी। जैसे – नहीं, मैं, में आदि।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13. नशा

• प्रेमचंद

लेखक परिचय

हिंदी कथा साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का नाम सर्वाधिक आदर के साथ लिया जाता है। इनका जन्म सन् 1880 में वाराणसी जिले के लमही नामक ग्राम में हुआ था। बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ ही आपको शिक्षा विभाग में सब डिप्टी इंसपेक्टर के पद पर नियुक्त कर दिया गया। किंतु अपने स्वतंत्र विचारों और स्वाभिमानी व्यक्तित्व के कारण इन्हें शीघ्र ही सरकारी सेवा से त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद वे स्वतंत्र रहकर साहित्य–सृजन करते रहे।

प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लिखना प्रारंभ किया। हिंदी में पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' छपी। आपने 'मर्यादा', 'माधुरी', 'हंस', 'जागरण' आदि कई प्रसिद्ध हिंदी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। कुछ दिनों तक आपने सिनेमा–जगत् में काम किया किंतु वहाँ का माहौल अनुकूल न होने के कारण आप को वहाँ से चला आना पड़ा।

मुंशी प्रेमचंद शोषित एवं पीड़ित समाज के प्रतिनिधि लेखक थे। आप की सहानुभूति दलित वर्ग–शोषित किसान–मजदूर एवं उपेक्षित नारी समाज के प्रति रही है। भारतीय कृषक–जीवन की पीड़ित अवस्था का जैसा हृदयस्पर्शी तथा रोमांचित कर देने वाला चित्रण आपने किया है वैसा अन्य लेखकों द्वारा संभव नहीं हुआ। आपकी रचनाओं में ठेठ भारत के दर्शन होते हैं।

प्रेमचंद के साहित्य पर गाँधीवाद का पर्याप्त प्रभाव है। तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक विचारधारा में प्रायः प्रगतिशील विचारों के पक्षधर हैं। आपके विचार में साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, मशाल भी होना चाहिए।

मुंशी जी की भाषा सहज, स्वाभाविक और सुबोध है। उर्दू से हिंदी में आने के कारण प्रेमचंद की भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता मिलती है। लोकोक्तियों, मुहावरों एवं सूक्तियों के प्रयोग में आप सिद्ध हस्त हैं।

प्रेमचंद जी ने लगभग तीन सौ कहानियाँ तथा एक दर्जन उपन्यास लिखे हैं। हिंदी कथा साहित्य को आपने एक नवीन मोड़ दिया। अभी तक जिन कहानियों और उपन्यासों में तिलिस्म और जासूसी की प्रधानता थी प्रेमचंद ने उन कहानियों–उपन्यासों को सामाजिक समस्याओं का प्रस्थान बिंदु बनाया।

आपने अपने साहित्य के माध्यम से जीवन का सच्चा एवं यथार्थ चित्र उपस्थित कर के पीड़ित एवं शोषित जनता में जागरण का संदेश पहुँचाया, वह हमेशा महत्त्वपूर्ण रहेगा।

पाठ परिचय

प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद जी ने कथनी और करनी की विसंगति पर जबरदस्त व्यंग्य किया है। प्रायः ही हम उपदेश देने में चतुर होते हैं, परिवर्तन और क्रांति की बातें करते हैं, सामंती विलासिता को धिक्कारते हैं लेकिन अवसर आने पर हमारा मन उपदेश के अनुकूल आचरण नहीं करता। हमारा मन दूसरों का शोषण करते समय ग्लानि का अनुभव नहीं करता। तर्क, बुद्धि और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समझ हमारा साथ छोड़ देती है और हम उसी वृत्ति का अनुसरण करते हैं, जिसकी हम प्रायः निंदा करते होते हैं।

प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र जमींदार के पुत्र ईश्वरी के उच्च रहन–सहन उनके गरीबों के प्रति निर्दयतापूर्ण आचरण एवं सामंतशाही की तीव्र निंदा करता है लेकिन ज्यों ही उसे ईश्वरी के साथ गाँव जाने का अवसर मिलता है वह अपने व्यवहार में ईश्वरी से भी अधिक निरंकुश और निर्दयी हो जाता है। वह गरीबों का पक्षधर व्यक्ति थोड़े ही दिनों में सामन्ती मौज–शौक और वातावरण से प्रभावित हो जाता है कि लौटते समय रेल में सामान्य मानवीय गुणों को ठुकरा कर दीन–हीन मुसाफिर के साथ हृदय–शून्य एवं निर्मम व्यवहार करता है। उसका 'नशा' तब उतरता है जब अन्य मुसाफिरों के साथ उसका मित्र स्वयं ईश्वरी उसके अभद्र व्यवहार से रुष्ट होकर उसे फटकारता है।

मूल पाठ

ईश्वरी एक बड़े जमींदार का लड़का था और मैं एक गरीब क्लर्क का जिसके पास मेहनत–मजदूरी के सिवा और कोई जायदाद न थी। हम दोनों में परस्पर बहसें होती रहती थीं मैं जमींदारों की बुराई करता, उन्हें हिंसक पशु और खून चूसनेवाली जोंक और वृक्षों की चोटी पर फूलने वाला बंझा कहता। वह जमींदारों का पक्ष लेता; पर स्वभावतः उसका पहलू कुछ कमजोर होता था; क्योंकि उसके पास जमींदारों के अनुकूल कोई दलील न थी। यह कहना कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, छोटे–बड़े हमेशा होते रहते हैं और होते रहेंगे, लचर दलीलें थीं। किसी मानुषीय या नैतिक नियम से इस व्यवसाय का औचित्य सिद्ध करना कठिन था। मैं इस वाद–विवाद की गर्मा–गर्मी में अक्सर तेज हो जाता और लगने वाली बात कह जाता; लेकिन ईश्वरी हार कर भी मुस्कराता रहता था। मैंने उसे कभी गर्म होते नहीं देखा। शायद इसका कारण यह था कि वह अपने पक्ष की कमजोरी समझता था। नौकरों से वह सीधे मुँह बात न करता था। अमीरों में जो एक बेदर्दी और उद्दण्डता होती है, इसमें उसे भी प्रचुर भाग मिला था। नौकरों ने बिस्तर लगाने में जरा भी देर की, दूध जरूरत से ज्यादा गर्म या ठंडा हुआ, साइकिल अच्छी तरह साफ नहीं हुई, तो वह आपे से बाहर हो जाता। सुस्ती या बदतमीजी उसे जरा भी बर्दाश्त नहीं थी; पर दोस्तों से और विशेषकर मुझसे उसका व्यवहार सौहार्द और नम्रता से भरा होता था। शायद उसकी जगह मैं होता तो मुझमें भी वही कठोरताएँ पैदा हो जातीं, जो उसमें थीं, क्योंकि मेरा लोकप्रेम सिद्धांत पर नहीं, निजी दशाओं पर टिका हुआ था। वह मेरी जगह होकर भी शायद अमीर ही रहता, क्योंकि वह प्रकृति से विलासी और ऐश्वर्य–प्रिय था।

अब की दशहरे की छुट्टियों में मैंने निश्चय किया कि घर न जाऊँगा। मेरे पास किराये के लिए रुपये न थे और मैं घर वालों को तकलीफ नहीं देना चाहता था। जानता हूँ, वे मुझे जो कुछ देते हैं वह उनकी हैसियत से बहुत ज्यादा है। इसके साथ ही परीक्षा का ख्याल भी था। अभी बहुत कुछ पढ़ना बाकी था और घर जाकर कौन पढ़ता है बोर्डिंग–हाउस में भूत की तरह अकेले पड़े रहने को भी जी न चाहता था। इसलिए जब ईश्वरी ने मुझे अपने घर चलने का न्योता दिया तो मैं बिना आग्रह के राजी हो गया। ईश्वरी के साथ परीक्षा की तैयारी खूब हो जाएगी। वह अमीर होकर भी मेहनती और जहीन है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसने इसके साथ ही कहा – लेकिन भाई एक बात का ख्याल रखना वहाँ अगर जमींदारी की निंदा की तो मामला बिगड़ जायेगा और मेरे घर वालों को बुरा लगेगा। वह लोग तो असामियों पर इसी दावे से शासन करते हैं कि ईश्वर ने असामियों को उनकी सेवा के लिए ही पैदा किया है। असामी भी वही समझता है। अगर उसे सुझा दिया जाय कि जमींदार और असामी में कोई मौलिक भेद नहीं है, तो जमींदारों का कहीं पता न लगे।

मैंने कहा – ''तो क्या तुम समझते हो कि मैं वहां जाकर कुछ और हो जाऊँगा ?''

''हाँ, मैं तो यही समझता हूँ।''

''तुम गलत समझते हो।''

ईश्वरी ने इसका कोई जवाब न दिया। कदाचित् उसने इस मुआमले को मेरे विवेक पर छोड़ दिया। और बहुत अच्छा किया। अगर वह अपनी बात पर अड़ता तो भी अपनी जिद पकड़ लेता है।

सैकण्ड क्लास तो क्या मैंने कभी इण्टर क्लास में भी सफर न किया था। अब सैकण्ड क्लास में सफर करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गाड़ी तो नौ बजे रात को आती थी; पर यात्रा के हर्ष में हम शाम को ही स्टेशन जा पहुँचे। कुछ देर इधर–उधर सैर करने के बाद रिफ्रेशमेण्ट–रूम में जाकर हम लोगों ने भोजन किया। मेरी वेश–भूषा और रंग–ढंग से पारखी खानसामों को पहचानने में देरी न लगी कि मालिक कौन है और पिछलग्गू कौन; लेकिन न जाने क्यों मुझे उनकी गुस्ताखी बुरी लग रही थी। पैसे ईश्वरी की जेब से गये। शायद मेरे पिता को जो वेतन मिलता है, उससे ज्यादा इन खानसामों को इनाम–इकराम में मिल जाता हो। एक अठन्नी तो चलते समय ईश्वरी ने ही दी। फिर भी मैं उन सभी से उसी तत्परता और विनय की प्रतीक्षा करता था जिससे वे ईश्वरी की सेवा कर रहे थे। ईश्वरी के हुक्म पर तो सब दौड़ते हैं लेकिन मैं कोई चीज मांगता हूँ तो उतना उत्साह नहीं दिखाते। मुझे भोजन में कुछ स्वाद न मिला। वह भेद मेरे ध्यान को संपूर्ण रूप से अपनी ओर खींचे हुए था।

गाड़ी आयी, हम दोनों सवार हुए। खानसामे ने ईश्वरी को सलाम किया, मेरी ओर देखा भी नहीं।

ईश्वरी ने कहा–कितने तमीजदार हैं ये सब ? एक हमारे नौकर हैं कि कोई काम करने का ढंग नहीं।

मैंने खट्टे मन से कहा–इसी तरह अगर तुम अपने नौकरों को भी आठ आने रोज इनाम दिया करो तो इससे ज्यादा तमीजदार हो जायें।

''तो क्या तुम समझते हो, यह सब केवल इनाम के लालच में इतना अदब करते हैं।''

''जी नहीं, कदापि नहीं। तमीज और अदब तो इनके रक्त में मिल गया है।''

गाड़ी चली। डाक थी। प्रयाग से चली तो प्रतापगढ़ जा कर रुकी। एक आदमी ने हमारा कमरा खोला। मैं तुरन्त चिल्ला उठा–दूसरा दरजा है–सैकण्ड कलास है।

उस मुसाफिर ने डिब्बे के अंदर आकर मेरी ओर एक विचित्र उपेक्षा की दृष्टि से देखकर कहा–जी हाँ, सेवक भी इतना समझता है। और बीच वाली बर्थ पर बैठ गया। मुझे कितनी लज्जा आयी, कह नहीं सकता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भोर होते–होते हम लोग मुरादाबाद पहुँचे। स्टेशन पर कई आदमी हमारा स्वागत करने के लिए खड़े थे। दो भद्र पुरुष थे। पांच बेगार। बेगारों ने हमारा लगेज उठाया। दोनों भद्र पुरुष पीछे–पीछे चले। एक मुसलमान था रियासत अली, दूसरा ब्राह्मण था, रामहरख। दोनों ने मेरी ओर अपरिचित नेत्रों से देखा, मानों कह रहे हैं, तुम कौवे होकर हंस के साथ कैसे।

रियासत अली ने ईश्वरी से पूछा–यह बाबू साहब क्या आपके साथ पढ़ते हैं ?

ईश्वरी ने जबाब दिया – हाँ, साथ पढ़ते भी हैं, और साथ रहते भी हैं, यों कहिए कि आप ही के बदौलत मैं इलाहाबाद में पड़ा हुआ हूँ, नहीं कब का लखनऊ चला आया होता। अब की मैं इन्हें घसीट लाया। इनके घर से कई तार आ चुके थे, मगर मैंने इन्कारी जवाब दिलवा दिये। आखिरी तार तो अर्जेण्ट था, उसकी फीस चार आने प्रति शब्द थी; पर यहाँ से उसका जवाब भी इन्कारी ही गया।

दोनों सज्जनों ने मेरी ओर चकित नेत्रों से देखा। आतंकित हो जाने की चेष्टा करते हुए जान पड़े।

रियासत अली ने अद्र्ध शंका के स्वर में कहा – लेकिन आप बड़े सादे लिबास में रहते हैं।

ईश्वरी ने शंका निवारण की – महात्मा गांधी के भक्त हैं साहब। खद्दर के सिवा और कुछ पहनते ही नहीं। पुराने सारे कपड़े जला डाले यों कहो कि राजा हैं। ढाई लाख सालाना की रियासत है, पर आपकी सूरत देखो तो मालूम होता है, अभी अनाथालय से पकड़ कर आये हैं।

रामहरख बोले – अमीरों का ऐसा स्वभाव बहुत कम देखने में आता है। कोई भाँप नहीं सकता।

रियासत अली ने समर्थन किया – आपने महाराज चांगली को देखा होता तो दाँतों ऊँगली दबाते। एक गाढ़े की मिर्जई और चमरोधा जूता पहने बाजार में घूमा करते थे। सुनते हैं एक बार बेगार में पकड़े गये थे, और उन्हीं ने दस लाख से कालेज खोल दिया।

मैं मन में कटा जा रहा था; पर न जाने क्या बात थी कि यह सफेद झूठ उस वक्त मुझे हास्यास्पद न जान पड़ा। उसके प्रत्येक वाक्य के साथ मन में उस कल्पित वैभव के समीपतर आता जाता था।

मैं शहसवार नहीं हूँ। हां, लड़कपन में कई बार लद्द घोड़ों पर सवार हुआ हूँ। यहाँ देखा तो कलॉरास घोड़े हमारे लिए तैयार खड़े थे। मेरी तो जान ही निकल गयी। सवार तो हुआ; पर बोटियाँ कांप रही थीं। मैंने चेहरे पर शिकन न पड़ने दिया। घोड़े को ईश्वरी के पीछे डाल दिया। खैरियत तो यह हुई कि ईश्वरी ने घोड़ों को तेज न किया वरना शायद मैं हाथ–पाँव तुड़वाकर लौटता। सम्भव है ईश्वरी ने समझ लिया हो कि यह कितने पानी में है।

ईश्वरी का घर क्या था, किला था। इमामबाड़े का–सा फाटक, द्वार पर पहरेदार टहलता हुआ, नौकरों का कोई हिसाब ही नहीं, एक हाथी बँधा हुआ। ईश्वरी ने अपने पिता, चाचा, ताऊ आदि सबसे मेरा परिचय कराया और उसी अतिशयोक्ति के साथ। ऐसी हवा बांधी कि कुछ न पूछिए। नौकर–चाकर ही नहीं, घर के लोग भी मेरा सम्मान करने लगे देहात के अमींदार, लाखों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का मुनाफा मगर पुलिस कान्स्टेबिल को भी अफसर समझने वाले। कई महाशय तो मुझे हुजूर–हुजूर करने लगे।

जब जरा एकांत हुआ, तो मैंने ईश्वरी से कहा–तुम बड़े शैतान हो या, मेरी मिट्टी क्यों पलीद कर रहे हो ?

ईश्वरी ने सुदृढ़ मुस्कान के साथ कहा – इन गधों के सामने यही चाल जरूरी थी, वरना सीधे मुँह बोलते भी नहीं।

जरा देर बाद एक नाई हमारे पांव दबाने आया। कुँवर लोग स्टेशन से आये हैं, थक गये होंगे। ईश्वरी ने मेरी ओर इशारा करके कहा – पहले कुँवर साहब के पांव दबा।

मैं चारपाई पर लेटा हुआ था। मेरे जीवन में ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी ने मेरे पांव दबाये हों। मैं इसे अमीरों के चोंचले, रईसों का गधापन और बड़े आदमियों की मुटमरदी और जाने क्या–क्या कह कर ईश्वरी का परिहास किया करता, और आज मैं पोतड़ों का रईस बनने का स्वांग भर रहा था।

इतने में दस बज गये। पुरानी सभ्यता के लोग थे। नयी रोशनी अभी केवल पहाड़ की चोटी तक पहुँच पायी थी। अंदर से भोजन का बुलावा आया। हम स्नान करने चले। मैं हमेशा अपनी धोती खुद छांट लिया करता हूँ, मगर यहां मैंने ईश्वरी की ही भांति अपनी धोती भी छोड़ दी। अपने हाथों अपनी धोती छांटते शर्म आ रही थी। अंदर भोजन करने चले। होटल में जूते पहने मेज पर जा डटते थे। यहाँ पांव धोना आवश्यक था। कहार पानी लिये खड़ा था। ईश्वरी ने पांव बढ़ा दिये। कहार ने उसके पांव धोये। मैंने भी पांव बढ़ा दिये। कहार ने मेरे पांव भी धोये। मेरा वह विचार न जाने कहाँ चला गया था।

सोचा था, वहाँ देहात में एकाग्र होकर खूब पढ़ेंगे, पर यहाँ सारा दिन सैर–सपाटे में कट जाता था। कहीं नदी में बजरे पर सैर कर रहे हैं, कहीं मछलियों या चिड़ियों का शिकार खेल रहे हैं, कहीं पहलवानों की कुश्ती देख रहे हैं। कहीं शतरंज पर जमें हैं। ईश्वरी खूब अंडे मँगवाता और कमरे में स्टोव पर आमलेट बनते हैं। नौकरों का एक जत्था हमेशा घेरे रहता। अपने हाथ–पांव हिलाने की जरूरत नहीं। केवल जबान हिला देना काफी है। नहाने बैठे तो आदमी नहलाने को हाजिर, लेटे तो दो आदमी पंखा झलने को खड़े। मैं महात्मा गांधी का कुँवर चेला मशहूर था। भीतर से बाहर तक मेरी धाक थी नाश्ते में जरा भी देर होने पाये, कहीं कुँवर साहब नाराज न हो जायँ। बिछावन ठीक समय पर लग जाय, कुँवर साहब का सोने का समय आ गया। मैं ईश्वरी से भी ज्यादा नाजुक दिमाग बन गया था, या बनने पर मजबूर किया गया था। ईश्वरी अपने हाथ से बिस्तर बिछा ले, लेकिन कुँवर मेहमान अपने हाथों से कैसे अपना बिछावन बिछा सकते हैं ? उनकी महानता में बट्टा लग जाएगा।

एक दिन सचमुच यही बात हो गयी। ईश्वरी घर में था। शायद अपनी माता से कुछ बात चीत करने में देर हो गई। यहाँ दस बज गये मेरी आँखें नींद से झपक रही थीं; मगर बिस्तर कैसे लगाऊँ ? कुँवर जो ठहरा। कोई साढ़े ग्यारह बजे महरा आया। बड़ा मुँह लगा नौकर था। घर के धन्धों में मेरा बिस्तर लगाने की उसे सुध न रही। अब जो याद आयी तो भागा हुआ आया। मैंने ऐसी डांट बतायी कि उसने भी याद किया होगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ईश्वरी मेरी डांट सुनकर बाहर निकल आया और बोला.......तुमने बहुत अच्छा किया। यह सब हरामखोर इसी व्यवहार के योग्य हैं।

इसी तरह ईश्वरी एक दिन एक जगह दावत में गया हुआ था। शाम हो गयी; मगर लैम्प न जला। लैम्प मेज पर रक्खा हुआ था। दियासलाई भी वहीं थी, लेकिन ईश्वरी खुद कभी लैम्प न जलाता। फिर कुँवर साहब कैसे जलायें ? झुंझला रहा था। समाचार–पत्र आया रखा हुआ था। जी उधर लगा हुआ था पर लैम्प नदारद। दैवयोग से उसी वक्त मुंशी रियासत अली आ निकले मैं उन्हीं पर उबल पड़ा, ऐसी फटकार बतायी कि बेचारा उल्लू.......हो गया तुम लोगों को इतनी फिक्र भी नहीं है, लैम्प तो जलवा दो। मालूम नहीं ऐसे कामचोर आदमियों का यहाँ कैसे गुजर होता है। मेरे यहाँ घंटे भर निर्वाह न हो। रियासत अली ने काँपते हुए हाथों से लैम्प जला दिया।

वहाँ एक ठाकुर अक्सर आया करता था। कुछ मनचला आदमी था। महात्मा गांधी का परम भक्त। मुझे महात्मा जी का चेला समझ कर मेरा बड़ा लिहाज करता था; मुझे कुछ पूछते संकोच करता था। एक दिन मुझे अकेला देखकर आया और हाथ बांध कर बोला – सरकार तो गान्धी बाबा के चेले हैं न ? लोग कहते हैं कि यहाँ सुराज हो जाएगा तो जमींदार न रहेंगे।

मैंने शान जमायी – जमींदारों को रहने की जरूरत ही क्या है ? यह लोग गरीबों को खून चूसने के सिवा और क्या करते हैं ?

ठाकुर ने फिर पूछा – तो क्या सरकार, सब जमींदारों की जमीन छीन ली जायगी ?

मैंने कहा – बहुत से लोग तो खुशी से दे देंगे। जो लोग खुशी से न देंगे तो उनकी जमीन छीननी ही पड़ेगी। हम लोग तैयार बैठे हुए हैं। ज्यों ही स्वराज्य हुआ, अपने सारे इलाके असामियों के नाम हिबा कर देंगे।

मैं कुरसी पर पांव लटकाये बैठा था। ठाकुर मेरे पांव दबाने लगा। फिर बोला .... आजकल जमींदार लोग बड़ा जुल्म करते हैं सरकार! हमें भी हुजूर अपने इलाके में थोड़ी–सी जमीन दे दें, तो चल कर वहीं आपकी सेवा में रहें।

मैंने कहा – अभी तो मेरा कोई अख्तियार नहीं है भाई; लेकिन ज्यों ही अख्तियार मिला, मैं सबसे पहले तुम्हें बुलवाऊँगा। तुम्हें मोटर ड्राईवरी सिखा कर अपना ड्राईवर बना लूंगा।

सुना, उस दिन ठाकुर ने खूब भंग पी और अपनी स्त्री को खूब पीटा और गांव के महाजन से लड़ने पर तैयार हो गया।

छुट्टी इसी तरह समाप्त हुई और हम फिर प्रयाग चले। गांव के बहुत से लोग हम लोगों को पहुँचाने आये। ठाकुर तो हमारे साथ स्टेशन तक आया। मैंने भी अपना पार्ट खूब सफाई से खेला और अपनी कुबेरोचित विनय और देवत्व की मुहर हरेक हृदय पर लगा दी। जी तो चाहता था हरेक नौकर को अच्छा इनाम दूँ, लेकिन वह सामर्थ्य कहां थी ? वापसी टिकट था ही, केवल गाड़ी में बैठना था; गाड़ी आयी तो ठसाठस भरी हुई। दुर्गापूजा की छुट्टियाँ भोग कर सभी लोग लौट रहे थे। सैकण्ड क्लास में तिल रखने को जगह नहीं। इण्टर क्लास की हालत उससे भी बदतर। यही आखिरी गाड़ी थी। किसी तरह रुक न सकते थे। बड़ी मुश्किल से तीसरे दर्जे में जगह मिली। हमारे ऐश्वर्य ने वहां अपना रंग जमा लिया मगर मुझे उसमें बैठना बुरा लग रहा था। आये थे आराम से लेटे–लेटे जा रहे थे सिकुड़े हुए। पहलू बदलने की भी जगह नहीं थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कई आदमी पढ़े–लिखे भी थे। वे आपस में अँगरेजी राज्य की तारीफ करते जा रहे थे। एक महाशय बोले–ऐसा न्याय तो किसी राज्य में नहीं देखा। छोटे–बड़े सब बराबर। राजा भी किसी प्रकार अन्याय करें, तो अदालत उनकी भी गर्दन दबा देती है।

दूसरे सज्जन ने समर्थन किया – अरे साहब, आप बादशाह पर दावा कर सकते हैं। अदालत में बादशाह पर डिग्री हो जाती है।

एक आदमी, जिसकी पीठ पर बड़ा–सा गट्ठर बँधा था, कलकत्ते जा रहा था। कहीं गठरी रखने को जगह न मिलती थी। पीठ पर बाँधे हुए था। इससे बेचैन होकर बार–बार द्वार पर खड़ा हो जाता। मैं द्वार के पास ही बैठा हुआ था। उसका बार–बार आकर मेरे मुँह को अपनी गठरी से रगड़ना मुझे बहुत बुरा लग रहा था। एक तो हवा यों ही कम थी, दूसरे उस गँवार का आकर मेरे मुँह पर खड़ा हो जाना मानो मेरा गला दबाना था। मैं कुछ देर तक जब्त किये बैठा रहा। एकाएक मुझे क्रोध आ गया। मैंने उसे पकड़ कर पीछे धकेल दिया और दो तमाचे जोर–जोर से लगाये।

उसने आंख निकाल कर कहा–क्यों मारते हो बाबू जी ? हमने भी किराया दिया है। मैंने उठ कर दो–तीन तमाचे और जड़ दिये।

गाड़ी में तूफान आ गया। चारों ओर से मुझ पर बौछार पड़ने लगी।

''अगर इतने नाजुक–मिजाज हो तो अव्वल दर्जे में क्यों नहीं बैठे।''

''कोई बड़ा आदमी होगा तो अपने घर का होगा। मुझे इस तरह मारते, तो दिखा देता।''

''क्या कसूर किया था बेचारे ने ? गाड़ी में सांस लेने की जगह नहीं खिड़की पर जरा सांस लेने खड़ा हो गया तो उस पर इत्ता क्रोध। अमीर होकर क्या आदमी इंसानियत बिलकुल खो देता है!''

''यह अँगरेजी राज है जिसका आप बखान कर रहे थे।''

एक ग्रामीण बोला – दफ्तर मां घुस पावत नाहीं, ओपे इत्ता मिजाज ?

ईश्वरी ने अँगरेजी में कहा – What an idiot you are, Bir!

और मेरा नशा अब कुछ–कुछ उतरता हुआ मालूम होता था।

•••

शब्दार्थ

जहीन–समझदार, बुद्धिमान/असामी–जमींदार से लगान पर खेत जातने के लिए लेने वाला व्यक्ति/ इंसानियत–मानवीयता/

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''एक आदमी ने हमारा कमरा खोला। मैं तुरंत चिल्ला उठा दूसरा दर्जा है सैकण्ड क्लास है।'' ईश्वरी के मित्र के पीछे चिल्लाने का भाव था ?

(क) अहंकार (ख) क्रोध

(ग) हीनता (घ) काईयापन ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'नशा' कहानी में किस विसंगति पर व्यंग्य किया गया ?

   (क) उपदेशात्मकता (ख) कथनी और करनी में अंतर

   (ग) शोषण चक्र (घ) जमींदारी प्रथा ( )

   उत्तरमाला– (1) क (2) ख

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'नशा' कहानी के कहानीकार कौन हैं ?
2. ईश्वरी के मित्र के पिता क्या काम करते थे ?
3. ईश्वरी के मित्र के लिए लैम्प किसने जलाया ?
4. प्रेमचंद का जन्म कहाँ हुआ ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अब की दशहरे की छुट्टियों में ईश्वरी का मित्र घर क्यों नहीं जाना चाहता था ?
2. ईश्वरी ने अपने नौकरों के सामने मित्र का बढ़ा–चढ़ा कर परिचय क्यों दिया ?
3. ईश्वरी का मित्र उसकी आलोचना क्यों करता था ?
4. प्रेमचंद की इस कहानी का मूल आशय स्पष्ट कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. ईश्वरी और उसके मित्र की चारित्रिक विशेषताओं को बताइए।
2. गाँव जाते ही ईश्वरी के मित्र के स्वभाव में आए परिवर्तन का वर्णन कीजिए।

•••

यह भी जानें

विसर्ग (1)

(क) संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे शब्द यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे – 'दुःखानुभूति' में। यदि उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा। जैसे – 'दुख–सुख के साथी'।

(ख) तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है। जैसे – अतः, पुनः, स्वतः, प्रायः, पूर्णतः, मूलतः, अंततः, वस्तुतः, क्रमशः आदि।

(ग) 'ह' का अघोष उच्चरित रूप विसर्ग है, अतः उसके स्थान पर (स) घोष 'ह' का लेखन किसी भी हालत में न किया जाए। (अतः, पुनः, आदि के स्थान पर अतह, पुनह आदि लिखना अशुद्ध वर्तनी का उदाहरण माना जाएगा)।

(घ) दुःसाहस/दुस्साहस, निःशब्द/निश्शब्द के उभय रूप मान्य होंगे। इनमें द्वित्व वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14. भारतीय नारी

• स्वामी विवेकानंद

लेखक परिचय

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को मकर संक्रांति के दिन कोलकाता में हुआ। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। बाल्यकाल में उनका नाम नरेन्द्र था। वे अत्यंत मेधावी और जिज्ञासु थे। तरुणावस्था में वे दक्षिणेश्वर काली मंदिर के उपासक रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए और वहाँ से उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। 1887 में रामकृष्ण परमहंस के स्वर्गारोहण के बाद उन्होंने संन्यास धारण किया। वे परिव्राजक बन देश भर में भ्रमण करते रहे। इस अवधि में बहुत सूक्ष्मता से भारत का अध्ययन किया जो उनके भाषणों में व्यक्त होता था। वे धर्म को भारत का प्राण–तत्त्व मानते थे। कन्याकुमारी में श्रीपाद शिला पर तीन दिन और तीन रात तक ध्यानावस्था में उन्हें भारत का साक्षात्कार हुआ।

11 सितम्बर, 1893 में, अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व–धर्म–सम्मेलन में विवेकानंद जी हिन्दू–धर्म के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए और वहाँ उनकी ओजस्वी वाणी का इतना प्रभाव हुआ कि विश्वभर में भारत के प्रति दुनिया की दृष्टि ही बदल गई। वे कई महीनों तक विदेशों में रहकर भारतीय संस्कृति और समसामयिक वैश्विक परिदृश्य पर भाषण देते रहे। भारत लौटने पर आसेतु–हिमाचल उनका भव्य अभिनंदन हुआ। परतंत्र और दुखी भारतीय जन समाज को उनमें अपना उद्घाटक दिखाई दिया। उनके भाषणों में आधुनिक भारत के अभ्युदय के सभी बीजमंत्र विद्यमान हैं। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और संन्यासियों के नव कर्तव्यों का प्रतिपादन किया। उनसे प्रेरणा लेकर अनेक साहित्यकारों ने अपने लेखन का परिष्कार किया। प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार शरत्चन्द्र उनके शिष्य थे। वे संस्कृत भाषा की पुनर्प्रतिष्ठा के पक्षधर थे। वे सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के राष्ट्र–नायक थे। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में ''यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िए। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।''

पाठ परिचय

यह पाठ स्वामी विवेकानन्द के एक साक्षात्कार के अंश से है जो प्रबुद्ध भारत समाचार पत्र में, दिसम्बर 1898 के अंक में प्रकाशित हुआ था। पाठ हमें एकनाथ रानाडे के संकलन से प्राप्त हुआ, जो उन्होंने सन् 1963 में प्रकाशित करवाया था। पत्रकार के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने भारतीय नारी के उद्धार के संबंध में भारतीय दृष्टि का संकेत किया है, जो आधुनिक और प्रगतिशील होने के साथ–साथ पश्चिम के अंधानुकरण पर चल रहे नारी–आंदोलनों के प्रति चेतावनी भी है।

साक्षात्कार में में स्वामी विवेकानन्द का संदेश स्पष्ट है, ''भारत और भारतीयता में विश्वास रखो। तेजस्वी बनो। मौलिकता को क्षति पहुँचाए बिना, देशोद्धार के कार्य में जुट जाओ।'' उनके

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विचारों में प्राचीन भारतीय आदर्शों की, आधुनिक व्याख्या चमत्कृत करने वाली है। पाठ का उत्तरार्ध, उनके न्यूयार्क के एक भाषण से उद्धृत है।

मूल पाठ

आखिर एक रविवार को बड़े सवेरे ही मैं सम्पादक महोदय का आदेश पालन करने में समर्थ हुआ। भारतीय नारियों की अवस्था और उनके भविष्य के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का मतामत जानने के लिए मैंने उनसे हिमालय की एक सुन्दर उपत्यका में भेंट की।

मैंने जब स्वामीजी को अपने आने का उद्देश्य बतलाया तो वे बोले, ''चलो थोड़ा टहल आयें।'' हम लोग उसी समय बाहर निकल पड़े। अहा! कैसा मनोहर दृश्य था। ऐसा दृश्य संसार में शायद ही हो।

कहीं धूप और कहीं छाया से ढँके मार्गों को काटते हुए हम शान्तिपूर्ण ग्रामों में चले जा रहे थे। कहीं ग्रामीण बच्चे आनन्द से खेलकूद कर रहे थे, और कहीं चारों ओर सुनहले खेत लहलहा रहे थे। ऊँचे–ऊँचे वृक्ष ऐसे दीखते थे, मानो वे नीलगगन को पार कर उसके परे चले जाना चाहते हों। खेतों में कहीं पर कुछ कृषक–बालाएँ हाथों में हँसिया लिए शीत ऋतु के लिए बाजरे के भुट्टे काटकर इकट्ठा कर रही थीं, तो अन्य कहीं सेवों की एक सुन्दर वाटिका दिखाई देती थी, जिसमें वृक्षों के नीचे लाल फलों के ढेर बड़े ही सुहावने लगते थे। फिर कुछ क्षण बाद ही हम खुले मैदान में आ गए और हमारे सामने हिमाच्छादित शुभ्र शिखर, अग्रमाला को चीरकर, अद्भुत सौन्दर्य के साथ विराजमान् थे।

अन्त में स्वामीजी ने मौन भंग करते हुए कहा, ''आर्यों और सेमेटिक लोगों के नारी–सम्बंधी आदर्श सदैव एक–दूसरे के बिल्कुल विपरीत रहे हैं। सेमेटिक लोग स्त्रियों की उपस्थिति को उपासना–विधि में घोर विघ्नस्वरूप मानते हैं। उनके अनुसार स्त्रियों को किसी प्रकार के धर्म–कर्म का अधिकार नहीं है, यहाँ तक कि आहार के लिए पक्षी मारना भी उनके लिए निषिद्ध है। आर्यों के अनुसार तो सहधर्मिणी के बिना पुरुष कोई धार्मिक कार्य नहीं कर सकता।

ऐसी अप्रत्याशित और स्पष्ट बात से मैं तो आश्चर्यचकित हो गया। मैंने पूछा, ''किन्तु स्वामीजी, क्या हिन्दू-धर्म आर्य-धर्म का अंग विशेष नहीं है ?

स्वामीजी ने शान्त स्वर में कहा, ''आधुनिक हिन्दू धर्म अधिकांशतः एक पौराणिक धर्म है, जिसका उद्गम बौद्धकाल के पश्चात हुआ है। दयानन्द सरस्वती ने यह दर्शाया कि यद्यपि गार्हपत्य अग्नि में आहुति प्रदान करने की जो वैदिक क्रिया है, उसके अनुष्ठान में सहधर्मिणी की उपस्थिति नितांत अनिवार्य है, पर तो भी वह शालग्रामशिला अथवा गृह–देवता की मूर्ति को स्पर्श नहीं कर सकती; क्योंकि इस प्रकार की पूजा का प्रचलन पौराणिक काल के उत्तरार्ध से हुआ है।''

''अतः, आपके अनुसार हमारे देश में पाया जाने वाला स्त्री–पुरुष के अधिकारों का भेद पूर्णतः बौद्धधर्म के प्रभाव के कारण है ?''

हाँ! जहाँ कहीं भी यह भेद पाया जाता है, वहाँ तो मैं ऐसा ही सोचता हूँ। पाश्चात्य आलोचना की आकस्मिक बाढ़ से प्रभावित होकर और पाश्चात्य नारियों की तुलना में अपने देश की नारियों की अवस्था भिन्न देखकर हम भारत में नारी के प्रति असमानता के उनके आरोप को

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चुपचाप स्वीकार न कर लें। विगत कई सदियों से भारत में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण होता रहा है, जिससे हम स्त्रियों का विशेष संरक्षण करने को बाध्य हुए हैं। इस एक तथ्य के, न कि स्त्री जाति के प्रति हीन दृष्टि के मिथ्या आरोप के प्रकाश में हम अपनी प्रथाओं के यथार्थ स्वरूप को समझ सकेंगे।

''स्वामीजी, तो क्या आप भारतीय स्त्री की वर्तमान दशा से पूर्णतः संतुष्ट हैं ?''

''कदापि नहीं। पर स्त्रियों के सम्बंध में हमारा हस्तक्षेप करने का अधिकार बस उनको शिक्षा देने तक ही सीमित रहना चाहिए। उनमें ऐसी योग्यता ला देनी होगी जिससे वे अपनी समस्याओं को स्वयं ही अपने ढंग से सुलझा सकें। अन्य कोई उनके लिए यह कार्य नहीं कर सकता, और करने का प्रयत्न भी उचित नहीं है। हमारी भारतीय स्त्रियाँ अपनी समस्याओं को हल करने में संसार के किसी भी भाग की स्त्रियों से पीछे नहीं हैं।''

'' स्वामीजी, क्या आप बतलाएँगे कि हमारे देश में बौद्धधर्म के द्वारा यह दोष किस प्रकार पैदा हुआ जिसका अभी आपने उल्लेख किया ?''

''इस दोष का जन्म बौद्धधर्म के पतन–काल में हुआ। प्रत्येक आन्दोलन किसी असाधारण विशेषता के कारण ही संसार में सफलता प्राप्त कर सकता है, पर जब उसका पतन होता है, तब उसकी यह अभिमानास्पद विशेषता ही उसकी दुर्बलता का एक मुख्य उपादान बन जाती है। नर श्रेष्ठ भगवान् बुद्ध में संगठन करने की अद्भुत शक्ति थी, और इसी शक्ति के बल पर उन्होंने संसार को अपना अनुगामी बनाया था। किंतु, उनका धर्म केवल संन्यासियों के लिए ही उपयोगी था। अतः, उसका एक कुफल यह हुआ कि संन्यासी की वेश–भूषा तक सम्मानित होने लगी। फिर उन्होंने सर्वप्रथम मठ–प्रथा अर्थात् धर्म–संघ में रहने की प्रथा का प्रवर्तन किया। इसके लिए उन्हें बाध्य होकर स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा निम्न स्थान देना पड़ा; क्योंकि प्रमुख भिक्षुणियाँ कुछ विशिष्ट मठ–अध्यक्षों की अनुमति के बिना किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में हाथ नहीं डाल सकती थीं। इससे उनके तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति तो अवश्य हुई, अर्थात् उनके धर्म–संघ की एकसूत्रता बनी रही, किन्तु उसके दूरगामी परिणाम अनिष्ट हुए।''

''परन्तु स्वामीजी, संन्यास धर्म तो वेदविहित है।''

''अवश्य, संन्यास वेद–प्रतिपादित है, पर वहाँ स्त्री–पुरुष का कोई भेद नहीं किया गया है। क्या तुम्हें स्मरण है कि विदेहराज जनक की राजसभा में किस प्रकार धर्म के गूढ़ तत्त्वों पर महर्षि याज्ञवल्क्य से वाद–विवाद हुआ था ? इस वाद–विवाद में ब्रह्मवादिनी (गार्गी) ने प्रधान भाग लिया था। उसने कहा था, ''मेरे दो प्रश्न मानो कुशल धनुर्धारी के हाथ में दो तीक्ष्ण बाण हैं।'' वहाँ पर उसके स्त्री होने के सम्बन्ध में कोई प्रसंग तक नहीं उठाया गया है। तुम्हें विदित ही होगा कि प्राचीन गुरुकुलों में बालक और बालिकाएँ समान रूप से शिक्षा ग्रहण करती थीं। इससे अधिक साम्यभाव और क्या हो सकता है ? हमारे संस्कृत नाटकों को पढ़कर देखा ? शकुन्तला का आख्यान पढ़ो, और फिर देखो, टेनिसन की 'राजकुमारी' में हमारे लिए क्या कोई नई शिक्षाप्रद बात प्राप्त हो सकती है ?''

'' स्वामीजी! आपमें हमारी अतीत–गौरव–गरिमा को इतने सुन्दर ढंग से प्रकट करने की बड़ी अद्भुत क्षमता है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वामीजी शान्तिपूर्वक बोले, ''सम्भव है, इसका कारण यह हो कि मैंने पृथ्वी के दोनों गोलाद्र्धों का पर्यटन किया है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री–जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है, जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती। पाश्चात्य स्त्रियाँ ऐसे कई कानूनी बंधनों में जकड़ी हुई हैं, जिनसे भारतीय स्त्रियाँ सर्वथा मुक्त एवं अपरिचित हैं। भारतीय समाज में निश्चय ही दोष और अपवाद दोनों हैं, पर यही स्थिति पाश्चात्य समाजों की भी है। हमें यह कभी न भूलना चाहिए कि संसार के सभी भागों में प्रीति, कोमलता और साधुता को अभिव्यक्त करने के प्रयत्न चल रहे हैं, और विभिन्न जातीय प्रथाएँ इन्हीं को यथासम्भव प्रकट करने की प्रणाली मात्र हैं। जहाँ तक गृहस्थ धर्म का संबंध है, मैं बिना किसी संकोच के कह सकता हूँ कि भारतीय प्रणाली में अन्य देशों की अपेक्षा अनेक सद्गुण विद्यमान हैं।''

'' स्वामीजी, तो क्या भारतीय स्त्री–जीवन के सम्बंध में हम इतने संतुष्ट हैं कि हमारे समक्ष उसकी कोई भी समस्याएँ नहीं हैं ?''

''क्यों नहीं, बहुत–सी समस्याएँ हैं – और ये समस्याएँ बड़ी गम्भीर हैं; परन्तु इनमें से कोई ऐसी नहीं है, जो 'शिक्षा' के द्वारा हल न हो सके। पर हाँ, शिक्षा की सच्ची कल्पना हममें से कदाचित् ही किसी को हो।''

''स्वामीजी, शिक्षा की आप क्या परिभाषा देते हैं ?''

स्वामीजी ने स्मित–हास्य से कहा, ''मैं परिभाषाएँ देने के विरुद्ध हूँ। पर इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि सच्ची शिक्षा वह है, जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह केवल शब्दों का रटना मात्र नहीं है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है – व्यक्ति में योग्य कर्म की आकांक्षा एवं उसको कुशलतापूर्वक करने की पात्रता उत्पन्न करना। हम चाहते हैं कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाये, जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली–भाँति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई तथा मीराबाई आदि भारत की महान् देवियों द्वारा चलाई गई परम्परा को आगे बढ़ा सकें एवं वीर प्रसूता बन सकें। भारत की स्त्रियाँ पवित्र और त्यागमूर्ति हैं; क्योंकि उनके पास वह बल और शक्ति है, जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा के चरणों में सर्वस्वार्पण करने से प्राप्त होता है।''

'' स्वामीजी, इससे प्रतीत होता है कि आपके विचारानुसार शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का भी समावेश होना चाहिए।''

स्वामीजी ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, ''मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि धर्म शिक्षा का मेरुदण्ड ही है। हाँ, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यहाँ धर्म से मेरा मतलब मेरा, तुम्हारा या अन्य किसी का उपासना–मत नहीं है। मेरे मत से, अन्य विषयों के समान इस संबंध में भी शिक्षक को छात्र के भाव और धारणा के अनुसार शिक्षा देना प्रारम्भ करना चाहिए तथा उसे उन्नत करने के लिए ऐसा सहज पथ दिखा देना चाहिए, उसे सबसे कम बाधाओं का सामना करना पड़े।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''क्या ब्रह्मचर्य–पालन को अत्यधिक धार्मिक महत्त्व देने का अर्थ मातृत्व और पत्नीत्व को समाज में उनके सर्वोच्च स्थान से वंचित कर, वहाँ उस स्त्रीवर्ग को प्रतिष्ठित करना नहीं है, जो पवित्र दायित्वों से परे रहती हैं ?

''तुम्हें स्मरण रहना चाहिए कि हमारे धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों के लिए ब्रह्मचर्य की महिमा समान रूप से बतायी गई है। तुम्हारे प्रश्न से यह भी ज्ञात होता है कि तुम्हारे मन में कुछ भ्रम फैला हुआ है। हिन्दू धर्म में मानवात्मा का केवल एक ही कर्तव्य बतलाया गया है और वह है इस अनित्य और नश्वर जगत् में नित्य एवं शाश्वत पद की प्राप्ति। उसकी प्राप्ति के लिए कोई एक ही बँधा हुआ मार्ग नहीं है। विवाह हो या ब्रह्मचर्य, पाप हो या पुण्य, ज्ञान हो या अज्ञान–इनमें से प्रत्येक की सार्थकता हो सकती है, यदि वह इस चरम लक्ष्य की ओर ले जाने में सहायता करे। बस यहीं पर हिन्दू धर्म और बौद्धधर्म में महान् अन्तर है; क्योंकि बौद्ध धर्म में जीवन का प्रधान लक्ष्य और वह भी मोटे तौर पर केवल एक ही मार्ग से बाह्य जगत् की क्षणिकता का अनुभव कर लेना मात्र है। क्या तुम्हें महाभारत में वर्णित उस युवक योगी का वृत्तांत विदित है, जिसने अपने क्रोध से उत्पन्न अपनी प्रबल मानसिक शक्ति के प्रभाव से एक कौए और बगुले को भस्म कर यौगिक शक्तियों के प्रदर्शन में धन्यता मानी थी ? क्या तुम्हें स्मरण है कि एक दिन यही योगी किसी नगर में पहुँचकर देखता है कि एक स्त्री अपने रोगी पति की सेवा–सुश्रुषा में निरत है, तथा एक धर्म नामक कसाई माँ को बेच रहा है, परन्तु इन दोनों ने अपने कर्तव्य का पूरा–पूरा पालन करके पूर्ण ज्ञान का साक्षात्कार कर लिया था ?''

''तो स्वामीजी, आपका इस देश की स्त्रियों के लिए क्या सन्देश है ?''

''वही, जो पुरुषों के लिए है। भारत और भारतीय धर्म के प्रति विश्वास और श्रद्धा रखो। तेजस्विनी बनो, हृदय में उत्साह भरो, भारत में जन्म लेने के कारण लज्जित न हो, वरन् उसमें गौरव का अनुभव करो और स्मरण रखो कि यद्यपि हमें दूसरे देशों से कुछ लेना अवश्य है, पर हमारे पास दुनिया को देने के लिए दूसरे की अपेक्षा सहस्रगुना अधिक है।''

भारतीय और पाश्चात्य नारी

न्यूयार्क में भाषण देते हुए एक समय स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था – ''मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, यदि भारतीय स्त्रियों की ऐसी ही बौद्धिक प्रगति हो, जैसी इस देश में हुई है; परन्तु वह उन्नति तभी अभीष्ट है, जब वह उनके पवित्र जीवन और सतीत्व को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए हो। मैं अमेरिका की स्त्रियों के ज्ञान और विद्वत्ता की बड़ी प्रशंसा करता हूँ, परन्तु मुझे यह अनुचित दिखता है कि आप बुराइयों को भलाइयों का रंग देकर छिपाने का प्रयत्न करें। बौद्धिक विकास से ही मानव का परम कल्याण सिद्ध नहीं हो सकता। भारत में नीतिमत्ता और आध्यात्मिक उन्नति को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है, और हम उनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं। यद्यपि भारतीय स्त्रियाँ उतनी शिक्षा सम्पन्न नहीं हैं, तथापि उनका आचार–विचार अधिक पवित्र होता है। प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति के अतिरिक्त सभी पुरुषों को पुत्रवत् समझे।

प्रत्येक पुरुष को चाहिए कि वह अपनी पत्नी के अतिरिक्त सभी स्त्रियों को मातृवत् समझे। जब मैं इस आचरण को, जिसे आप नारी–सम्मान का भाव कहते हो, अपने चारों ओर देखता हूँ तब मेरा हृदय क्षोभ से भर जाता है। जब तक आप स्त्री–पुरुष के भेद को भूलकर प्रत्येक व्यक्ति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में मानवता का दर्शन नहीं करते, तब तक इस देश की स्त्रियों की यथार्थ उन्नति नहीं हो सकती। इस दशा को प्राप्त किये बिना तो आपकी स्त्रियाँ खिलौने से अधिक और कुछ भी नहीं हैं, और इसी कारण यहाँ इतने विवाह–विच्छेद होते हैं। यहाँ के पुरुष स्त्रियों के सम्मुख झुकते और उन्हें आसन प्रदान करते हैं; परन्तु एक क्षण के उपरांत वे उनकी चापलूसी करने लगते हैं; वे उनके नख–शिख सौंदर्य की प्रशंसा करना आरंभ कर देते हैं। आपको ऐसा करने का क्या अधिकार है ? कोई पुरुष इतनी दूर तक जाने का साहस ही कैसे कर पाता है ? और यहाँ की स्त्रियाँ उसको सहन भी कैसे कर लेती हैं ? इस प्रकार के आचरण से मनुष्य में निम्नतर भावों का उद्रेक होता है, उससे उच्च आदर्श की प्राप्ति सम्भव नहीं।

हमें स्त्री–पुरुष के भेद का विचार मन में नहीं रखना चाहिए, केवल यही चिन्तन करना चाहिए कि हम सभी मानव हैं और परस्पर एक–दूसरे के प्रति सद्व्यवहार और सहायता करने के लिए उत्पन्न हुए हैं। हम यहाँ देखते हैं कि 'यों ही किसी नवयुवक और नवयुवती को अकेले होने का अवसर मिला, त्यों ही वह नवयुवक उस नवयुवती के रूप–लावण्य की प्रशंसा आरंभ कर देता है, और किसी स्त्री को विधिवत् पत्नी रूप में अंगीकार करने से पूर्व ही वह दो सौ स्त्रियों से प्रेमाचार कर चुका होता है। मैं यदि इन विवाहेच्छुकों में से एक होता, तो बिना किसी आडंबर के ही किसी का प्रिय पात्र बन जाता।

जब मैं भारतवर्ष में था और इन चीजों को केवल दूर से देखता–सुनता था, तब मुझे बताया गया कि उनमें कोई दोष नहीं है, यह केवल मनोविनोद है। उस समय मैंने उस पर विश्वास कर लिया था। तब से अब तक मुझे बहुत यात्रा करने का अवसर आया है, और मेरा दृढ़–विश्वास हो गया है कि यह अनुचित है, यह अत्यंत दोषपूर्ण है। केवल आप पाश्चात्यवासी ही अपनी आँख बन्दकर इसे निर्दोष कहते हैं। पाश्चात्य राष्ट्रों का अभी यौवन है, साथ–ही–साथ वे अनभिज्ञ, चंचल और धनवान् हैं। जब इन गुणों में से किसी एक के प्रभाव में ही मनुष्य कितना क्या अनर्थ कर डालता है तब यहाँ ये तीनों चारों एकत्र हों वहाँ कितना भीषण अनर्थ हो सकता है? वहाँ को तो फिर कहना ही क्या। अतः सावधान!

•••

शब्दार्थ

उपत्यका–पर्वत के पास की भूमि, तराई/ हिमाच्छादित–बर्फ से ढका हुआ/ सेमेटिक–मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग जिसमें यहूदी, अरब, मिस्री आदि जातियाँ हैं/ अप्रत्याशित–अकस्मात होने वाला/ उपादान–वह कारण जो स्वयं कार्य रूप में परिणित हो जाय/ अनुगामी–अनुसरण करने वाला/ अनिष्ट–अमंगल, हानि/ नश्वर–नष्ट हो जाने वाला/ सतीत्व–पातिव्रत्य/ नीतिमत्ता–नीति पारायणता/ मातृवत्–माँ के समान/ अनभिज्ञ–अपरिचित।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वेदविहित से तात्पर्य है –

(क) वेद विरुद्ध (ख) वेद के अनुसार

(ग) वेद द्वारा निर्धारित (घ) वेद निरपेक्ष ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. 'संघमित्रा' कौन थी ?
   (क) वेदकालीन एक विदुषी (ख) सम्राट अशोक की पुत्री
   (ग) गौतम–बुद्ध की पुत्री (घ) कनिष्क की पत्नी ( )
   उत्तरमाला– (1) ग (2) ख

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. याज्ञवल्क्य से वाद–विवाद करने वाली नारी कौन थी ?
2. बौद्ध धर्म का प्रधान लक्ष्य क्या बताया गया है ?
3. परस्त्री के स्थूल सौंदर्य की प्रशंसा करने में कैसे भावों का उद्रेक होता है ?
4. 'शकुन्तला' आख्यान पर किस संस्कृत कवि ने नाटक लिखा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आर्यों और सेमेटिक लोगों के नारी संबंधी आदर्शों में क्या अंतर रहा है ?
2. स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा की क्या परिभाषा दी ?
3. किन गुणों के समुच्चय से मनुष्य अनर्थ कर डालता है ?
4. स्वामीजी का स्त्रियों के लिए क्या संदेश है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. ब्रह्मचर्य की महिमा पर एक आलेख लिखिए।
2. स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारतीय नारी में कौन–कौन से सद्गुण विद्यमान हैं ?
3. ''प्रत्येक पुरुष अन्य स्त्री को मातृवत् समझे।'' इस कथन के पीछे का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
4. पाश्चात्य नारी की स्वतंत्रता से उत्पन्न अच्छी और बुरी बातों को समझाइए।

•••

यह भी जानें

विसर्ग (2)

(क) निःस्वार्थ मान्य है। (निस्स्वार्थ उचित नहीं होगा)।

(ख) निस्तेज, निर्वचन, निश्चल आदि शब्दों में विसर्ग वाला रूप (निःतेज, निःवचन, निःचल) न लिखा जाए।

(ग) अंतःकरण, अंतःपुर, दुःस्वप्न, निःसंतान, प्रातःकाल आदि शब्द विसर्ग के साथ ही लिखे जाएँ।

(घ) तद्भव/देशी शब्दों में विसर्ग का प्रयोग न किया जाए। इस आधार पर छः लिखना गलत होगा। छह लिखना ही ठीक होगा।

(ङ) प्रायद्वीप, समाप्तप्राय आदि शब्दों में तत्सम रूप में भी विसर्ग नहीं है।

(च) विसर्ग को वर्ण के साथ मिलाकर लिखा जाए, जबकि कोलन चिह्न (उपविराम :) शब्द से कुछ दूरी पर हो। जैसे – अतः, यों है :–

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

15. गद्‌य साहित्य का आविर्भाव

• आचार्य रामचंद्र शुक्ल

लेखक परिचय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 में अगौना ग्राम में हुआ। हिंदी–आलोचना के आधार–स्तंभ, आचार्य शुक्ल का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी है। वे एक साथ ही साहित्येतिहासकार, मूर्धन्य हिंदी–काव्यशास्त्री, श्रेष्ठ पाठालोचक तथा उच्चकोटि के निबंधकार हैं। यही नहीं वे वरेण्य कवि–साहित्यकार के समानांतर प्रामाणिक अनुवादक भी हैं।

जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग खुला तब महामना मालवीय जी ने बाबू श्यामसुंदर दास को उस विभाग का अध्यक्ष बनाया तथा आचार्य शुक्ल को प्राध्यापक के पद पर नियुक्त किया। शुक्ल जी कम आयु में ही पुस्तकें लिखने लगे थे, आर्थिक कठिनाई के कारण जो पुस्तक वे लिखते थे उसे नागरी प्रचारिणी सभा को एक ही बार द्रव्य लेकर दे देते थे।

यद्‌यपि शुक्ल जी की शिक्षा इंटर तक ही हुई थी किंतु वे महान प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। उनके समान समालोचक, निबंधकार तथा गद्‌य लेखक दुर्लभ है। उनकी तुलसी, जायसी तथा सूर की समालोचना, हिंदी साहित्य का इतिहास तथा चिंतामणि में संगृहीत उनके निबन्ध अप्रतिम हैं। आचार्य जी मुख्यतः गद्‌य के महान लेखक थे। किन्तु उन्होंने 'लाइट ऑफ एशिया' नामक पुस्तक का ब्रजभाषा में अनुवाद करके 'बुद्धचरित' जैसी महान कृति का सृजन किया। उन्होंने बंगला भाषा के ऐतिहासिक उपन्यास 'शशांक' का हिंदी में अनुवाद किया।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ आचार्य शुक्ल की कृति 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के आधुनिक काल (सं० 1900 से 1970) के द्‌वितीय प्रकरण 'गद्‌य साहित्य का आविर्भाव' से लिया गया है। गद्‌य साहित्य लेखन के उस संक्रमण काल की परिस्थितियों के प्रति आचार्य शुक्ल की सूक्ष्म दृष्टि का ज्ञान होने के साथ–साथ तत्कालीन साहित्यिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। पाठ में उस समय की शिक्षोपयोगी पुस्तकें, राजा शिवप्रसाद की भाषा, राजा लक्ष्मण सिंह के अनुवादों की भाषा, फ्रेडरिक पिंकाट का हिंदी प्रेम, बाबू नवीनचन्द राय की हिंदी सेवा, हिंदी गद्‌य प्रसार में आर्य समाज का योगदान, पंडित श्रद्धाराम की हिंदी सेवा आदि की जानकारी समेटने का प्रयत्न हुआ है। भारतेंदु से पूर्व हिंदी गद्‌य की दिशा तय होने के साथ गद्‌य भाषा के स्वरूप निर्माण पर रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है। इस काल–खंड को गद्‌य साहित्य की प्रसव पीड़ा के काल के रूप में जाना जा सकता है। आचार्य शुक्ल ने यहाँ एक चेतावनी भी दे डाली है कि भारतीय भाषाओं को संस्कृत के दूर करना और विदेशी शब्दों की घुसपैठ स्वस्थ परंपरा नहीं है।

मूल पाठ

किस प्रकार हिंदी के नाम से नागरी अक्षरों में उर्दू ही लिखी जाने लगी थी, इसकी चर्चा 'बनारस अखबार' के संबंध में कर आए हैं। संवत् 1913 में अर्थात् बलवे के एक वर्ष पहले राजा शिवप्रसाद शिक्षाविभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। उस समय और दूसरे विभागों के समान शिक्षाविभाग में भी कुछ लोगों के मन में 'भाषापन' का डर बराबर समाया रहता था। वे इस बात

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

से डरा करते थे कि कहीं नौकरी के लिये 'भाखा' संस्कृत से लगाव रखनेवाली 'हिंदी' न सीखनी पड़े। अतः उन्होंने पहले तो उर्दू के अतिरिक्त हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था का घोर विरोध किया। उनका कहना था कि जब अदालती कामों में उर्दू ही काम में लाई जाती है तब एक और जबान का बोझ डालने से क्या लाभ ? 'भाखा' में हिंदुओं की कथावार्त्ता आदि कहते सुन वे हिंदी को 'गँवारी' बोली भी कहा करते थे। इस परिस्थिति में राजा शिवप्रसाद को हिंदी की रक्षा के लिये बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। हिंदी का सवाल जब आता तब कुछ लोग उसे 'मुश्किल जबान' कहकर विरोध करते। अतः राजा साहब के लिये उस समय यही संभव दिखाई पड़ा कि जहाँ तक हो सके ठेठ हिंदी का आश्रय लिया जाय जिसमें कुछ फारसी अरबी के चलते शब्द भी आएँ। उस समय साहित्य के कोर्स के लिए पुस्तकें नहीं थीं। राजा साहब स्वयं तो पुस्तकें तैयार करने में लग ही गए, पंडित श्रीलाल और पंडित वंशीधर आदि अपने कई मित्रों को भी उन्होंने पुस्तकें लिखने में लगाया। राजा साहब ने पाठ्यक्रम में उपयोगी कई कहानियाँ आदि लिखीं – जैसे राजा भोज का सपना, वीरसिंह का वृत्तांत, आलसियों का कीड़ा इत्यादि।

पं. बद्रीलाल ने डाक्टर बैलेटाइन के परामर्श के अनुसार सं. 1919 में 'हितोपदेश' का अनुवाद किया जिसमें बहुत सी कथाएँ छाँट दी गई थीं। उसी वर्ष सिद्धांतसंग्रह (न्यायशास्त्र और 'उपदेश पुष्पावती') नाम की दो पुस्तकें निकली थीं।

'मानवधर्मसार' की भाषा राजा शिवप्रसाद की स्वीकृत भाषा नहीं। प्रारंभ काल से ही वे ऐसी चलती ठेठ हिंदी के पक्षपाती थे जिसमें सर्वसाधारण के बीच प्रचलित अरबी फारसी शब्दों का भी स्वच्छंद प्रयोग हो। यद्यपि अपने 'गुटका' में जो साहित्य की पाठ्यपुस्तक थी उन्होंने थोड़ी संस्कृत मिली ठेठ और सरल भाषा का ही आदर्श बनाए रखा, पर संवत् 1917 के पीछे उनका झुकाव उर्दू की ओर होने लगा जो बराबर बना क्या रहा, कुछ न कुछ बढ़ता ही गया। इसका कारण चाहे जो समझिए। या तो यह कहिए कि अधिकांश शिक्षित लोगों की प्रवृत्ति देखकर उन्होंने ऐसा किया अथवा अंगरेज अधिकारियों का रुख देखकर। अधिकतर लोग शायद पिछले कारण को ही ठीक समझेंगे। जो हो, संवत् 1917 के उपरांत जो इतिहास, भूगोल आदि की पुस्तकें राजा साहब ने लिखीं उनकी भाषा बिलकुल उर्दूपन लिए हैं।

राजा साहब ने अपने इस उर्दू वाले पिछले सिद्धांत का 'भाषा का इतिहास' नामक जिस लेख में निरूपण किया है, वही उनकी उस समय की भाषा का एक खास उदाहरण है, अतः उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है –

''हम लोगों को जहाँ तक बन पड़े चुनने में उन शब्दों को लेना चाहिए कि जो आम फहम और खासपसंद हों अर्थात् जिनको जियादा आदमी समझ सकते हैं और जो यहाँ के पढ़े–लिखे, आलिमफाजिल, पंडित, विद्वान् की बोलचाल में छोड़े नहीं गए हैं और जहाँ तक बन पड़े हम लोगों को हर्गिज गैरमुल्क के शब्द काम में न लाने चाहिए और न संस्कृत की टकसाल कायम करके नए–नए ऊपरी शब्दों के सिक्के जारी करने चाहिए; जब तक कि हम लोगों को उसके जारी करने की जरूरत न साबित हो जाय अर्थात् यह कि उस अर्थ का कोई शब्द हमारी जबान में नहीं है, या जो है अच्छा नहीं है, या कविताई की जरूरत या इल्मी जरूरत या कोई और खास जरूरत साबित हो जाय।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भाषा संबंधी जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन राजा साहब ने किया है उसके अनुकूल उनकी यह भाषा कहाँ तक ठीक है, पाठक आप समझ सकते हैं। 'आमफहम', 'खासपसंद', 'इल्मी जरूरत' जनता के बीच प्रचलित शब्द कदापि नहीं है। फारसी के 'आलिमफाजिल' चाहे ऐसे शब्द बोलते हों पर संस्कृत हिंदी के पंडित विद्वान् तो ऐसे शब्दों से कोसों दूर हैं। किसी देश के साहित्य का संबंध उस देश की संस्कृति परंपरा से होता है। अतः साहित्य की भाषा उस संस्कृति का त्याग करके नहीं चल सकती। भाषा में जो रोचकता या शब्दों में जो सौंदर्य का भाव रहता है वह देश की प्रकृति के अनुसार होता है। इस प्रवृत्ति के निर्माण में जिस प्रकार देश के प्राकृतिक रूप रंग, आचार व्यवहार आदि का योग रहता है उसी प्रकार परंपरा से चले आते हुए साहित्य का भी। संस्कृत शब्दों में थोड़े बहुत मेल से भाषा का जो रुचिकर रूप हजारों वर्षों से चला आता था उसके स्थान पर एक विदेशी रूपरंग की भाषा गले में उतारना देश की प्रकृति के विरुद्ध था। यह प्रकृति विरुद्ध भाषा खटकी तो बहुत लोगों को होगी, पर असली हिंदी का नमूना लेकर उस समय राजा लक्ष्मणसिंह ही आगे बढ़े। उन्होंने संवत् 1918 में 'प्रजाहितैषी' नाम का एक पत्र आगरे से निकाला और 1919 में 'अभिज्ञानशाकुंतल' का अनुवाद बहुत ही सरल और विशुद्ध हिंदी में प्रकाशित किया। इस पुस्तक की बड़ी प्रशंसा हुई और भाषा के संबंध में मानो फिर से लोगों की आँखें खुलीं। राजा साहब ने उस समय इस प्रकार की भाषा जनता के सामने रखी –

"अनसूया – (हौले प्रियंवदा से) सखी! मैं भी इसी सोच विचार में हूँ। अब इससे कुछ पूछूँगी। (प्रगट) महात्मा! तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है कि तुम किस राजवंश के भूषण हो और किस देश की प्रजा को विरह में व्याकुल छोड़ यहाँ पधारे हो ? क्या कारन है ? जिससे तुमने अपने कोमल गात को कठिन तपोवन में आकर पीड़ित किया है ?"

यह भाषा ठेठ और सरल होते हुए भी साहित्य में चिरकाल से व्यवहृत संस्कृत के कुछ रसिक शब्द लिए हुए है। 'रघुवंश' के गद्यानुवाद के प्राक्कथन में राजा लक्ष्मणसिंह जी ने भाषा के संबंध में अपना मत स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया है।

हिंदी में संस्कृत के पद बहुत आते हैं उर्दू में अरबी पारसी के। परंतु कुछ अवश्य नहीं है कि अरबी पारसी के शब्दों के बिना हिंदी न बोली जाय और न हम उस भाषा को हिंदी कहते हैं जिसमें अरबी, पारसी के शब्द भरे हों।

अब भारत की देशभाषाओं के अध्ययन की ओर इंग्लैंड के लोगों का भी ध्यान अच्छी तरह जा चुका है। उनमें जो अध्ययनशील और विवेकी थे, जो अखंड भारतीय साहित्य परंपरा और भाषा परंपरा से अभिज्ञ हो गए थे, उन पर अच्छी तरह प्रकट हो गया था कि उत्तरीय भारत की असली स्वाभाविक भाषा का स्वरूप क्या है। इन अँगरेज विद्वानों में फ्रेडरिक पिंकाट का स्मरण हिंदी प्रेमियों को सदा बनाए रखना चाहिए। इनका जन्म संवत् 1893 में इंग्लैंड में हुआ। उन्होंने प्रेस के कामों का बहुत अच्छा अनुभव प्राप्त किया और अंत में लंदन की प्रसिद्ध एलन ऐंड कंपनी (W.H. Allen and Co. 13 Waterloo place, pall Mall, S.W.) के विशाल छापेखाने के मैनेजर हुए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वहीं वे अपने जीवन के अंतिम दिनों के कुछ पहले तक शांतिपूर्वक रहकर भारतीय साहित्य और भारतीय जनहित के लिए बराबर उद्योग करते रहे।

संस्कृत की चर्चा पिंकाट साहब लड़कपन से ही सुनते आते थे, इससे उन्होंने बहुत परिश्रम के साथ उसका अध्ययन किया। इसके उपरांत उन्होंने हिंदी और उर्दू का अभ्यास किया। इंगलैंड में बैठे ही बैठे उन्होंने इन दोनों भाषाओं पर ऐसा अधिकार प्राप्त कर लिया कि इनमें लेख और पुस्तकें लिखने और अपने प्रेस में छापने लगे। यद्यपि उन्होंने उर्दू का भी अच्छा अभ्यास किया था, पर उन्हें इस बात का अच्छी तरह निश्चय हो गया था कि यहाँ की परंपरागत प्राकृत भाषा हिंदी है, अतः जीवन भर ये उसी की सेवा और हितसाधना में तत्पर रहे। उनके हिंदी लेखों, कविताओं और पुस्तकों की चर्चा आगे चलकर भारतेंदु काल के भीतर की जाएगी।

संवत् 1947 में उन्होंने उपर्युक्त ऐलन कंपनी से संबंध तोड़ा और गिलबर्ट ऐंड रिबिंगटन (Gillbert and Rivington Clerkenwell Londan) नामक विख्यात व्यवसाय कार्यालय में पूर्वीय मंत्री (Orient Adviser and Expert) नियुक्त हुए। उक्त कंपनी की ओर से एक व्यापारपत्र 'आईन सौदागरी' उर्दू में निकलता था जिसका संपादन पिंकाट साहब करते थे। उन्होंने उसमें कुछ पृष्ठ हिंदी के लिए भी रखे। कहने की आवश्यकता नहीं कि हिंदी के लेख वे ही लिखते थे। लेखों के अतिरिक्त हिंदुस्तान में प्रकाशित होने वाले हिंदी समाचार पत्रों (जैसे हिंदोस्तान, आर्यदर्पण, भारतमित्र) से उद्धरण भी उस पत्र के हिंदी विभाग में रहते थे।

भारत का हित वे सच्चे हृदय से चाहते थे। राजा लक्ष्मणसिंह, भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, कार्तिकप्रसाद खत्री इत्यादि हिंदी लेखकों से उनका बराबर हिंदी में पत्रव्यवहार रहता था। उस समय के प्रत्येक हिंदी लेखक के घर में पिंकाट साहब के दो चार पत्र मिलेंगे। हिंदी के लेखकों और ग्रंथकारों का परिचय इंगलैंडवालों को वहाँ के पत्रों में लेख लिखकर वे बराबर दिया करते थे। संवत् 1957 (नवंबर सन् 1895) में वे रीआ घास (जिसके रेशों से अच्छे कपड़े बनते थे) की खेती का प्रचार करने हिंदुस्तान में आए, पर साल भर से कुछ ऊपर ही यहाँ रह पाए थे कि लखनऊ में उनका देहांत (7 फरवरी, 1896) हो गया। उनका शरीर भारत की मिट्टी में ही मिला।

संवत् 1919 में जब राजा लक्ष्मण सिंह ने 'शकुंतला नाटक' लिखा तब उसकी भाषा देख वे बहुत ही प्रसन्न हुए और उनका एक बहुत सुंदर परिचय उन्होंने लिखा। बात यह थी कि यहाँ के निवासियों पर विदेशी प्रकृति और रूपरंग की भाषा का लादा जाना वे बहुत अनुचित समझते थे। अपना यह विचार उन्होंने अपने उस अँगरेजी लेख में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है जो उन्होंने बाबू अयोध्याप्रसाद खत्री के 'खड़ी बोली का पद्य' की भूमिका के रूप में लिखा था। देखिए, उसमें वे क्या कहते हैं –

फारसी मिश्रित हिंदी (अर्थात् उर्दू या हिंदुस्तानी) के अदालती भाषा बनाए जाने के कारण उनकी बड़ी उन्नति हुई। इससे साहित्य की एक नई भाषा ही खड़ी हो गई। पश्चिमोत्तर प्रदेश के निवासी, जिनकी यह भाषा कही जाती है, इसे एक विदेशी भाषा की तरह स्कूलों में सीखने के लिये विवश किये जाते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पहले कहा जा चुका है कि राजा शिवप्रसाद ने उर्दू की ओर झुकाव हो जाने पर भी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'गुटका' में भाषा का आदर्श हिंदी ही रखा। उक्त गुटका में उन्होंने 'राजा भोज का सपना', 'रानी केतकी की कहानी', के साथ ही राजा लक्ष्मणसिंह के 'शकुंतला नाटक' का भी बहुत सा अंश रखा। पहला गुटका शायद संवत् 1924 में प्रकाशित हुआ था।

संवत् 1919 और 1924 के बीच कई संवाद पत्र हिंदी में निकले 'प्रजाहितैषी' का उल्लेख हो चुका है। संवत् 1920 में 'लोकमित्र' नाम का एक पत्र ईसाईधर्म प्रचार के लिये आगरे (सिकंदरे) से निकला था जिसकी भाषा शुद्ध हिंदी होती थी। लखनऊ में जो 'अवध अखबार' (उर्दू) निकलने लगा था उसके कुछ भाग में हिंदी के लेख भी रहते थे।

जिस प्रकार इधर संयुक्त प्रांत में राजा शिवप्रसाद शिक्षाविभाग में रहकर हिंदी की किसी न किसी रूप में रक्षा कर रहे थे उसी प्रकार पंजाब में बाबू नवीनचंद्र राय महाशय कर रहे थे। संवत् 1920 और 1937 के बीच नवीन बाबू ने भिन्न–भिन्न विषयों की बहुत सी हिंदी पुस्तकें तैयार कीं और दूसरों से तैयार कराई। ये पुस्तकें बहुत दिनों तक वहाँ कोर्स में रहीं। पंजाब में स्त्री शिक्षा का प्रचार करने वालों में ये मुख्य थे। शिक्षा–प्रचार के साथ–साथ समाज सुधार आदि के उद्योग में भी बराबर रहा करते थे। अंग्रेजों के प्रभाव को रोकने के लिए किस प्रकार बंगाल में ब्रह्मसमाज की स्थापना हुई थी, उसका उल्लेख पहले हो चुका है। नवीनचंद्र ने ब्रह्मसमाज के सिद्धांतों के प्रचार के उद्देश्य से समय–समय पर कई पत्रिकाएँ भी निकालीं। संवत् 1924 (मार्च सन् 1837) में उनकी 'ज्ञानदायिनी पत्रिका' निकली जिसमें शिक्षासंबंधी तथा साधारण ज्ञान विज्ञानपूर्ण लेख भी रहा करते थे। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि शिक्षा विभाग द्वारा जिस हिंदी गद्य के प्रचार में ये सहायक हुए वह शुद्ध हिंदी गद्य था। हिंदी को उर्दू के झमेले में पड़ने से ये सदा बचाते रहे। इलाहाबाद इंस्टीट्यूट के एक अधिवेशन संवत् 1925 में जब यह विवाद हुआ था 'देशी जबान' हिंदी को माने या उर्दू को, तब हिंदी के पक्ष में कई वक्ता उठकर बोले थे। उन्होंने कहा था कि अदालतों में उर्दू जारी होने का यह फल हुआ है कि अधिकांश जनता विशेषतः गाँवों की जो उर्दू से सर्वथा अपरिचित, बहुत कष्ट उठाती है इससे हिंदी के जारी होना बहुत आवश्यक है। इस पर गार्सां द तासी ने हिंदी के पक्ष में बोलने वालों का उपहास किया था।

उसी काल में इंडियन डेली न्यूज के एक लेख में हिंदी प्रचलित किए जाने की आवश्यकता दिखाई गई थी। उसका भी जवाब देने तासी साहब खड़े हुए थे। 'अवध अखबार' में जब एक बार हिंदी के पक्ष में लेख छपा था तब भी उन्होंने संपादक की राय का जिक्र करते हुए हिंदी को एक 'भद्दी बोली' कहा था जिसके अक्षर भी देखने में सुडौल नहीं लगते।

शिक्षा के आंदोलन के साथ ही साथ मतमतांतर संबंधी आंदोलन देश के पश्चिमी भागों में भी चल पड़े। इसी के साथ दयानंद सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद लेकर खड़े हुए और संवत् 1920 से उन्होंने अनेक नगरों में घूम–घूम कर व्याख्यान देना आरंभ किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये व्याख्यान देश में बहुत दूर–दूर तक प्रचलित साधु हिंदी भाषा में ही होते थे। स्वामीजी ने अपना 'सत्यार्थप्रकाश' तो हिंदी या आर्यभाषा में प्रकाशित ही किया, वेदों के भाष्य भी संस्कृत और हिंदी दोनों में किए। स्वामी जी के अनुयायी हिंदी को 'आर्यभाषा' कहते थे। स्वामीजी ने संवत्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1922 में 'आर्यसमाज' की स्थापना की और सब आर्यसमाजियों के लिये हिंदी या आर्यभाषा को पढ़ना आवश्यक ठहराया। संयुक्त प्रांत के पश्चिमी जिलों और पंजाब में आर्यसमाज के प्रभाव से हिंदी गद्य का प्रचार बड़ी तेजी से हुआ। पंजाबी बोली में लिखित साहित्य न होने से और मुसलमानों के बहुत अधिक संपर्क से पंजाबवालों की लिखने–पढ़ने की भाषा उर्दू ही रही थी। आज जो पंजाब में हिंदी की पूरी चर्चा सुनाई देती है, इन्हीं की बदौलत है।

संवत् 1910 के लगभग ही विलक्षण प्रतिभाशाली विद्वान् पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी के व्याख्यानों और कथाओं की धूम पंजाब में आरंभ हुई। पंडित श्रद्धारामजी संवत् 1912 में कपूरथला पहुँचे और उन्होंने महाराज के सब संशयों का समाधान करके प्राचीन वर्णाश्रम धर्म का ऐसा सुंदर निरूपण किया कि सब लोग मुग्ध हो गए। पंजाब के सब छोटे–बड़े स्थानों में घूमकर पंडित श्रद्धारामजी उपदेश और वक्तृताएँ देते तथा रामायण, महाभारत आदि की कथाएँ सुनाते। उनकी कथाएँ सुनने के लिए दूर–दूर से लोग आते और सहस्रों आदमियों की भीड़ लगती थीं। उनकी वाणी में अद्भुत आकर्षण था और उनकी भाषा बहुत जोरदार होती थी। स्थान–स्थान पर उन्होंने धर्मसभाएँ स्थापित कीं और उपदेशक तैयार किए। उन्होंने पंजाबी और उर्दू में भी कुछ पुस्तकें लिखी हैं। पर अपनी मुख्य पुस्तकें हिंदी में ही लिखी हैं। अपना सिद्धांतग्रंथ 'सत्यामृतप्रवाह' उन्होंने बड़ी प्रौढ़ भाषा में लिखा है। वे बड़े ही स्वतंत्र विचार के मनुष्य थे और वेदशास्त्र के यथार्थ अभिप्राय को किसी उद्देश्य से छिपाना अनुचित समझते थे। इसी से स्वामी दयानंद की बहुत सी बातों का विरोध वे बराबर करते रहे। यद्यपि वे बहुत सी बातें कह और लिख जाते थे जो कट्टर अंधविश्वासियों को खटक जाती थीं और कुछ लोग इन्हें नास्तिक तक कह देते थे पर जब तक वे जीवित रहे सारे पंजाब के हिंदू उन्हें धर्म का स्तंभ समझते रहे।

पंडित श्रद्धारामजी कुछ पद्यरचना भी करते थे। हिंदी गद्य में तो उन्होंने बहुत कुछ लिखा और वे हिंदी भाषा के प्रचार में बराबर लगे रहे। संवत् 1924 में उन्होंने 'आत्मचिकित्सा' नाम की एक अध्यात्म संबंधी पुस्तक लिखी जिसे संवत् 1928 में हिंदी में अनुवाद करके छपाया। इसके पीछे तत्त्वदीपक, धर्मरक्षा, 'उपदेशसंग्रह' (व्याख्यानों का संग्रह), 'शतोपदेश' (दोहे) इत्यादि संबंधी पुस्तकों के अतिरिक्त उन्होंने अपना एक बड़ा जीवनचरित्र (1400 पृष्ठ के लगभग) लिखा था जो कहीं खो गया। 'भाग्यवती' नाम का एक सामाजिक उपन्यास भी संवत् 1934 में उन्होंने लिखा, जिसकी बड़ी प्रशंसा हुई।

अपने समय के वे एक सच्चे हिंदी हितैषी और सिद्धहस्त लेखक थे। संवत् 1938 में उनकी मृत्यु हुई। जिस दिन उनका देहांत हुआ उस दिन उसके मुंह से सहसा निकला कि 'भारत में भाषा के लेखक दो हैं – एक काशी में, दूसरा पंजाब में। परंतु आज एक ही रह जायगा।' कहने की आवश्यकता नहीं कि काशी के लेखक से अभिप्राय हरिश्चंद्र से था।

राजा शिवप्रसाद 'आमफहम' और 'खासपसंद' भाषा का उपदेश ही देते रहे, उधर हिंदी अपना रूप आप स्थिर कर चली। इस बात में धार्मिक और सामाजिक आंदोलनों ने भी बहुत कुछ सहायता पहुँचाई। हिंदी गद्य की भाषा किस दिशा की ओर स्वभावतः जाना चाहती है, इसकी सूचना तो काल अच्छी तरह दे रहा था। सारी भारतीय भाषाओं का साहित्य चिरकाल से संस्कृत की परिचित और भावपूर्ण पदावली का आश्रय लेता चला आ रहा था। अतः गद्य के नीवन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विकास में उस पदावली का त्याग और किसी विदेशी पदावली का सहसा ग्रहण कैसे हो सकता था ? जब कि बँगला, मराठी आदि अन्य देशी भाषाओं का गद्य परंपरागत संस्कृत पदावली का आश्रय लेता हुआ चल पड़ा था तब हिंदी गद्य उर्दू के झमेले में पड़कर कब तक रुका रहता ? सामान्य संबंधसूत्र को त्यागकर दूसरी देशी भाषाओं से अपना नाता हिंदी कैसे तोड़ सकती थी ? उनकी सगी बहन होकर एक अजनबी के रूप में उनके साथ वह कैसे चल सकती थी। जबकि यूनानी और लैटिन के शब्द योरप के भिन्न–भिन्न मूलों से निकली हुई देशी भाषाओं के बीच एक प्रकार का साहित्यिक संबंध बनाए हुए हैं तब तक ही मूल से निकली हुई आर्य भाषाओं के बीच उस मूल भाषा के साहित्यिक शब्दों की परंपरा यदि संबंधसूत्र के रूप में चली आ रही है तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

कुछ अंगरेज विद्वान् संस्कृतगर्भित हिंदी की हँसी उड़ाने के लिए किसी अँगरेजी वाक्य में उसी भाषा में लैटिन के शब्द भरकर पेश करते हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि अँगरेजी का लैटिन के साथ मूल संबंध नहीं है, पर हिंदी, बँगला, गुजराती आदि भाषाएँ संस्कृत के ही कुटुंब की हैं – उसी के प्राकृत रूपों से निकली हैं। इन आर्य भाषाओं का संस्कृत के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध है। इन भाषाओं के साहित्य की परंपरा को भी संस्कृत की परंपरा का विस्तार कह सकते हैं। देशभाषा के साहित्य को उत्तराधिकार में जिस प्रकार संस्कृत साहित्य के कुछ संचित शब्द मिले हैं उसी प्रकार विचार और भावनाएँ भी मिली हैं। विचार और वाणी की इस धारा से हिंदी अपने को विच्छिन्न कैसे कर सकती थी ?

राजा लक्ष्मण सिंह के समय से ही हिंदी गद्य की भाषा अपने भावी रूप का आभास दे चुकी थी। अब आवश्यकता ऐसे शक्तिसंपन्न लेखकों की थी जो अपने प्रतिभा और सद्भावना के बल से उसे सुव्यवस्थित और परिमार्जित करते और उसमें ऐसे साहित्य का विधान करते जो शिक्षित जनता की रुचि के अनुकूल होता। ठीक इसी परिस्थिति में भारतेंदु का उदय हुआ।

•••

शब्दार्थ

जबान–वाणी, भाषा/ गुटका–छोटे आकार की पुस्तक/ सरस–रस सहित, रस युक्त/ प्राक्कथन–पूर्व कथन, भूमिका/ कुठार–कल्हाड़ी, फरसा/ नागरी–देवनागरी लिपि/ आर्यभाषा–संस्कृत से उत्पन्न आधुनिक भारतीय भाषाएँ/ वक्तृता–बोलने की शैली/ नास्तिक–ईश्वर में विश्वास न रखने वाला/ कुटुंब–परिवार/ उद्भावना–कल्पना, उत्पत्ति/ परिमार्जित–साफ, परिष्कृत/ अभिज्ञ–जानकार।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'राजा भोज का सपना' कहानी के कहानीकार कौन थे ?

   (क) राजा शिवप्रसाद (ख) राजा लक्ष्मणसिंह ( )

   (ग) भारतेन्दु (घ) श्रद्धाराम फुल्लौरी

2. राजा लक्ष्मणसिंह ने कौन सी पत्रिका निकाली ?

   (क) कविवचन सुधा (ख) प्रजाहितैषी

   (ग) बाला बोधिनी (घ) हिंदी प्रदीप ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उत्तरमाला– (1) क (2) ख

अतिलघूत्तरात्मक

1. कौन से विदेशी विद्वान हिंदी की हितसाधना में तत्पर रहे ?
2. पिंकाट साहब का देहांत कहाँ हुआ ?
3. राजा लक्ष्मणसिंह ने कौन सा नाटक लिखा ?
4. 'सत्यार्थप्रकाश' के रचयिता कौन थे ?
5. श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा रचित उपन्यास कौन सा है ?

लघूत्तरात्मक

1. 'शकुंतला नाटक' की भाषा देखकर पिंकाट साहब प्रसन्न क्यों हुए ?
2. अपनी मृत्यु के अंतिम दिन श्रद्धाराम फुल्लौरी ने क्या कहा ?
3. 'हितोपदेश' का अनुवाद किसने किया ?
4. 'सत्यामृतप्रवाह' किसने लिखा ?

निबंधात्मक

1. स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा हिंदी भाषा के विकास में दिए गए योगदान पर एक टिप्पणी लिखिए।
2. हिंदी भाषा के विकास में श्रद्धाराम फुल्लौरी के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
3. पिंकाट साहब कौन थे ? उन्होंने हिंदी भाषा को क्या योगदान दिया ?

•••

यह भी जानें

स्वन परिर्वतन

1. संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों–का–त्यों ग्रहण किया जाए। अतः 'ब्रह्मा' को 'ब्रह्मा', 'चिह्न' को 'चिह्न', 'उऋण' को 'उरिण' में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक अनाधिकार आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इनके स्थान पर क्रमशः गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार ही लिखना चाहिए।
2. जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है। जैसे – अर्द्ध > अर्ध, तत्व > तत्त्व आदि।

•••

Downloaded from https:// www.studiestoday.com